॥ श्रीः ॥

महेश्वरसुधाकर ।

श्रीस्यामास्यामसुन्दर प्रेमियों के प्रसन्नार्थ
रामपुरेन्द्रैकवारवंशावतंश श्री गुमान
सिंहात्मज श्री महाराजा महेश्वर-
बक्ससिंह जू देव की आज्ञानुसार
(जिला) फतेपुर असनीनगर
निवासी कबीन्द्र पण्डित मिश्र
मन्नालालात्मज श्री श्यामसु-
न्दर (श्याम) कबि ने नव
रससंयुक्त निर्मित
किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९८ ई० ।

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
२	१	चै	चय
४	१५	स्र.न	सज्जन
६	१८	सजन	सज्जन
८	७	अनुमानि	अनुमान
११	१८	यमराव	गुमराव
१३	१२	गुनि	गुन
१५	१	गुन	गन
१६	१	पहाड़	पहार
१८	११	मुदित	उदित
२३	६	सों	सो
२३	११	कर	करि
२६	१०	भोखो	भोखौ
२६	११	चेखो	चोखौ
२७	४	घूघुट	घूंघुट
३१	१२	जो	ज्यौं
३४	७	तिया	तीय
३७	६	प्रौढ़ा	नमोढ़ा
३७	८	कहत	करत
३८	४	छविनोति	छनजोति
३८	८	नावत	नवत
३८	८	बिचित्र	पवित्र
३८	१७	कै	कै
४०	१	बलास	बिलास
४०	३	इक	एक
४०	४	सो	सों
४४	८	हेत	हेतु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
४५	२०	मौ	मे
४५	२१	चुनरी	चूनरो
४७	१	कहीं	कहौ
४७	१२	मुकुत	मुकुट
५०	५	हँसित	हँसत
५१	१५	छतियां कहुं आन तिया के लगी।	आन तिया के लगी छतियाँ हरि
५२	१३	उतत	उतरत
५३	१७	चातक	चात्रिक
५४	१०	इतआई	इतमाई
५५	२०	तुम माहि	तनमाहि
५६	१५	सेद	सहे
५७	१७	खडित	खंडिता
६०	१६	मग	मृग
६१	७	युक्ति	उक्ति
६१	११	केर	करि
६२	१८	बैठी	बैठि
६५	३	रनै	रैन
६५	७	फुर	फुरै
६५	८	धीप	धिप
६७	२	छाये	छवि
६८	१०	तस्या	तस्य
६८	१८	उत्प्रीचा	उत्प्रेचा
७१	१५	है पर्य्या	पर्य्या
७४	११	कहत	कहंत
७४	१२	तत	तंत
७७	२२	प्रास्तुत	जहँ प्रस्तुत
७७	२४	घोर	घेरि
८१	१८	नैन	तैन
८३	१४	मै	भै
८४	८	कारन	कारज

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
८४	६	खानि	हानि
८५	४	फैलि है	फैलो है
८५	१९	तिनायो	तनायो
८६	२	विगैर	बगैर
८६	३	बाल	बाला
८७	१३	चौंट	चौंटे
८८	२१	मिहे	मिले
८९	१६	पिया	प्रिया
९१	२१	भाव	भाय
९२	१	प्रवीन	प्राचीन
९२	१७	गई	भई
९३	१०	ताको	तीको
९५	४	कुशुम	कुश्म
९५	८	बिरोधा	बिरोधी
९७	४	पर	पैर
९७	१२	भाइ	भाय
९७	१२	पाइ	पाय
९८	५	सुतंत्र	स्वतंत्र
१०३	११	नैत्र को बरनन	नेत्र बरनन
१०४	५	सदृस	सादृश
१०४	२०	अनियारी	अनियारी
१०४	२०	प्यारी	प्यारी
१०४	२०	कमल को	कमलकी
१०४	२१	नायक रुचि	नायक को रुचि
१०५	३	हरसन	दरसन
१०७	१	सरक्षोर की	सरक्षोरकी
११०	२०	नायक का	नायके का
११२	५	मेमुद्रिका	मै मुद्रिका
११७	१६	सामान्या है	सामान्य निवंधनाहै
११७	१२	कैकई न	के कई ने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
११९	३	शत्रुन को	शत्रुन के
१२०	३	उमग	उमंग
१२०	१३	रहै	रैहै
१२०	१३	रहै	रैहै
१२०	१४	रहै	रैहै
१२०	१६	आर	और
१२१	१७	परमत	परगत
१२१	३	सिरताई	सोरताई
१२२	८	धरि	धारि
१२३	१२	वोसव दास	केशवदा
१२४	१८	दूनो	दुनो
१२५	३	युक्ति से	युक्ति सो
१२५	३	मेरे	तेरे
१२६	५	राजाहारचंद	राजामहेश्वर
१२८	१४	शोणित सो	शोणित को
११९	१२	तो कहत	तोयोंकहत
१३०	५	विकन	विकट
१३१	१०	मंडन	मुंडन
१३१	११	कोगन	केगन
१३१	१२	भँग	भांग
१३२	१०	निहारि	निहोरि
१३२	२०	भूप	रुप
१३३	६	सोकत	सोकित
१३४	८	सोनहि	तोहिन
१३६	९	बन	तन
१३७	१६	पावत	पागत
१३९	२	जिते	जिते
१४४	४	ही	हो
१४५	१९	प्रिय	पिय

इति ।

श्रीगणेशाय नमः ।

महेश्वरसुधाकर ।

अथ बन्दना गणेशजी की, हरिगीतिका छन्द ।

सिन्दूर सोभित सीस पै गिरिशृङ्ग पै रवि राजहीं । कलिकाल काल कराल तम सम पाप-पुञ्ज पराजहीं ॥ १ ॥ शुभदण्ड दन्त अनन्त छबि कबि कौन कहि उपमा लहै । करुनानिधान सुजान श्री गनपाल सों गनपाल है ॥ २ ॥ उपमा जो आन न है सो आनन श्रीगजाननराज की । जेहि देववृन्द अनन्त ध्यावत होत सिद्धि सुकाज की ॥ ३ ॥ सुत गौरि के उर गौर करि बर देव जो जन जाँचहीं । निरबिघ्न काज समाज संयुत सुजन आँनद राचहीं ॥ ४ ॥ द्विज श्याम कहि बसु याम में छन नाम नेक पुकारि है । भवसिन्धु-गोपद सरिस ते तरि तुरत जन्म सुधारिहै ॥ ५ ॥ शुभ दृष्टि सों अवलोकि कै पद पद्म जे उर धारहीं । श्रीकृष्णचरित पवित्र पावन प्रेमजुत अनुसारहीं ॥ ६ ॥ छल छन्द

तजि छहछन्द जे छन येक जे नर गाइहैं । त्रै-
ताप ताप नसाय ते शुभ परम मंगल पाइहैं ॥

दोहा ।

श्रीगणपति गिरिजासुवन एकरदन सुखदाय ।
प्रणत स्याम सिधि काम हित चरणकमल मनलाय॥
अष्टक श्रीगणराज को कहत सुनत जन जोय।
जस प्रताप ताको बिमल महिमण्डल में होय॥९॥

अपरंच कबित्त सवैया ।

सिद्धि औ रिद्धि अहैं नवनिद्धि रहैं जिनके दृग-कोर निहारे । ज्ञाननिधान सरूप अनूप बखानत सेस महेस पियारे ॥ सुण्ड उदण्ड सुदन्त लसै सुखदायक स्याम सुवेद बिचारे । राखत हैं न कलेस को लेस बसैं मन माहिँ गणेस हमारे ॥ १० ॥

पुनः कबित्त घनाक्षरी ।

सोभित सिन्दूर लाल भाल में बिसाल मंजु बाल अंसुमान कलिकाल तम-खण्डी के । बास कयलास पै सुआस पास सिद्धि रिद्धि दास-आसपोषक सुखम्भ धर्ममण्डी के ॥ सेवैं जासु देव बासुदेव स्याम धेवैं सदाँ शङ्कर शिवा के

राजैं अङ्क बरवण्डी के । भुण्ड भुण्ड दम्भ दोष दन्त सों दबाय धरें शुण्डादण्डमण्डल उदग्र अग्र चण्डी के ॥ ११ ॥

अथ सरस्वती जी की बन्दना सवैया ।

जानत वेद पुरान न नेक नहीं गुन गौरव ज्ञान निहारो । प्रेम नहीं पदपङ्कज में मन को तन को तनको न सिहारो ॥ औगुन औ अघ-खानि महा अवलम्ब चहै द्विज स्याम बिचारो । भीर में पीर हरौ हिय की हमै भारती भूरि भ-रोस तिहारो ॥ १२ ॥

कासों कहौं यह कौन सुनै नहिं है मन की कोउ जाननहारो । हारि रह्यौ हिय में द्विज स्याम न पेखि परयौ दुखदारनवारो ॥ और कहूँ अवलम्ब न है जिय जानि चह्यौ शरनै शिर धारो । भीर में पीर हरौ हिय की हमै भारती भूरि भरोस तिहारो ॥ १३ ॥

दोहा ।

बानी महरानी महा सुखदानी गुनखानि ।
बरदानी बानी बिमल करहु सदाँ जन जानि॥ १४॥

श्रीगुरुबन्दना कवित्त घनाक्षरी ।

जाहिर जहान मध्य तपोबल प्रेम नेम ऋद्धि

सिद्धि जाके पास करत गुलामी हैं । ज्ञानमान गुनमान सोहमिति ध्यानमान आँनद के कानन में रमत अकामी हैं ॥ परम पवित्र चारु चरित बिचित्र सब कहत सदाही श्रुति पथ अनुगामी हैं । अङ्ग मैं बिराजै भासकरा के समान भास आसकरा स्याम भासकरानन्द स्वामी हैं ॥ १५ ॥

श्री मन्त्रगुरु की बन्दना दोहा ।

सुथल बिन्ध्य गिरि में बसत सकल शास्त्र को ज्ञान।
बदत सदाँ येहि भाँति सों जनु बिरच्यौ नहिं आन॥
भास्यांत वैयाकरन मन्त्रशास्त्र परिपूर ।
सिद्धि प्रयोगहि को करत बिद्वज्जन मन सूर॥१७॥
देत सुबिद्या दान को निसिबासर हित मानि ।
श्री ओझा महराज हैं नाम वओर न जानि ॥१८॥
पण्डित सज्जन शीलनिधि ऋजु तपसी सरबज्ञ ।
छमा दया दाता बिमल भाषत सज्जन सुज्ञ ॥१९॥
सो कृपाल अति सरल चित मन्त्र गुरू हैं मोरि ।
तिनके चरन सरोज युग बन्दत हौं कर जोरि॥२०॥
श्री गुरुसेवक राम को धन्य बदत द्विज श्याम ।
जिन की कृपा कटाक्ष सों लह्यौ काव्य अभिराम ॥

अथ खलबन्दना चौपाई।

अब बन्दत मैं खल जन नामी।
जे परदूषन भूषन कामी ॥
परतिय परधन पर प्रपंच रत।
परनिन्दा अघ पर प्रसन्न मत ॥२२॥
तिन सों विनै करौं कर जोरी।
करिहिं अनुग्रह मो पर थोरी ॥१३॥

दोहा।

मैं उन को अनुचर अहौं अघ औगुन की खानि।
सो मो पर करि हैं कृपा प्रीत पुरातन मानि ॥२४॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधिप रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्री महेश्वरवक्सिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार श्री पण्डित मिश्र मन्नालाल तस्यात्मज मिश्र स्यामसुन्दर असनोनगरनिवासी महेश्वरसुधाकरग्रन्थविरचिते प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

अथ कविबंस बर्नन दोहा।

मैं बर्नन नहिं बहु कियो ग्रन्थ बढ़न भय मानि।
स्वल्पहि में सब जानि हैं कबि कोबिद गुनखानि ॥
कानकुब्ज द्विजबरन में मिसिर बदरका केर।
बसत अश्वनीनगर में गुजरीं पुस्ति घनेर ॥ २ ॥
येहि कुल में उपजे सुमति सुजसी शीलनिधान।
तेजवान तपसी बली बिद्या गुन धनवान ॥ ३ ॥

श्री रामेश्वरमिश्र भे तिन के चारि कुमार ।
मिश्र मदारीलाल यक बिय शिगुलाम उदार ॥४॥
श्रीकाशीपरसाद अरु मिश्र सु मैकूलाल ।
मिश्र मदारीलाल के लाला रामबिशाल ॥ ५ ॥
श्री काशीपरसाद के भये निहाल पवित्र ।
गुन गौरव सुचि सील निधि जिनके चरित बिचित्र ॥
शिउगुलाम के तनै श्री रामनरायन नाम ।
सुजस पताको अजहुँ लौं जिनको फहरत आम।७।
लाला रामसुमिश्र के जग जाहिर प्रनपाल ।
तनय भये तिनके सुखद नाम शिवचरनलाल ।८।
शिवचरनन मैं मगन मन पूजन करत त्रिकाल ।
तिनके सुत भे बिमलमति मिश्र सुमन्नालाल ॥९॥
द्वै सुत मन्नालाल के जेठौ मैं मतिमन्द ।
नाम स्यामसुन्दर अहै लघु बिश्वेश्वर चन्द ॥१०॥
बैदराज मम पितु अजहुँ रहत राज दरबार ।
नृपति महेश्वरबक्स के निकट सहित सतकार।११।
सहर फतेपुर मैं मोहूँ करत सुबैद्यक आम ।
बसत बहुत गत अब्द भे होत सिद्धि शुभ काम ॥
हितू मित्र हैं बरन जुग सज्जन सील उदार ।
परम कृपा सब की अहै मो पर प्रेम अपार ॥१३॥

नाम लिखत सब सुजन को होत महा बिस्तार।
ताते लिख्यौ न मैं इतै सम सबही को प्यार॥१४॥
मम कबिता पर प्रेम अति सुनत कहत मन लाय।
तिनके चित्त प्रसन्न हित दीन्ह्यो कबित बनाय।१५।
काव्य भेद जानौं नहीं नहिं बिद्या गुन मोर।
सन्त सुजन सुर गुर कृपा समुझत हौं निज ओर॥
सज्जन कबि कोबिदन को बिनवत हौं कर जोरि।
बिगरो कहत सुधारिये जानि मोरि मति थोरि।१७।

कबित्त घनाक्षरी।

जाहिर जिला है फतेपुर हँसवा को जौन वाके दिशि उत्तर सुपाँच कोस न्यारे हैं। ग्राम असनी है धाम गङ्गा जी समीप जहाँ कानकुब्ज बिप्र वृन्द बसत अपारे हैं॥ मिश्र मन्नालाल को तनै हौं श्यामसुन्दर मैं सेवक गुरू ते काव्य कछुक बिचारे हैं। तालुके अवध रामपुर के महीप श्रीमहेश्वरबकससिंह रक्षक हमारे हैं॥१८॥

दोहा।

नृपति महेश्वरबकस सो श्रीयुत सुख आसीन।
ह्वै प्रसन्न मो पै कह्यौ सुनिए स्याम प्रबीन॥ १९॥
सरस सुखद नवरस सहित बिरचहुँ ग्रन्थ नबीन।
बैन सुनत उर चैन लहि सुघर सुधाकर कीन।२०।

मिश्र स्यामसुन्दर सुखद सुनत हुकुम मुद छाय ।
नृपति महेश्वरबकस को आसिषि देत बनाय ।२१।
बाजपेय कुल बिमलमति श्रीसिवनन्दनलाल ।
करत कृपा मो पर अमित सोध्यौ ग्रन्थ रसाल ।२२।
असनी बासी सुकबि श्रीकृष्ण महा मतिखानि ।
सज्जन श्रीकबि लाल जी कियो तिलक मुदमानि ॥
अलङ्कार अरु नायिका कह्यौ सुमति अनुमानि ।
सुहित सहित इक ढिग बसत रहत प्रसन्न महान ॥
सम्बत युग्मरु बाण निधि ससि सुपक्ष ससि बार ।
माघ मास तिथि पञ्चमी भयो ग्रन्थ तइयार ॥२५॥

सोरठा ।

सहित सुधाकर नाम धरयौ महेश्वरग्रन्थ कर ।
रुचिर कथा अभिराम रसिकचित्त-आनन्दकर ॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधिप रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्री महेश्वरबकससिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार श्री पण्डित मिश्र मन्नालाल तस्यात्मज मिश्र स्यामसुन्दर असनीनगरनिवासी महेश्वसुधाकरग्रन्थविरचिते द्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥

अथ राजबंस बर्नन दोहा ।

परब्रह्म परमात्मा सतचित आनदकन्द ।
सृष्टि हेतु सो प्रगट भो नारायण स्वच्छन्द ॥ १ ॥
तासु नाभि तें कमल भो कमलासन तेहि माहिँ ।
उपजे जग करतार इमि बद्यौ वेद जिन काँहि ॥२॥

तिनके तनै मरीच भे मुददायक गुनखानि ।
सुत कस्यप जिनके बिमल सुजस जासु सुखदानि॥

चौपाई ।

कस्यप बिवस्वान उपजाये । श्राद्धदेव तेहि सुवन कहाये ॥ सो इक्ष्वाकु नाम श्रुति गाये । परम धरम महि माहिं चलाये ॥ भयो पुरंजय तासु कुमारा। अनन्याश्व तेहि तनय निहारा ॥ तिनके पृथु नृप परम सुजाना। नीतिनिपुन जग बिदित महाना ॥ बिश्वरंध्रि तिनते सुखकारी । नृपति चन्द भे अति हितधारी ॥ तनय तासु युबनास्व सुहायौ। साम्ववस्तु तिनके सुत गायौ॥ ब्रहद्स्व तेहि सुवन उदारा । सुत जेहि कुबलयाश्व सुचि प्यारा॥ भये दृढ़ास्व तासु गुनआगर । तेहि के भे हरयस्व उजागर ॥ तासु तनय भे भूप निकुम्भा। जासु सुवन बरणास्व अदम्भा॥

दोहा ।

ताके भये कृसास्व नृप तनयसेन जित जासु ।
जिनके सुत युवनाश्व पुनि मान्धाता भे तासु ॥

चौपाई ।

जिनके सुत कुरु कुत्स कहाये। तनय त्रदस्यु तिनहुँ उपजाये ॥ तेहिके भे अनरण्य भुवाला ।

जासु सुवन हर्यश्व बिसाला ॥ अरुन तनय तिनके सुखधामा। भो निबन्ध सुत तासु ललामा॥ सुवन सत्यव्रत नृप नय-नागर। हरिश्चन्द तेहि पुत्र उजागर ॥

दोहा।

रोहितास्व तिनके तनय ताके हरित भुवाल।
चम्प भए सुत जासु के तासु सुदेव कृपाल ॥
बिजय भूप पुनि प्रगट भे ताके भरुक सुजान।
ताके वृक वृक के भये बाहुक नाम महान ॥
ता सुत सगर नृपाल भो असमंजस पुनि तासु।
अंसुमान तेहि के भये तिमि दिलीप सुत जासु॥
नृपति भगीरथ तनय तेहि प्रगटे परम प्रबीन।
सुरसरि आन्यौ अवनि तल सुजस तिहूँ पुर कीन॥

छन्द पद्धटिका।

अब बरनत मैं तिनको सुबंस। श्रुति संग्रम जेहि सुत देव अंस॥ तेहि तनय नाभवर भूप जानु। जेहि सिन्धु द्वीप सुत हैं महान॥ तिन प्रगट कियो ऋतुपर्ण भूप। सुत सर्बकाम जिनके अनूप॥ पुनि सुवन भये जिनके सुदास। तेहि तनय नाम अस्मक प्रकास॥ नारिकवच्च जेहि नाम जान। तेहि सूनु भयो जसरत महान॥

अत्र नाम ऐंड़ बिड़बल निधान । खट्वाङ्ग तनय तेहि को सुजान ॥ सुत दीर्घबाहु जग सुजस चंद । तिनके प्रगटे रघु भूप संद ॥ रघुबंश बदत तब ते सुजान । कल कीरति है जग जेहि प्रमान ॥ ८ ॥

दोहा ।

श्रीरघु के सुत पृथुश्रवा तिनके अज सिरताज ।
अज के तनै सु बिमलमति श्रीदशरथ महराज ॥
श्रीदशरथ महराज हैं रघुकुल कमलदिनेस ।
बसत अवध सरजू निकट दिवि में यथा सुरेस ॥
चारु चारि तिनके तनै प्रगटे परम सुजान ।
रामचंद लछिमन भरत रिपुहन शीलनिधान ॥
सुजस सुखद त्रयताप-हर बदत वेद बसु याम ।
निरगुन निरुपम नयनि पुन धरा धर्मधुर राम ॥
चारिहु भ्रातन के तनै द्वै द्वै बली महान ।
नाम सुनत जिनको समर तजि अरि करत पयान ॥
भरतपुत्र पुष्कल प्रगट प्रबल प्रताप प्रचण्ड ।
असुर दर्प दाहत सदा सन्तन सुखद अखण्ड ॥
तौन बंश में भे बिमल दौलत राय प्रधान ।
तिनके सुत गिरवर भये सुवन दलेल सु कीन ॥

नाम जुरावर तासु के बखतावर महिपाल ।
भुजगराज ताके तनय दलथंभन छबि माल ॥
दलथंभन सुत सुभग सुचि मतवारो जिहि नाम ।
मंगल भूभरतार भो तनय तासु मतिधाम ॥
ता सुत भयो पहार नृप मोती जासु सुजान ।
मोती के अरजुन सुवन दानराय परधान ॥
राजराव जिनके प्रगट पुत्र पुरंजय जासु ।
तिनके सुत भे केशरी बुधिबर बिद्या तासु ॥

छन्द पझ्झटिका ।

तेहि तनय भयो भोरी भुवाल । दलजीत तासु शिवशामलाल ॥ पुनि शामल के सुत मानदत्त । जिनके अनूप तेहि राजमत्त ॥ तिमि केहरि के सुत नवल भूप । इमि बुद्धिराय प्रगटे अनूप ॥ सुत छत्रसेन के सुख-प्रसून । पुनि आलिम भो जस को प्रसून ॥ प्रगटे तेहि भैरव भूमिपाल । अरु ऊगा के सुत चैनलाल ॥ उपजे जेहि अच्छे राउ राज । तेहि फतेसिंह भो फतेकाज ॥ अब सुन्दर सुन्दर रूपवान । सुत जदन तासु अमराव जान ॥ अमराव सुवन भूपति महान । है शंकर तासु मुसाहिबान ॥

दोहा।

तिनके हिम्मति भूप भो तेहि गुरबकस नरेस।
ताके भे गजराज सुत रामदीन गुनबेस॥
सुर्य्यन ताके तनय भे डम्बर धरम महान।
सुवन तासु दिगपाल तेहि काली परम सुजान॥
सत्यराव ताके प्रगट दलगंजन जेहि नाम।
भए भवानी तासु के रुस्तम त्यौं गुनधाम॥
जब्बर नृप तिनके सुवन तासु ज़ोरावर जान।
ताके राव-जहाँन भे गङ्गराव सुखदान॥

छन्द पद्धटिका।

तब प्रगट कालिका जेहि कुमार। तेहि तनय लालता परम प्यार॥ तिमि अचलमल्ल अतिसै अनूप। सुत मचल नाम ताके सुभूप॥ भो मेहरबान गुनिगननिधान। गजराउ सुवन ताको प्रमान॥ सनमान तनुज ताको बिसाल। सुत तासु भयो खुसहाल हाल॥ उपजे महौल प्रहलाद जासु। बलगरहु महा वसुभीष्म तासु॥ अब अजा भूप भगवन्त पुत्र। किय बास सुरैका नगर उत्र॥ भो रैकवार तिनको सुनाम। तेहि बंस प्रगट घनस्याम स्याम॥ जेहि भये सुवन बलवन्त बीर। उपजे उदोत तेहि गुन गँभीर॥

दोहा ।

ता सुत बाजीराव भो जासु दिलीप कुमार ।
पुनि ताके रैपाल नृप तेहि रघुनाथ उदार ॥
तीन बंस में भे बिमल नागर नवल सुभूप ।
रैकदेव सुचि सीलनिधि सुन्दर सुजस अनूप ॥
रैका नगर बसाय तिन कियो सुरुचि सतकार ।
रैकवार तबते भयो बंस बिदित संसार ॥
बिक्रम नृप तिनके तनय प्रगट भभूती तासु ।
गजरथ ताके सुवन भे धर्मराव नृप जासु ॥

चौपाई ।

करनभूप तेहि परम सुजाना । ता सुत ईसे बीर बखाना ॥ गङ्गा नृपति नाम तिन जायो । दरसन सुवन तासु जग गायो ॥ त्यों गजराज सिंह रनधीरा । ताके कमल तनय बर बीरा ॥ तासु सुवन सिरमान कहाये । तेहि उमराव सुजस महि छाये ॥ तिमि प्रगटे परसाद भुवाला । नन्दन नन्दन तासु कृपाला ॥ ताके सुवन मुलायम नामा । गयादीन सुत तासु ललामा ॥ तिनके ढालराय नय-नागर । तासु खुमान बीर बर आगर ॥ भयो नरायन तेहि सुत राजा । केसव भूप सुवन सुख साजा ॥

दोहा।

तिनके थम्मन प्रगट भे मऊ सुगुन गुनखानि।
जिनके हिम्मतिराउ पुनि नृप परसाद सुदानि॥
ता सुत बिदित मकुन्द जग चेतन नृप तिमि तासु।
तासु तनय सिरदार तेहि बेनी कुन्दन जासु॥
जिनके दुल्लह देव भे सुवन सुखद श्रुतिपाल।
तिनके प्रगटे सुमति श्री भैरव देव भुवाल॥
सुखद सुजन जन के सदाँ भैरवदेव भुवाल।
बीर बिदित जग में महा अरिगन पै जिमि काल॥
सुखद सुमति तिनके तनय द्वै अति रूप अनूप।
सालदेव मतिवान बर बालदेव सुर रूप॥
निधिससिबिधुमहि अब्द में समै सुखद जिय जानि।
बन्धु सुहृद सेना सहित अवध गये मुद मानि॥
सालदेव महराज सुचि अवनि अरिन बिन कीन।
सुथल संभु ढिग गुनि बसे रामनगर सुख लीन॥
बालदेव महि सुभग लखि किय बौंड़ी बिच बास।
सिव पूजन नितहीं करत प्रेम नेम स हुलास॥
सालदेव नृप के भये सुवन सुखद सुचि तीन।
परम प्रतापी बीरबर बैरिन बिन महि कीन॥
इक पहाड़सिँह भूप बर दूजे श्री जसवन्त।
तीजे कीरतिसिंह नृप बिद्या बुधि बलवन्त॥

रामनगर में बसत भे श्री पहाड़सिँह भूप ।
बसे रामपुर बिमल रचि श्री जसवन्त अनूप ॥
श्री कीरतिसिँह नृप रहे देवथानी सुभ जानि ।
कल कीरति जिनकी बिमल भई जगत सुखदानि ॥
श्री जसवन्त महीप को सुजस चन्द चहुँओर ।
सुजन चकोरन को सदाँ सुखदायक बरजोर ॥
अचलसिंह तिनके तनय सुधरम अचल समान ।
दया दान द्विजवरन पर गुन गंभीर महान ॥
अचलसिंह महराज के हृदयराम अभिराम ।
हृदय राम जिनके बसत होत सिद्धि शुभ काम ॥
चारिहु बरन बसाय करि हृदयराम अभिराम ।
नाम रामपुर सुखद हरि अमरावति सम धाम ॥
आये तुलसीदास जहँ साधुसमाज समेति ।
रामायन निज कृत लिखित दीन्ह्यौ नृप हित हेत ॥
भीष्मसिंह तिनके भये भीष्महि के सम ज्ञान ।
धीर बीर बर विदित जग जस जिनको सित भान ॥
भीष्मसिंह रणधीर के सुत कल्यान भुवपाल ।
अपर सुसज्जनसिंह नृप पूजन करत त्रिकाल ॥
सुवन महीसिँह प्रगट भे तिनके परम सुजान ।
बखतावरसिँह तेहि तनय सुन्दर बीर महान ॥
फतेसिंह तिनके भये नृपगन में सिरताज ।

दान मान किरवान में जिनकी फते दराज ॥
फतेसिंह महराज के द्वै सुत अति अभिराम ।
बिजयसिंह गुन ग्राम नृप दलगंजन मतिधाम ॥
विजय नृपति महराज सुत सिंह सहित अहलाद ।
जिन कीन्हे खल दल दलन हितुवन हिय अहलाद ॥
जुगुल तनय तिनके भये हिम्मतिसिंह अभिराम ।
जिनकी हिम्मति सेर सम बुधि विद्या बलधाम ॥
अनुज सुकीरतिसिंह नृप कल कीरति जग जासु ।
दया दान सनमान करि द्विजगन तोषत आसु ॥
हिम्मतिसिंह नरेन्द्र के श्री सिवबकस नरेस ।
परम धरम जुत इमि लसत जिमि सुर मध्य सुरेस ॥
जग-जाहिर तिनके तनय माधवसिंह भुवाल ।
बिबिधि दान दै करि कियो द्विजन प्रजन प्रतिपाल ॥
बीर बिदित तिनके सुवन श्री सिवसिंह सुजान ।
सुजस दान किरवान में जिनकर नाम महान ॥
नृपन मौलि मनि-मंजु से तिनके सुत गुनधाम ।
श्रीगुमानसिंह भूप बर बिदित जगत जस आम ॥

कबित्त घनाक्षरी ।

जाकी सनमान के समान है न आन भूप परम सुजान गुन गौरव बखान है । राज काज

निपुन रिपुन को न रास्यौ नेक करत अनेक दान करन समान है ॥ स्याम द्विज मानद हमेस चित्त आनद सुधर्म्म के निमित्त बित्त धनद न आन है । महाराज राज सिरताज श्री गुमान-सिंह सुजस महान तप तेज को निधान है ॥

पुनर्यथा ।

बास करै नन्दन बिपिनि में हमेस बेस सु-मन सुरेस लेत सुख सरसावै ना । जाँचक के जाँचत सुऋद्धि सिद्धि देत आसु सुजस पसारै जग सुरति भुलावै ना ॥ रावरी अपार दान-धारा की धुकार सुने हारि हिये मानि अवनीतल में आवै ना । राज-सिरताज श्री गुमानसिंह म-हाराज तेरी कर समता कलपतरु पावै ना ॥

कीरति लता को कै सुमन चन्द आला स्वच्छ उन्नत रसाला की कमाला धर्म्मधुर मैं । सुजस मसाला प्रेम नेम प्रतिपाला की सुमेर मेरवाला कै अनन्द स्याम उर मैं ॥ जागै जोति जाला मंजु मूरति कृपाला हेरि हरत कसाला बर बिप्र धेनु सुर मैं । श्रीयुत महीप श्री गुमानसिंह महाराज बिरच्यौ बिसाला है सिवाला रामपुर मैं ॥

दोहा ।

सुमति सजीले जुगुल सुत तिनके परम अनूप ।
जेठे रुद्रप्रतापसिंह नृपनय-निपुन सुभूप ॥

यथा कबित्त घनाच्छरी ।

जाहिर जहान ज्ञान गुन को गँभीर धीर दान बर बीर औ कृपान मै सुथाप है। सूर सम तपत सुरन मै उदित होत तोम तम सत्रुन को रहत न दाप है ॥ नाम सुने भाजत उलूक सों लुकात तन ज्वाला सों जरत अरि जोर जनु साप है । महाराज राज श्री प्रतापरुद्रसिंह राज जागत महान जग प्रबल प्रताप है ॥

सुजसवर्णन ।

अमल अखण्ड वसुधा मैं वसु यामै रहै मुदित मुदित स्याम सुमन चकोर को। कैरव कलपतरु केवरा कपूर कंबु कास कमनीय कंज कामद सजोर को ॥ क्षीरसिंधु सारद सरद घन पारद परम शुचि नारद प्रभा रद अथोर को । महाराज राज श्रीप्रतापरुद्रसिंह जग रावरो सुजस है सु चंद चहुँओर को ॥

दोहा ।

अवनि अनेकन धरम करि गवन कीन शिवपास ।

जस प्रताप जिनको कियो दिग अंतन लौं बास ॥
बंधु तासु गुनशील निधि सुजस बली अभिराम ।
नृपति महेश्वर बकस शिर शोभित छत्र ललाम ॥
राज सिँहासन पर लसत बखतबली महराज ।
मनहुँ नरन हित अवनि पै राजत है सुरराज ॥
संत सुहृद कबि कोबिदन हितकर करन समान ।
कलकीरति बिधुबिमल जग सम महिपाल न आन॥
ज्ञानवान गुनवान नृप नीतिवान मतिवान ।
शीलवान विद्वान वर भूप महेश्वर जान ॥
संस्कृत भाषा फारसी प्राकृतादि मैं तज्ञ ।
षट शास्त्रन के भेद तिमि राज काज सर्वज्ञ ॥

कवि वर्णन ।

गादी औ मसंद तकियों को तके काम मंजु कंचन मनीन पुंज मोतिन सुसाज है । रतन सिँहासन पै महाराज राज श्री महेश्वरबकस सिंह राज सिरताज है ॥ स्याम द्विज देखि दुति चख चकचौंध होत नाच रंग राग सुर संजुत अवाज है । सूर चंद किरन अखण्ड महिमंडल मैं मानो संग सुरन समाज सुरराज है ॥

पुनर्यथा ।

बसन बिभूषन बिभूषित कनकजुत जटित

जवाहिर सु मोतिन की माल है । पन्ना पोखराज स्याम मनिन सिंहासन पै महाराज राजत महेश्वर विशाल है ॥ नृत्य राग रंग मैं उमङ्ग की तंरगन सों डारत अबीर रङ्ग गरद गुलाल है । आयो सुरराज आज मानो महिमण्डल मैं सुरन समेत सुचि सीखत सु चाल है ॥

सुजस वर्णन ।

चन्दन सों चामर सों चाँदनी चमेलिन सों चन्द सों दुचंद चारु स्याम कबि गायो है। हीरा सों हिमालै सम हरिहर-चन्दन सों हंस सों हमेस बेस हिय हुलसायो है ॥ कुंद सों मकुन्द सों है पारद सु नारद सों कम्बु कास सारद समानता न पायो है । चक्कवै महेश्वरबकस महाराज राज रावरो सुजस महिमण्डल में छायो है ॥

अथ प्रताप वर्णन कवित्त ।

बैरीबृन्द भाजे फिरैं रन बन साजे सैन पावत न चैन तेज ताप सों जरत है। ग्रीषम तरनि सम गरबी गनीमन को जेर करि जोर ज्वाल जाहिर परत है ॥ करत दिगन्तन प्रकास द्विज स्याम कहै हेतिन के सीस छत्र छाया है ढरत

है । बीरबर बिदित महेश्वरबकस भूप रावरो प्रताप कल कौतुक करत है ॥

अथ तेग बर्णन कवित्त ।

कानन में नगर नगर करै कानन को गब्बर गनीमन के प्रान हरतारी है । रङ्ग रन भूमै महाकाली सङ्ग घूमै खल श्रोनित चमू मै चाखिबे को सरतारी है॥ पन्नगी प्रचण्ड सम सत्रुन के काटिबे को पालिबे प्रजा के हेत धर्म धरतारी है । जङ्ग जैतवार श्री महेश्वरबकस भूप कर मै कृपान करै काम करतारी है ॥

अथ दुनाली बर्णन ।

जाके जोर सोर में प्रलै के घनघोर कहा कठिन अरिन ओर बढ़ति उताली है। गोली की धमक पाय धसक धरा पै होत डोलत धराधर सों ढाहति गजाली है ॥ धीर न धरत हिय हहरि हहरि करि घूमि घूमि गिरत परति नहि खाली है । बीर बर बिदित महेश्वरबकससिंह प्रबल प्रचण्ड यह रावरी दुनाली है ॥

अथ दान बर्नन सवैया ।

जाँचक जाँचत जे ढिग जाय कै पावत ते मन मौज लुने हैं । है गज साजि सु कञ्चन की

निधि देत सु आँनद प्रेम सुने हैँ ॥ कीरति चादनी सी जग मैँ द्विज स्याम हितै बलि भोज चुने हैँ। श्री महराज महेश्वर के कर कल्पलता से करोरि गुने हैँ ॥

जाँचक लिलार लिपि बिरच्यौ बिरंचि जन होय यह रङ्क सों असत्य नहिं कीन्ह्यौ है। दान सनमान कै कुबेर औ सुमेर सम सम्पति सँवारि सुख स्याम मुख चीन्ह्यौ है ॥ कलपलता को जनु अलप पताको करि सुजस पताको जग आप कर लीन्ह्यौ है। चक्कवै महेश्वरबकस महाराज जू ने दारिद को दारिद सु वाके कर दीन्ह्यौ है॥

इस कवित्त मे कवि की उक्ति है राजा की प्रसंशा है अत्युक्ति अलङ्कार है। लच्छन। अलङ्कार अत्युक्ति सो बरनन अतिसै रूप। जाँचक तेरे द्वार ते भये कल्पतरु भूप॥

अथ रस निरूपणम् दोहा।

भाव बिभावनुभाव अरु संचारिन जुन जौन।
थाई कारज हेतु सों परिपूरन रस तौन ॥ १ ॥
भये ब्रह्म में मगन मन जो जीवहिँ सुख होत।
सो रस है सुख रूप नव बरनत सुजन सुगोत ॥

सोरठा।

जीव सदस रस मानि, यथा व्यङ्गि सब्दार्थ नहिं।
तथा मुख्य सुखखानि, रस के बोधक भाव हैँ॥३॥

वार्ता ।

जैसे व्यंगि सव्दार्थ नहीं है तैसे रसहू सव्दार्थ नहीं है ।

अथ रस बोधक भावादीनां यथोत्पत्ति लच्छनवर्ननम्

तत्र भाव लच्छणम् दोहा ।

होत चित्त में प्रगट जो रस अनुकूलहिँ आय।
ताहि बखानत भाव कबि मिटै न किये उपाय॥४॥

अथ भाव भेद बर्ननं दोहा ।

भाव द्विबिधि सो जानिये अन्तर उपर सरीर ।
अन्तर हू में बहुरि बिय थाई व्यभिचर बीर ॥५॥

थाई लच्छण दोहा ।

थाई थिर हैं आठ बिधि रति आदिक रस मूल।
व्यभिचारी व्यचरन्त हैं सहकर तैंतिस तूल ॥६॥

अथ सारीरकानुभाव लच्छनम् दोहा ।

सारीरक सुसरीर ते बसु सात्विक स्वेदादि ।
थाई अनुभव करन ते हैं अनुभाव प्रमादि ॥७॥

अथ बिभाव लच्छन ।

जे अतिसै भावत मनै ते थिर होत बिभाव ।
आलम्बन उद्दीपनहुँ द्विबिधि कहत कबिराव ॥८॥

अथ आलंबन बिभाव लच्छणम् ।

आलम्बन अबलादि तैं रस आलम्बित होत ।
उद्दीपन दीपन करै पुहुप चन्द उद्दोत ॥ ९ ॥

अथ आलम्बन भेद बर्ननम् ।

आलम्बन द्वै भाँति को बिषयालम्बन एक ।
द्वितिय आश्रयालम्बनहुँ कहत सुकबि सबिबेक ॥

अथ विषयालम्बन लक्षणम्।

विषयालम्बन है सोई जेहिँ लखि रति हिय होय।
आश्रय आलम्बन कहूँ प्रगटत आश्रय जोय॥

अथ आश्रयालम्बन लक्षनम् अथ रस भेद बर्ननम्।

प्रथमहिँ आठ प्रकार को पुनि नव किय कबिराज।
श्यामादिक रँग देवता श्यामादिक रसराज॥१२॥

अथ रस नाम बर्ननम् दोहा।

रस सिँगार कहि हाँस्य पुनि करुण रौद्र अरु बीर।
बीभत्सरु भय अद्भुतहु सांत कहत मति धीर॥१३॥
नवरस के रँग नव कहे नवहि देवता मानि।
थाई नव हैँ प्रथक ये क्रम सों लीजै जानि॥१४॥

अथ रसरंग बर्णनम् दोहा।

रङ्ग स्याम अरु स्वेत कहि बहुरि कपोत सुरक्त।
कुन्दन कैला नील बर पीत शुक्ल निधि व्यक्त॥

अथ रंग देवता बर्ननं दोहा।

कृष्ण बायु बर बरुन सिव सक्र और यमराज।
महाकाल बिधि ब्रह्म रस देव कह्यौ कबिराज॥१६॥

अथ थाई बर्णनम् चौपाई।

रति हाँसी अरु सोक बखानौ। क्रोध हर्ष भय भेदहि जानौ॥ घिन आश्चर्य कह्यौ निरवेदा। क्रमते थाई नवरस भेदा॥ १७॥

अथ अनुभाव लच्छनम् दोहा ।

जिनते रति थिर होत चित ते सिंगार अनुभाव।
सो द्वै बिधि इक क्रियनते यक तन खुद कबि गाव॥

अथ सारीरकानुभाव लच्छनं दोहा ।

अनुभव सो जो लखात यक कहत कबिन के वृंद।
सो तन ते कविबर कहत लखि रस ग्रंथ अमंद॥
अँग विकाश रति भाव को जाते प्रगटति संद ।
भाव कटाक्षादिक कहत सात्विक धृत आनंद॥

संग सखीन के राधिका की छबि ज्यों यमुना तहँ नेसुक हेर्यो। न्हाय सु भूषन औ पट साजि चहूं कित कौतुक सों दृग फेर्यो॥ स्याम लख्यो तित ठाढ़े कहूं अँग अंग अनंग छटा झकझेर्यो। दोऊ दुहूँन के प्रेमपगे हँसि प्यारी उतै सो चितै चित घेर्यो ॥ २१ ॥

टी॰ । इस कवित्त में सखी की उक्ति सखी प्रति है और प्रेमालंकार है स्वभावोक्ति भी है ॥ लच्छण । स्वभावोक्ति यह जानिये बर्नन जाति स्वभाव । हसि हँसि फिरि देखति झुकति सुख मोरति इतराव॥ प्रेमा को नामही लच्छण है ॥ २१ ॥

अथ सात्विक भाव बर्णन दोहा ।

स्तंभ स्वेद रोमांच कहि बिवरन अरु स्वर भंग।
आँसू कंप प्रलाप बसु सात्विक निधि जृम्भंग॥

तत्रस्तंभ अनुभाव लक्षणम् दोहा।

लज्जा भय हरखादि तें अँग अडोल जब होय।
ताहि कहत अस्तंभ कबि रस ग्रंथन मत जोय॥

तस्य उदाहरण सवैया।

चंदमुखी साजि भूषन अंग चली रसरंग भरी छबि छावै। घूघुट खोलि चितै मुसक्याय सु नैनन सों मन मैन जगावै॥ स्याम बिलोकतहीं बर बाल रही जकि ज्यौं पलकै न लगावै। दोउन को तन को तन को न रही सुधि देखतहीं बनि आवै॥ २४॥

टीका। इस कवित्त मे परकीया नायिका है उक्ति सखी की सखी प्रति यमकालंकार है। लक्षण। जमक शब्द को फिरि श्रवन अर्थ जुदो सो जानि। सीतल चंदन बंदनहि अधिक आगि ते मानि॥२४॥

अथ स्वेद लक्षण दोहा।

हरष लाज श्रम रोष भय अँग जाहिर जल होय।
स्वेद बखानत ताहि सब सुकबिन की मति जोय॥

तस्य उदाहरण कवित्त घनाक्षरी।

सीस पै किरीट श्रुति कुण्डल सवाँरे कटि पीतपट धारे गुंज हार हिय भायो है। काछनी सुकाछे आछे गैयन के पाछे मंजु मुरली बजाय काम कोटिन लजायो है॥ नटवर भेष मन मोहत अनेकन को प्रेम सरसाय इहि मारग सि-

धायो है। ऐसो है अनूप स्यामसुन्दर सरूप सखी जाको देखि राधिका के स्वेद तन छायो है ॥२६॥

टीका। इस कबित्त में लक्षिता नायिका है सखी की उक्ति सखी प्रति प्रथम सम अलंकार औ तीसरा प्रतीप है। लक्षन। अलङ्कार सम तीनि बिधि यथायोग्य को सङ्ग। कारज में सब पाइये कारन ही को अङ्ग ॥ ॥ १५ ॥ प्रतीपलक्षन। अनआदर उपमेय ते जब पावै उपमान। तीक्षन नैन कटाक्ष ते मन्द काम के बान ॥ २५ ॥

अथ रोमांच लक्षन दोहा ।

हरष भीति कामादि ते उठत रोम तन माहिं ।
कहत ताहि रोमांच कवि लखि रस ग्रन्थन काँहि ॥

तस्य उदाहरणम् सवैया ।

सीत की भीत के प्रीति कछू तनको तन को नहिं जात सँभारे। आनद धौं उर छाय रह्यौ सु कुतूहल जानि परैं जनु न्यारे ॥ काम कला की कला है बला यह ह्वै है कहा मन सोच हमारे । तै न उठी मनमोहन को लखि रोम उठे अँगही के तिहारे ॥ २८ ॥

टीका। इस कबित्त में लक्षिता नायका है सखी की उक्ति नायका प्रति पिहितालङ्कार है। लक्षन। पिहित छिपी पर वस्तु को आनि देखावै भाय। प्रातहि आये सेज प्रिय हँसि दाबति तिय पाय ॥ २८ ॥

अथ बैबर्न्य लक्षन दोहा ।

सोक भयादिक क्रोध तें कै हरषहुँ ते आनि ।
बरण और बिधि होय जब सो बैबर्न्य बखानि ॥

तस्य उदाहरण सवैया।

मनिमन्दिर में सजि प्यारी गई सखियान के सङ्ग सु खेलन को। तहँ औंचक आय गये पिय स्याम चह्यौ गहि अङ्क में मेलन को॥ सकुची सिकुरी तन पीरी परी मुख ताकि रही उर झेलन को। अँगराग मलीन परे सिगरे हरि कीन्हो जबै रस रेलन को॥ ३०॥

टीका। इस कवित्त में नवोढ़ा नायिका है सखी की उक्ति सखी प्रति अनतरंगिनी कुट्टमित हाव है, तृतीय असंगति अलंकार है। लक्षन। औरै काज अरंभिये औरै करिये दौर। कोयल मदमाती भई झूमत अंबा बौर॥ तेरे अरि की अंगना तिलक लगायो पानि। मोह मिटायो नाहि प्रभु मोह लगायौ आनि॥ ३०॥

अथ स्वरभंग लक्षन दोहा।

हरख कोप मद सुरति श्रम भय अरु लाज प्रसङ्ग।
होय और बिधि बचन जहँ कहत ताहि स्वरभङ्ग॥

तस्योदाहरणम् कवित्त घनाक्षरी।

आई केलिमन्दिर में मदन-मदीली बाल औचकहीं आयो स्याम पायो मन साधा सौं। गहत उरोज झकझोरि झझकोरि जकी चौंकि चकि उझकि परी यौं गुन नाधा सौं॥ एजू अजू ऐसो कहा करत अनोखे नेक नैनन नचाय हँसि दीन्हो प्रेम पाधा सौं। लाय परजङ्क

पिय अङ्क भरि लीन्ही फेरि हेरि मुख बचन न आयो बोलि राधा सों ॥ ३२ ॥

टीका । इसमें मध्या नायिका है सखी की उक्ति सखी प्रति है, स्वभावोक्ति औ सम तृतीय है लच्छन पूर्वोक्त है ॥ ३२ ॥ स्वभावोक्ति यह जानिए बरनन जातिस्वभाव । इत्यादि ।

पुनर्यथा ।

बैठी मनिमन्दिर मैं प्यारी रति-रूपवारी तैसे मनभावन को आवन जनायो है । हेरि तिरछौंहे फेरि मंजु मुसक्यानी नेक नैनन नचाय सकुचाय सुख पायो है ॥ स्याम उर लाय रस रीति सरसाय मन मदन जगाय कल कौतुक मचायो है। बाँही गहि अङ्कभरि पार्यौ परजङ्क पै जो नाहीं कह्यौ चाहति सो नाहीं कहि आयो है ॥

टीका । इसमें नायिका मध्या है सखी की उक्ति सखी प्रति है प्रथम प्रहर्षनालङ्कार है ॥ ३३ ॥ लच्छन । तीनि प्रहर्षन जतन बिन बांछित फल जो होय । बांछित फल ते अधिक फल स्रम बिन लहिये सोय ॥

अथ अश्रु लक्षण दोहा ।

आनँद अरु दुख रोस भय शोकादिक ते होय।
नैन-नीर प्रगटत जबै अश्रु कहत कवि सोय ॥

तस्य उदाहरण कवित्त घनाक्षरी ।

आजु हौं गई ती मग कुंजन अनोखी भई दरद दईने दई रूपरस बारे की। स्याम अभि-

राम छबि छकित भुलानी सुधि बुधि बिलखानी रहै नेक न सम्हारे की ॥ आह करि भावत न धीर उर आवत सु पीर सरसावत मनोज-बज्र मारे की। नैन-जलजात से प्रबाह-जल जात बीर मन ते न जात तसबीर प्रानप्यारे की ॥

टीका। इसमें परकीया प्रौढा है नायिका की उक्ति सखी प्रति है संसृष्टि अलङ्कार है धर्मलुप्ता सुमिरन जमक छठी विभावना है।

अथ कम्प लक्षण दोहा।

हरख कोप भय काम ते थरथरात जब अङ्ग।
कम्प बखानत ताहि सब जे प्रबीन रस-रङ्ग ॥

तस्य उदाहरण कवित्त घनाक्षरी।

आवत सखी री स्याम सुन्दर सलोनो गात मृदु मुसक्यात बात मोसन बतान्यो है। मग मै मिलै को चह्यौ अङ्क भरिबे को जो मै सङ्क मन आन्यौ त्यौँ निसङ्क सकुचान्यो है ॥ लै लियो चोराय चित्त जाय उतै ठाढ़ो रह्यौ भेदहू न जान्यौ पुनि प्रेम सरसान्यो है। तरनितनूजा तीर तकत तिरीछे ताकि ता छिन ते मेरो तन थकि थहरान्यौ है ॥ ३६ ॥

टीका। इसमें ऊढ़ा नायिका है उक्ति नायका की सखी प्रति उल्लासालङ्कार चतुर्थ भेद है॥ लक्षण। गुन औगुन जब येकते और धरै उल्लास। न्हाय संत पावन करै गंग धरै येहि आस॥ ३६ ॥

अथ प्रलय सात्विक भाव लक्षन दोहा ।

हरख शोक भय काम ते तन सुधि रहै न नेक।
प्रलय बखानत ताहि कवि जिनके बिमल बिवेक॥

तस्योदाहरण कवित्त सवैया ।

आय कढ़े मग में मनमोहन अङ्ग अनङ्ग लजावन हारे। राधिका स्याम बिलोकत ही सु लगे दृग दोउन के अनियारे॥ कोऊ सके न सँभारि मनै तन को तनको तब चैन न धारे। बेधि गये हिय सैनन के शर मैन मरोरि मनौ मलि डारे॥

टीका। इसमें परकीया नायिका है उपपति नायक है, उक्ति सखी की सखी पति। संसृष्टि अलंकार प्रतीप सहोक्ति दूसरी विभावना, हेतूत्प्रेक्षा। लक्षण पूर्वोक्त है।

भाव लक्षन दोहा ।

श्रम आलस अरु मोहबस जहँ मुखकमलबिकास।
ताहि बखानत सुजन जन जृंभा सुरति हुलास॥

तस्य उदाहरण कवित्त सवैया ।

नवला निसि केलि कै प्रात खरी अलसानि भरी छबि हेरि लियो। अँगिराय जम्हाय लजाय कछू मुसकाय सु नैनन फेरि लियो॥ लखि स्याम मनोज हिये सरस्यौ सुखसिंधु तरङ्गन गेरि लियो। कर सों छिटकाय दियो सिर सों कच आय दोऊ कुच घेरि लियो॥ ३९॥

इति सात्विकभाव: अथ संचारी भाव बर्णन कबित्त ।

निन्दा सों निखेद मन सोई निरवेद होत रति बल हानि ग्लानि संक कहवायो है। और को सहै न सुख सो तो है असूया प्रेम रूप मद छाक श्रम आलस बतायो है ॥ मोह बिकलाई भय औरऊ वितर्क चिंता सुस्मृति धयान दुख दीनता दिखायो है । ब्रीड़ा हर्ष जड़ता विषाद गर्व उत्सुक त्यों निद्रा कम्प मूरछा सु नाम भेद गायो है ॥ ४० ॥

पुनर्यथा ।

अमरख अपस्मार स्वपन सुजागिबो जो सोई है बिबोध स्याम सुकबि गनायो है। त्रास अवहित्थ आवेग उग्रता है व्याधि छीन तन मरन सु वेदन बनायो है॥ और है सुधृति मति ज्ञान लहि होति सति त्योंहीं उनमाद औ चपलता सनायो है । भेद संचारिन के तैंतिसौ बखान्यौ जौन तौन तिन नामही में लक्षन जनायो है ॥ ४१ ॥

सिद्धश्रीमहाराजाधिराज राजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधिप रैकवार कुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मजश्रीमहेश्वरवक्ससिंहबहादुरजूदेव को आज्ञानुसार स्यामसुन्दरविरचित महेश्वरसुधाकरग्रन्थ भावसंचारी आदिवर्णनचतुर्थस्तरंग: ॥ ४१ ॥

अथ शृङ्गाररस बर्णन दोहा।

रस सिँगार सो कहत हैं जेहि रति थाई भाव।
अरु बिभाव अनुभाव जुत संचारी सु गनाव॥

रतिलच्छन।

सो बरनत रति चित चुभी प्रीति और पर होय।
सुकवि कहैं शृङ्गार के भाव सु थाई सोय॥२॥
रति परिपूरन भाव थिर सो रस है शृंगार।
सुजन रसिक प्यारी महा सुकबिन कह्यो विचार॥
तिया पुरुष शृङ्गार के आलम्बन जिय जानु।
बन अराम सिखि पुहुप ससि उद्दीपन उर आनु॥
अँग विकाश मृदुहँसनि पुनि हाव भाव जुत और।
कहि अनुभाव सिँगार के बरनत कबि सिरमौर॥
सो संचारी भाव हैं उन्मादिक संचार।
देव स्याम अरु स्याम रँग रस सिँगार है प्यार॥
द्वै विधि है शृंगार रस तिय पिय सँग संजोग।
बिछुरन दोउन को सोई बरनत सुकबि बियोग॥

तत्र संजोगशृङ्गार लच्छन दोहा।

तिय की केलिकलानि में जहँ प्रसन्न मन होय।
कहत सँजोग सिंगार रस परिपूरन रति जोय॥
अन्तरीय रति सात हैं वहि रति सात सुजानि।
रति विपरीति सुमुदित तिय पियसंजोग बखानि॥

तस्योदाहरण कवित्त।

आज रति रङ्ग के उमङ्ग स्याम पी के सङ्ग मदन मजेजन अमेजन अरी रहै। करि बिपरीति रीति बिबिधि बिनोद मोद मो तन सरोज ओज मोजन भरी रहै॥ जुरि जुरि अङ्क फेरि मुरि मुरि जाती कहा सुमन समेति रन रङ्ग में खरी रहै। लाल के ललकि लपिटात लचि जात लङ्क व्यालिनि सी बेनी बीर पीछे क्यों परी रहै॥ १० ॥

टीका। यह कवित्त में प्रौढा नायिका है औ विपरीति सों संयोग शृङ्गार है, उक्ति नायका की बेनी प्रति है पूर्णोपमालङ्कार है। लच्छन दोहा। वाचक है अरु धर्म जह उपमेयो उपमान। तहँ पूर्णो उपमा कहत उपमा सादृश्य जान॥ १० ॥

पुनर्यथा सवैया कवित्त।

सेज सजी सजनी सुचि सों रजनी कै मिलै कै धरे लै मसाला। स्याम के सङ्ग अनंग भरी डगरी मनिमन्दिर ओर उताला॥ कै बिपरीत रमै रति में पति में मन कै करै काम कमाला। बाला झुकै उझकै न रुकै येहि कारन कान न हालत बाला॥ ११ ॥

टीका। इस कवित्तमं प्रौढ़ा नायिका है सुविपरीति रति सों उक्ति अनतरङ्गिणी सखी की है काव्य लिङ्ग अलङ्कार है। लच्छन दोहा। का-

व्य लिङ्ग जब जुगुति सो अर्थ समर्थ न होय । मैं तोको जीत्यौं मदन मौ हिय मै शिव सोय ॥ ११ ॥

पुनर्यथा ।

स्याम के सङ्ग करै रति रङ्ग भरी रसरङ्गन में झुकि झूमत । छाके सु जोबन के मद में जनु थाके परे परजङ्क में दूमत ॥ प्यारी मिलाय दियो मुख सों मुख सो सुखमा अखियान में घूमत । आवति मो मन में उपमा यह चंद मनौं अरविन्द को चूमत ॥

टीका । इस कवित्त में नायिका प्रौढ़ा स्वकीया है उक्ति सखी की सखी सों, औ उत्प्रेक्षा अलङ्कार ।

पुनर्यथा ।

सजि केलि कै मन्दिर बैठि तिया छबि आनन इन्दु समान लसी । अति भूषन भूषित अङ्ग लसैं यह को कही की नहिं कोक बसी । तेहि औसर आइ कै नन्दकिशोर गह्यो गर त्यों बरजी बिहँसी । लर टूटी कहूं कबि स्याम कहै येहि कारन मोती की माल खसी ॥ १२ ॥

टीका । इस कवित्त में सध्यावासक सज्या नायका है सखी सखी की उक्ति है कबि निवद्ध स्वत: सम्भवी है पूर्णोपमा अलङ्कार है लच्छन पुर्वोक्त है मुख उपमेय चन्द्रमा उपमान छबि धर्म सो बाचक इति ॥

अपरञ्च सवैया ।

सेज सजी सखियां सुचि सों रस रङ्ग त-

रङ्ग उमङ्ग हरे मैं। स्याम सुबास सुबासित कै छबि छाय रही रति रङ्ग घरे मैं॥ लाई लिवाय लजीली सुबाल न जानै हवाल सुभाय भरे मैं। चौंकि चकी सुचितै करी आह परी जब नाह की बाँह गरे मैं॥ १३॥

टीका। इस कबित्त में प्रौढ़ा नायिका है, सखी सखी प्रति उक्ति है औ समुच्चय अलङ्कार है प्रथम भेद १३। लच्छन दोहा। उपजत एकहि संगही जहँ कछु भाव अनेक। प्रथम समुच्चय कहत हैं जे कबि कहत बिवेक॥ १३॥

पुनर्यथा कबित्त घनाक्षरी।

कीधौं सुधासिंधु मैं मयङ्क की बिभा है स्वच्छ कीधौं दिव्य दुति है सोहाति सुरगुर की। कीधौं कल कमल बिकास मंजुता है कैधौं छबि छनदा है छिति छाई सुरपुर की॥ कैधौं दीप दीपन की दीपति दिपति कैधौं सुखमा सोहाई हेम पाई है मधुर की। देखे अभिराम आसु मोहै मन स्याम राधे आनन प्रभा है कीधौं आभा है मुकर की॥ १४॥

टीका। इस कबित्त में रूप मात्र को वर्णन है नायिका मात्र जानिये उक्ति सखी की या नायक की है और सन्देहालङ्कार है। लच्छन। जहाँ एकही बस्तु को करत बहुत सन्देह। कै कीधौं पद दै जहाँ सन्देहा सुख गेह॥ १३॥

पुनर्यथा ।

राजै रङ्गरावटी में मंजुल मयङ्कमुखी सुखमा विभूषन विभूषित सु अङ्ग वाल । हीरा लाल हार मध्य मोतिन विशाल माल उपमा रसाल तन जोति छबि जोति जाल ॥ चमक चहूँघा चारु चन्द्रक चुनीन आब अधर प्रबाल सङ्ग स्याम के निहाल हाल। पट जरवाफी प्रभा जागति जलूसदार मानौ तारापति धौं सितारा की मदनमाल ॥ १५ ॥

टीका। उक्ति सखी सखी प्रति है उत्प्रेक्षा अलङ्कार है रूपमात्र को वर्णन सो नायिका मात्र जानौ ॥

अथ हाव वर्णन तत्र हाव लक्षन दोहा ।

करैबिबिधिबिधिभावतिय पियहियसुखसरसाय ।
रमै रमन मन लखि जिन्हैं हाव कहत कबिराय ॥
प्रथमहिं लीला जानिये भाषत द्वितिय बिलास ।
पुनिविच्छितविभ्रमअपर किलकिंचितललितास ॥
विहित बिवोकरु कुट्टमित मोट्टाइतहु सुजानि ।
बोधक हेला तपन पुनि मुग्ध कहत रसखानि ॥

तत्रादौ लीला हाव लक्षन दोहा ।

करै पुरुष तिय रूप को तीय पुरुष को रङ्ग ।
लीला हाव बखानहीं सुकबि बिलोकि सुसङ्ग ॥

तस्योदाहरण सवैया।

राधिका मोहन रूप रच्यो सिरमोर पखा बन माल बनायो। काछनी काछि सु बाँसुरी लै कर मैन के मंत्रन फूँकि बजायो॥ स्याम सु राधिका त्यों बनि कै सुनि कै बिरहानल सों तन तायो। धाय मिले पुनि आय दोऊ कलकौतुक देखत ही बनि आयो॥ १९॥

टीका। इस में प्रौढ़ा नायका है उक्ति सखी की सखी प्रति अन्य उन्यालङ्कार असंगति बिचित्र लच्छन अन्यउन्यालङ्कार सो अन्यउन्य उपकार ससि सों निसि नीको लगै निसिही मै ससिसार बिचित्र लच्छन नावत उच्चता को लहत जे है पुरुष बिचित्र। इच्छा फल बिपरीति को कीजै जतन बिचित्र॥ १९॥

अथ बिलास हाव लच्छन दोहा।

भावबिबिधिबिधिकरततिय पियमनहरिबेकाज।
सोई हाव बिलास है कहत सुकवि सिरताज॥

तस्य उदाहरण सवैया।

पिय पास मैं प्यारी प्रबीन तिया करि भाव अनेकन सोहती है। चित चौंकि चकै झझकै उझकै कुच तुंग तरङ्गन सोहती है॥ अँग अंग अनंग के रङ्गन के गुन गौहर से उर पोहती है। मुख मोरि सुनै न नचाय चितै हँसि मोहन को मनमोहती है॥ २१॥

टीका । इस में नायका पौढ़ा है स्वकीया ललितहाव है समुच्चय लङ्कार है । उक्ति सखी की सखी प्रति है । लच्छन । दोय समुच्चय भाव बहु कहुँ एक उपजै संग । इक काज चाहै कर्यो ह्वै अनेक इक अंग ॥

अथ विच्छित्तहाव लच्छन ।

अलप विभूषन बसनसा तिय छबिअति सरसाय ।
बिच्छित हाव बखानहीं सुकविन के समुदाय ॥

तस्योदाहरणम् कवित्त घ० ।

आनन अनूप चंद चाँदनी चटक चारु छाई बसुधा में बसु यामें मोदकारी है । उदित बिलोकि स्याम नैन व्है चकोर सदा रहत सकाम अभिराम मनधारी है ॥ उरज रसाल पै बिसाल माल मोतिन की गङ्गधार मानौ मंजु शंभु सीस धारी है । हारी रूपवारी रति रम्भा मैनकारी रंग प्यारी अङ्ग सारी प्रभा पुंजन पसारी है ॥

टीका । इसमें स्वाधीन पतिका नायका है उक्ति नायक की सखी प्रति शंकर अलङ्कार प्रतीप रूपक उत्प्रेक्षा लच्छन पुर्वोक्त है ॥ २३ ॥

अथ विभ्रमहाव लच्छन दोहा ।

अति आतुर व्है होत जहँ काज और को और ।
विभ्रमहाव बखानहीं ताहि सुकवि करि गौर ॥

तस्य उदाहरण सवैया ।

साजि सिंगार रही अँग अंगन बाँसुरिया धुनि औचक आई । चौंकि चकी सु चितै चित कै चलि आतुर आप गई नियराई ॥ हार किये

उर किङ्किनि को कटि मैं कसि माल महा छबि छाई। स्याम लखै बर बाल खरी मनमौज भरी सुमनौ निधि पाई ॥ २५ ॥

टीका। इस कवित्त में नायिका मुदिता है सखी की उक्ति सखी प्रति दूसरी असंगति अलंकार है लच्छन पुर्बोक्तही है. । तीनि असंगति काज अरु कारण न्यारे ठाम। और ठौरही कीजिये और ठौर को काम ॥ २५ ॥

दोहा।

बिरचि सुभाल बिशाल में बाजूबँद बर-बाल। बेंदा बँदिया भुजनबिच बिहँसि लखति नँदलाल॥

अथ किलकिंचित हाव लक्षण दोहा।

प्रगट होय इक साथही जहँ रिस रस भय हाँस। ताहि सुकिलकिंचित कहत हाव सुजन सहुलास॥

तस्यउदाहरन कबित्त घनाक्षरी।

रूप रस छाके मद जोबन प्रभा के रंग रण में मजा के कसि दोऊ लंक लीन्हो है। चुम्बन करत मुख मोरि मोरि जोरि जोरि कुच के छुये ते तिरछौंहैं नैन कीन्हो है॥ लहि परजंक में निसंक गहि लीन्हो अङ्क ह्वै करि ससङ्क निज अङ्क गसि चीन्हो है। त्रासरि सरोस संग करति अनंग रंग स्याम पिय अंग हेरि फेरि हँसि दीन्हो है॥ २८ ॥

टीका। इस कवित्तमें प्रौढा नायका है उक्ति सखी की सखी प्रति प्रथम समुच्चय अलङ्कार है लच्छन पुर्बोक्त है।

अथ ललितहाव लच्छन दोहा ।

चलनि चितौनि सुअङ्ग छबि बरनत सौरभ सङ्ग ।
ललित हाव तासों कहत जे प्रबीन रसरंग ॥२९॥

तस्य उदाहरन कबित्त घनाच्छरी ।

मंजुल महल मध्य राजै परजङ्क पर जाकी मुख सुखमा मयङ्क कोटि बारी है । अङ्ग अङ्ग भूषित सुभूषन जराऊ रङ्ग पट जरवाफी प्रभा पुंजन पसारी ॥ पाँपुरी पुहप जुत महि पै परत पग फैलति ललाई ज्यौं मजीठ माठ ढारी है । चलनि चितौनि होति मन सो न न्यारी स्याम प्यारी सुकुमारी वृषभान की कुमारी है ॥

टी०। इस कबित्त में अभिसारिका नायिका है उक्ती सखी की प्रति नायिका के हैं। प्रतीप अलङ्कार है पञ्चम भेद उपमालङ्कार भी है, ल० पूर्वोक्त हो है ॥३०॥ प्रतीप लच्छन । व्यर्थ होय उपमान जब बरननीय लखि सार । इम आगे सम कछु न ए पंच प्रतीप प्रकार ॥ जाको उपमा दीजिये सो कहिये उपमान ॥ २० ॥

अथ मोट्टाइत हाव लच्छन दोहा।

सुनत स्याम पिय की कथा हिय उपजत रस भाव ।
ताहि सुजन जन सब कहत मोट्टाइत कवि राव ॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

सोभित मोरपखा श्रुति कुण्डल माल बिसाल हिये बिलसी है । स्याम सरोज बिनिन्दक नैन सुआनन की समता न ससी है ॥ बैन सुधा

मुसकानि अनी सम देखु अरी उर आनि गसी है । मूरति माधुरी मोहन की सुनतै सजनी मन माँहि बसी है ॥ ३२ ॥

टी॰ । इस कवित्त प्रौढ़ा नायिका नायकिा की उक्ति है सखी प्रति प्रतीप अलङ्कार तीसरा भेद ॥६१॥ ल॰ अन आदर उपमेय ते जब पावै उपमान । तीछन नैन कटाच्छ ते मन्द काम के बान ॥६२॥

अथ बिब्बोकहाव लच्छन दोहा ।

गहि गरूर गुन बिभव को करै निरादर तीय ।
हाव कहत बिब्बोक तेहिं जेहि अति मतिकमनीय॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

जुरि आई सची सँग मैं सिगरी सुत्रिराजि रहीं रुचि रासन मैं । धनि स्याम कहाँ बनि आये इतै ललचौंहैं लखौंहै कहा मन मैं ॥ पहिचानि समै अब जैये चले तुहै लाजन लागति या छन मैं । कमरी है लसी तुह्मरे तन मै हमरी है हँसी अमरीगन मैं ॥ ३४ ॥

टी॰। इस कबित्त प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका नायिका है उक्ति नायिका को नायक प्रति है, अवज्ञा अलङ्कार है॥२४॥ ल॰ और ठौर हो कीजिये और ठौर को काम ॥१४॥

अथ बिहृत हाव लच्छन दोहा ।

लाज बिबस तिय पिय मिलै नेकहु बोलि सकै न ।
बिहतहाव बरनत सकल सुकबि ताहि करि चैन ॥

तस्योदाहरन सवैया ।

कन्त यकन्त मिले घनस्याम अनङ्ग भरी
म तौलि तकी ना। अङ्ग अनूपम जोहि रही
ुराग सों घूँघुट खोलि छकी ना॥ अञ्चल ऐं-
। चंचल कै दृग जोरि सुने कहुँ डोलि थकी
। लाज भरी वृषभानसुता ब्रजचन्द सों मंद
बोलि सकी ना ॥ ३६ ॥

टीका । इस कबित्त में मध्या नायका है सखी की उक्ति है सखी
बिशेषोक्ति अलङ्कार है ल॰ बिशेषोक्ति जो हेत सों कारज उपजत
ऽ । नेह घटत हिय में तऊ काम दीप चित चाहि ॥३६॥

अथ कुट्टमित हाव लक्षन दोहा ।

य पिय सों रति रङ्ग मैं अङ्ग छुवत अनखाय।
त्र कुट्टमित है सोई जिय में सुख सरसाय॥३७॥

तस्योदाहरन कबित्त घनाक्षरी ।

प्यारी प्राणप्यारे सङ्ग बैठी रङ्गरावटी में
म्बन करत मुख मोरति रिसाई है । धरत सु-
हीं गले नाहीं को करति कर कुच पै परत
ऊ कौतुक मचाई है॥ अङ्क में भरत स्याम झ-
कि झँकोरि देति राते करैं नैन बैन सैन मैं
त्राई है । रचि निपुनाई रस रङ्ग सरसाई करै
लि छल छाई मन मोहित कन्हाई है ॥३८॥

ोका। इस कबित्त मे प्रौढ़ा नायिका है उक्ति सखी की है सखी प्रति
ुज्ञाअलङ्कार है लक्षन ॥ होत अनुज्ञा दोष को जब लीजै गुनमानि
हु बिपति जा पै सदा हिये चढ़त हरि आनि ॥ ३८ ॥

अथ बोधकहाव लक्षण दोहा।

समुझै संज्ञहि सों जहाँ तीय पुरुष रति रङ्ग।
ताहि सुजन जन कहत हैं बोधकहाव प्रसङ्ग॥

कबित्त।

सङ्ग मैं सखीन के बिराजति नवेली बाल आयो स्याम सखन समेति सो निहारी है। लोचन ललकि लखिबे को ललचाने महा बोलत लजाने दोऊ जाने भीर भारी है॥ छन सुखसाने पै कहा धौं मन आने कछू भेद मैं न जाने कियो कौतुक खेलारी है। कमलकली लै उर लायो है मुरारी तब प्यारी नील सारी मुखचंद पै सुधारी है॥ ३९॥

टी०। इस कवित्त मे क्रियाबिदग्धा नायिका है बोधकहाव है सूक्ष्मालङ्कार है ल०इङ्गित ते आकार ते जानै जी को बात, इत्यादि ३९

अथ हेलाहाव लक्षण दोहा।

पिय सँग मैं जहँ करति है बिबिधि ढिठाई बाल।
ताहि सुहेलाहाव करि बरनत बुद्धि बिसाल॥४०॥

तस्योदाहरणम् सवैया।

स्याम पिया गहि प्यारी प्रबीन सुकेलि के मन्दिर मों चालि आई। अङ्गन भूषन भूषित कै चुनि चुनरी चारु चुरी पहिराई॥ कंचुकी

दी बिरी कजरा हँसि सेंदुर माँग भरी मन
ाई । नारि को रूप बनाय मुरारि को आरसी
ः करि कै दरसाई ॥ ४१ ॥

ोका । इस कबित्त में प्रौढ़ा नायिका है और हेलाहाव है और का-
लिङ्ग अलङ्कार है ल० काव्यलिङ्ग जब युक्ति सों अर्थ समर्थन होय ।
कों मै जीत्यौं मदन मो हिय में शिव सोय ॥ ४१ ॥

अथ तपनहाव लच्छन दोहा ।

न सरसै जहँ ताप अति मान बियोग सँयोग ।
ाव तपन सो कहत सब बिबिधि बिलासिक लोग ॥

तस्योदाहरन सवैया ।

स्याम सों मान कियो सजनी जिय आनि
ियोग बिथा दरसी है । भूली भ्रमी बिलखानी
नों अँग अङ्ग अनङ्ग तरङ्ग रसी है ॥ प्रान-
ाया बिन चाँदनी चन्द बिलोकत बाल हिये
ारसी है । बेसुधि ऐसी परी सी परी यह ताप
ाहा तन में सरसी है ॥ ४२ ॥

टीका । इस कबित्त में नायिका मध्याप्रोषितपतिका है मानिनी है
ि सखी को सखी प्रति है और बिभावना और उपमा अलंकार है
च वा भेद ल० काहू कारन ते अबै कारज होय बिरुद्ध ॥ करत
ाहि सन्ताप यह सखी सीत कर शुद्ध ॥४२॥ ल० उपमा ॥ जेहि बिधि
ाब समता मिलै उपमा सोई जानि, इत्यादि

अथ मुग्ध हाव लच्छन दोहा ।

चन कहै तिय ज्ञान बिन सुनत लगै जहँ नीक ।
ुग्धहाव तासों कहत सुजन सुकबि करि ठीक ॥

तस्योदाहरणम् सवैया ।

कारन कौन कहौं सजनी उकसे उर आमय के अनुसारे । रूप बिलोकि न जानि परै कछु ह्वै है कहा मन सोच हमारे ॥ स्याम हकीम हैं जो समुझै तौ करौ उपचार न होंहि दुखारे । हौं बलि जाँव धरौ जिय धीर सुपीर सहैंगे बिलोकनवारे ॥ ४५ ॥

टीका । इस कबित्त में नायिका अज्ञातयोवना है । उक्ति नायका की सखी प्रति या अन्य प्रति औ मुग्धहाव है। औ असंगति अलङ्कारहै। रोग और के, पीर देखनेवाले के इससे असंगतिहै इसही को सुसिद्धा भी कहते हैं । लच्छन एकही है असंगति लच्छन दोहा । तीनि असंगति काज अरु कारज औरै ठाम । और ठौरही कीजिये और ठौर को काम ॥४५॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र मुकुतमणि रामपुराधिप रैकवार कुलकमलदिवाकर श्री गुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरबकससिंह बहादुर जूदेव की आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अस्थनी नगरनिवासी महेश्वरसुधाकरग्रन्थ विरचिते शृङ्गाररस बर्ननो नाम पंचमोस्तरङ्गः ॥ ५ ॥

अथ बियोग शृङ्गार लच्छन दोहा ।

होत दुखित अतिसै जहाँ बिरह बिवस पिय तीय ।
सो बियोग शृङ्गार कहि बरनत कबि कमनीय ॥ १ ॥
है बियोग सो पाँच बिधि कबिन कियो निरमान ।
इक पूरुब अनुराग है दूजो मान बखान ॥ २ ॥
बिप्रलंभ शृङ्गार सो तीजो कहत सुजान ।
निरस जानि द्वै भेद जे सुकबिन कियो प्रमान ॥ ३ ॥

कुन्ती माद्री पाँडु में सा परु मरन प्रसिद्ध ।
ताते बर्नन नहिं कियो मरन निरसगुनि बुद्धि ॥४॥
विरह मरण रति अन्त में करुणा रस में मानि ।
याते रस शृङ्गार में मै नहिं करयो बखानि ॥ ५ ॥

तत्र वियोग शृङ्गारस्योदाहरण सवैया ।

गज बाजि रसाल अनार घने द्रुम पै दल मैन मढ़ाई करी । कर बाल गहे वहुँ आस पलास गुलाबन गोली गढ़ाई करी ॥ बरछी लै समीर हरौ लपिकी पपिहा ह्वै नकीब बढ़ाई करी । दल साजि सखी ब्रजराज बिना ऋतुराज ने आजु चढ़ाई करी ॥ ६ ॥

सुसिद्धा ल० साधि साधि औरै मरै और भोगवै भोग । इत्यादि०
टीका इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है । नायका की उक्ति सखी प्रति है रूपकालंकार है । दूसरो भेद तद्रूप है । रूपक लच्छन दोहा । है रूपक द्वै भांति को मिलि तद्रूप अभेद । अधिक न्यून सम दुहुन के तीनि तीनि ये भेद ॥ ६ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

बनबाग विलोकि मनो हिय मे अति काम कला सरसाई करी । धुनि चात्रिक कोयल की सुनि कै कुललाज अकाज महाई करी ॥ करि कोप महा बिरहीन पै हाय अधीर समीर स-

वाई करी। ब्रजराज बिना लै समाज सखी ऋ-
तुराज ने आजु चढ़ाई करी ॥ ७ ॥

टीका। इस कबित्त में भी वही प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। बियोगशृङ्गार है। नायिका की उक्ति है। सखी प्रति बिरह निबेदन है,उत्प्रेक्षा अलंकार है ल० उत्प्रेक्षा संभावना बस्तु हेतु फल लेखि॥

अथ पूर्बानुराग लक्षन दोहा।

प्रथम मिले बिन होत जहँ लखि सुनि प्रीति अभङ्ग।
सो पूरुब अनुराग है बिरह बिकल अँग अङ्ग ॥८॥

तस्यउदाहरन सवैया।

कालिँदी तीर कदम्ब तरे हरि हेरि इतै
हँसि नेक दियो है। ता छिन ते तन ताप तपै
ततबीर न बीर सिरात हियो है॥ नेह नबीन न
स्याम मिले कलपाय हमै कल पाय लियो है।
चंचल चारु चितौनि चुभी अब चाहत प्रान
पयान कियो है ॥ ९ ॥

टीका। इस कबित्त में परकीया प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति। वियोग शृङ्गार विरह निवेदन है। वाचक उपमान लुप्तालंकार है। लक्षन ॥ बाचक धर्मरु बर्ननिय है चौथो उपमान। इक बिन द्वै बिन तीनि बिन लुप्तोपमा प्रमान ॥८॥

पुनः दोहा।

नई नारि सों नेह करि दई न देय बियोग।
जान जाय तौ जाय भल जीवन मैं बहु रोग॥१०॥

टीका। या दोहा मे प्रोषित नायक है, उक्ति नायक की है सखा

अथ मानविरह लच्छन दोहा ।

निरखि नाह को दोष जहँ नारि करै उर मान ।
पिय कौतूहल हेत जो मान बिरह सो जान ॥ ११ ॥
मान त्रिबिधि सो जानिये लघु मध्यम गुरु तौन ।
बरनत लक्षन लक्षि सब रस ग्रन्थन में जौन ॥ १२ ॥

तत्रादौ लघु मान लच्छन दोहा ।

लखत लखै तिय पीय को और नारि की ओर ।
करै रोस मन मान लघु हँसितहि रहत न थोर ॥ १३ ॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

पिय हेरत चन्द्रकला तन स्याम सुरोस जग्यो मन कामिनी के । सिर नाय मनौ सकुचाय गई मुखचन्द भयो बिन जामिनी के ॥ भरि बारि सुबारिज नैननि मैं बलिहारि निहारि कलामिनी के । हँसिकै उर लाय लियो करि प्यार न मान रह्यौ पुनि भामिनी के ॥ १४ ॥

टीका । या कवित्त मैं धीरा नायिका है, कवि की उक्ति है लघुमान है । तीसरा समालङ्कार है और उत्प्रेक्षा भी है लक्षण उत्प्रेक्षा पूर्वोक्त है । लक्षण समालङ्कार । अलङ्कार सम तीनि विधि जथा जोग को सङ्ग । नीच सङ्ग अधिरज नहीं लक्ष्मी जलजा आहि । जस हो को उद्यम कियो नीके पायो ताहि ॥ १४ ॥

अथ मध्यम मान लच्छन दोहा ।

पिय के मुख ते तिय जबै सुनै आन तिय नाम ।
करै मान मध्यम सोई मिटै सपथ सों आम ॥ १५ ॥

तस्य उदाहरन सवैया।

राजि रही सँग सेज पै राधिका नाम लियो पिय आन तिया को। सो सुनिकै सरस्यौ मन मान मनाये न मानत रोस जिया को॥ स्याम सुआनन फेरि लियो उर ज्वाल जग्यौ जनु जोर दिया को। लाय लियो लपटाय सुअङ्ग अनङ्ग-भरी तजि मान पिया को॥ १६॥

टीका। या कबित्त में मानवती नायिका है। कबि की उक्ति है। यद्वा कलहंतरिता भी है। मानी नायक भी है। मध्यम मान है। उत्प्रेक्षा लंकार है, लक्षण पूर्वोक्त है॥ १६॥

अथ गुरुमान लच्छन दोहा।

पिय को औरी नारि सों सुरति रीति सुनि जानि।
होत सोई गुरु मान है सौंह सुपापरि हानि॥१७॥

तस्य उदाहरन सवैया।

छतिया कहुँ आन तिया के लगे हरि सो सुनि मान जग्यौ सखि याके। आए मनावत मान्यौ न नेक अनेकन सोहन को करि थाके॥ स्याम सुपायन मैं परिकै कर जोरि निहोरि रहे छबि-छाके। सानभरी नहिं मान तजै तब मेल्यौ सुहार हिये मुकता के॥ १८॥

टीका। या कबित्त में गनिका मानवती नायिका है। कवि की उक्ति है। या सखी सखी प्रति है दूसरा पूर्वरूप अलंकार है॥१८॥

अथ प्रवास बिरह लच्छन दोहा ।

लहि बिदेस को बास जहँ बिरह बिकल नर नारि ।
सो प्रबास में भेद द्वै सुकबिन कह्यौ बिचारि॥१९॥
है भविष्य यक भूत बिय पिय तिय दुखद निदान।
भाविक बिछुरन हार है भूत बिकल बिछुरान॥२०॥

अथ भविष्य प्रवास बिरह यथा सवैया ।

प्रानपिया परदेस के हेत मनाय गनेस लगाय दही को । आय सुप्रेम सों लाय लियो उर माँगि बिदा सुगह्यौ कर ती को ॥ चूम्यौ सो चन्दमुखी अधरान धरा तेहिं औसर धीरजही को । नैन सों नीर प्रबाह बहै असुवान सों भीजै लिलार को टीको ॥ २१ ॥

टीका । इस कवित्त में नायिका प्रवस्यत् प्रेयसी मध्या है । उक्ति सखी ससखी सो है । और विरोधाभास अलंकार है । ल० भासै जहां बिरोध है वहै बिरोधा भास । उतत ही उतरत नहीं मनते प्रान निवास ॥ २१ ॥

पुन: घनाच्छरी ।

बैहरि बसन्त की बहैगी जब सीरी वह पीरी परि पाती तौ परैगी तरु तर पै । किंसुक अँगार से गुलाब आबवारे देखि ताब क्यौं रहैगी ताप बाढ़ैगी सुधर पै ॥ बौर भौंर भीर सों न धीर

बीर रैहै फेरि स्याम को बचाइ वा बियोगिनि को घर पै। कैसे कै रहैंगे प्राण कान्ह कामिनी के बान कसिकै हनैगो काम पुष्प कलेवर पै ॥२२॥

टीका। इस कवित्त में नायिका प्रवत्स्यत् प्रेयसो मुग्धा है। उक्ति सखी की नायक प्रति है। भविष्य बिरह है। आक्षेप अलंकार है। तृतीय भेद परदेस को गमन रोकने सों तातपर्य है। लक्षन। जहां बचन बिधि व्यक्त कै करै निषेध छपाय। सोई व्यक्त अक्षेप है कहत सुकबि समुदाय ॥ इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका सुकीया नायिका है ल० पूर्बोक्त है ॥ २२ ॥

अथ भूतप्रवास विरह यथा कबित्त।

सीरो समीर सुगंध सनो घनी कारी छटा दरसावत आवत। कोकिल कूक पपीहा पिया कहि मोर चकोर हियो तरसावत ॥ दामिन पानि कृपान लिये गर कामिनि के गहि काम गहावत। स्याम कुमार बिना सजनी अब ये बदरा बदराह बतावत ॥ २३ ॥

पुनर्यथा सवैया।

भावत भौन न मेरी भटू बिरहानल तावन सों तन हावत। गावत दादुर चातक मोर बियोग बिथा अतिसै सरसावत ॥ धावत हैं बग पाँति जमाति सों मो मन मौज मनोज जगावत।

आवत स्याम कुमार नहीं अब ये बदरा बदराह बतावत ॥ २४ ॥

टीका । इस कबित्त में मध्या प्रोषितपतिका नायिका है । उक्ति नायिका की है सखी प्रति । औ बिनोक्ति अलकार है । लच्छन दोहा । है बिनोक्ति द्वै भांति की प्रस्तुति कछु बिन छीन । अरु सोभा अधि की लहै प्रस्तुत कछु यक हीन ॥ २४ ॥

पुनर्यथा ।

ऊधव जोग लै आये इहाँ है अजोग महा तनकौ न समाई । कूबरी के ढिग मै उनकी मतिमन्द भई जो हमै अजमाई ॥ मोहनि मूरति मोहन की सु रमै इन नैनन मे इत आई । स्याम बसे बसु जाम हिये कहु काके बियोग बिभूति रमाई ॥ २५ ॥

टीका । इस कबित्त में प्रौढ़ा प्रोषित पतिका नायिका है उक्ति नायिका की सखी प्रति । औ बिसेषोक्ति अलंकार है । तथा बिरोधाभास भी है । लच्छन दोहा । बिसेषोक्ति जो हेतु सों कारज उपजै नाहिं । नेहु घटत हिय नहिं जऊ काम दीप चित माहिं ॥ बिरोधाभास ल० । भासै जहां बिरोध सो वहै बिरोधाभास ॥ २५ ॥

पुनर्यथा ।

अंजन जे इन नैनन के सो निरंजन ब्रह्म बने उत जाई । रास बिलास रच्यौ बृज मै अब जोग हमै करि हेत पठाई ॥ ऊधव सों सखि का कहिये जिनके अनरूप न रूप लखाई । स्याम

बसे बसु जाम हिये कहु काके बियोग बिभूति रमाई ॥ २६ ॥

टीका। इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषित पतिका परकीया नायिका है उक्ति नायिका की है। सखी प्रति। अथवा उधव प्रति है। बिसेषोक्ति अलकार है। तथा बिरोधाभास अलंकार है। लच्छन दोहा। बिसेषोक्ति जो हेतु सों कारज उपजै नाहिँ। नेह घटत हिय में तऊ कामदीप चित चाहि॥ बिरोधाभास लच्छन। भासै जहां बिरोध सों वहै बिरोधाभास ॥ २६ ॥

अथ नये प्रवास को उदाहरण—सवैया।

कूबरी के हरि रंग रँगे हमतौ अब हैं मरजी मरजी की। आपने भागि की भूल भटू कहनूति सही करजी करजी की॥ प्रीति कियो हम तो उन स्याम सों जानती ना हरजी हरजी की। बेगरजी गरजी न लखै गति जानत है गरजी गरजी की॥ २७॥

टीका। इस कवित्त में परकीया प्रोषिता नायिका है। उक्ति नायिका को है सखी प्रति। असुति निन्दा अलंकार है दीपकावृति भी है। लच्छन यथा दोहा। व्याज निन्द असुति बिषे निन्दा औरौ होय। साधु साधु सखि मो लिये सहे दन्त नख दोय॥ २७॥

पुनर्यथा।

चोट जगी बिरहानल की तुमको तो परी हरदी हरदी की। स्याम जू प्राणपियारे बिना तुम माँहि चढ़ी जरदी जरदी की॥ काम तिया उर जाहि लगी उनके न लगे सरदी सरदी की। बेदरदी दरदी न लखै गति जानत है दरदी दरदी की॥ २८॥

टीका । इस कवित्त में परकीया प्रोषित पतिका नायिका है । उक्ति नायिका की है सखीप्रति । और दीपका अवृति अलंकार है लक्षण दीपक अवृति तीनि बिधि अवृति पद की होय । पुनि अवृति है अर्थ की दूजी कहियत सोय ॥ २८ ॥

पुनर्यथा ।

हमको अपनाय सुनाय सुबैन न स्याम उतै सुर-काज करी । सँग कूबरी के करि कामकला ब्रजबालन की सुधि आजु करी ॥ लिखि भेज्यौ अजोग न योग इतै को बियोग मैं जोग समाज करी । अब ऊधो कहा कहिये तिनको जिन बाँह गह्यौ किन लाज करी ॥ २९ ॥

टीका । इस कवित्त में परकीया प्रोषित पतिका नायिका है । उक्ति गोपियों की है ऊधव प्रति । अस्तुति निन्दा अलंकार है । ल० दोहा । व्याज निन्द अस्तुति बिषे औरै निन्दा होय । साधु साधु सखि मो लिये सेद दन्त नख दोय ॥ २८ ॥

पुनर्यथा ।

तबतौ नहिं नेकहु बार लगी जब ग्राह गहे गज ध्यान धरी। पुनि द्रोपदी दौरि को सुनि दुतै दुरजोधन को धन धाम हरी ॥ अरु पारथ को प्रन पूर कियो पुरषारथ क्यौँ अब जेर परी । ब्रज-लालन बालन बेर अहा फिरि बाँह गह्यौ किन लाज करी ॥ ३० ॥

टीका । इस कवित्त में भी परकीया प्रोषित पतिका नायिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति । व्याजस्तुति निन्दा अलंकार है । लक्षन पूर्वोक्त हो है । इस कवित्त में नायिका अलंकार पूर्वोक्त है ॥३०॥

पुनर्यथा।

अति सील सुजाति सखावत साहिबी संचित कै धन धाम धरी। अरु त्यौं सुख साज समाज सबै सुखमा केहि स्याम समान करी॥ श्रुति पन्थन सन्तन सेय सदाँ सिखि ऊधव काम कला सिगरी। जग मैं जनम्यौ हरि ह्वै केहि काज जो बाँह गह्यौ किन लाज करी॥३१॥

टीका। इस कबित्त में भी नायिका अलङ्कार पूर्वोक्तही है परकीया प्रोषित पतिका नायिका व्याजस्तुति निंदा अलङ्कार, नायका की उ०।

पुनर्यथा।

बर नारिन की नहिं नेक सुनै व्यभिचारिन हीं की ओ ना तकही। अरु साधुन को सुख देत नहीं गनिका गुन मैं अति रीझ रही॥ कलि के किल कौतुक स्याम सुने गुर लोगन की नहिं गैल गही। मसलै असलै अब होत कहीं खर रोवत खोट बिकात सही॥ ३२॥

टीका। इस कबित्त में प्रौढ़ा खडित नायिका है नायका की उक्ति नायक सों है लोकोक्ति अलङ्कार औ तुल्ययोगिता भी है लच्छन बर्न्य अबर्न्य को समान्य धर्म ते तुल्ययागितालोकोक्ति लच्छन। लोकोक्ती कछु बचन में लीजें लोक प्रबाद। नैन मूँदि षटमास लौं सहिहौं बिरह बिषाद॥ ३२॥

अन्यच्च।

परि प्रेम के जाल सबै बिलखात सुजात

नहीं कछु बात कही। धरि धीरज गोपसुता कबि स्याम कही कब लौं करि छाम रही ॥ हरि जोग जो ऊधो बियोग में देत तौ कूबरी भोग अजोग नहीं । करिकै कर आनन पैयौं कही खर रोवत खोट बिकात सही ॥ ३३ ॥

टोका। इस कवित्त में परकीया प्रोषितपतिका नायका है नायका की उक्ति है ऊधव प्रति, लोकोक्ति अलङ्कार है और तुल्ययोगिता भी है तुल्ययोगिता लच्छन दोहा । धर्म्म एक बरन्यौ जहाँ बर्न्यबर्न्य को होय। तुल्ययोगिता प्रथम तहँ कहत सयाने लोय॥ ३२ ॥

अथ बियोग शृङ्गार दसा बर्नन दोहा ।

है बियोग शृङ्गार की दसा सु नवहि प्रकार।
अभिलाषा गुन कथन अरु चिन्ता चित्त बिचार ॥
सुस्मृति कहत प्रलाप पुनि उद्वेगहु उन्माद ।
जड़ता व्याधि बखान हीं सुजन सुमति-मरयाद ॥

अथ अभिलाष दशा लच्छन दोहा।

तीय पुरुष मन में करैं मिलिबे की बहु चाह ।
तेहिँ अभिलाख बखानहीं जे प्रबीन कबिनाह ॥

अथ अभिलाख दसा को उदाहरन यथा कवित्त।

पायहैं जीवन जीवन के ब्रजजीवन जीवन को गहि लायहैं । लाय हैं गोल कपोल गुलाल सुबीर अबीर के रङ्ग रँगाय हैं ॥ गाय हैं राग धमारिन मे कुल लाज समाज सबै बि-

सराय हैं । राय हैं मेरी सुनौ सजनी मिलै स्याम पिया मो हिये सुख पायँहै ॥ ३७ ॥

टीका । इस कवित्त में अभिलाष दसा है । औ ऊढ़ा नायिका है । औ नायिका की उक्ति है सखी प्रति । एकावली अरु यमकालंकार है । लक्षन दोहा । ग्रहित मुक्त पद रीति जहँ एकावलि सो मानि । दृग श्रुति लौं श्रुति बाहु लौं बाहु जंघ लौं जानि ॥

पुनर्यथा ।

साजे सुअङ्ग अनङ्गभरी चख चंचल चारु चितौनि ललामै । गोल कपोल मनौ मुखचन्द सुमन्द करै सुर चन्दकला मै ॥ बोल सुबोल अमोल महा रति मै रति को करि लेति छला मै । भावै नहीं सुरलोक भला नवला जो मिलै असि केलि कला मै ॥ ३८ ॥

टीका । इस कवित्त में अभिलाष दसा है । नायक की उक्ति है । सखा प्रति । उपपति प्रोषित नायक है, सुमिरन अलंकार है । लक्षन दोहा । सुमिरन भ्रम सन्देह ये लक्षन नाम प्रकास ॥ इत्यादि ॥

पुनर्यथा ।

मिलिहैँ कब प्राणपिया सजनी निज ताप हिये की बुझाइहौं मैँ । सुचि सुन्दर स्याम सुअङ्ग अनूप बिलोकि महा मुद छाइहौं मैँ ॥ मुसकानि भरी मनमोहन की वह मूरति नैन बसाइहौं मैँ । कबधौं ब्रजजीवन के सँग मै निज जीवन को फल पाइहौं मैँ ॥ ३९ ॥

टीका । इस कवित्त में भी अभिलाष दसा है । प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति । सुमिरन अलंकार है । लच्छन दोहा । सुमिरन जो सुमिरन करै दम्पति लहि तन ताप । तासो सुमिरन कहत हैं जिन की कविता थाप ॥

अथ गुन कथन लच्छन दोहा ।

बिरह बिवस तिय पिय जहाँ गुन गन कथै अनेक ।
ताहि बखानत गुन कथन जिनके बिमल बिबेक ॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

सिरमोर-पखा मुख बाँसुरिया बनमाल हिये लसै मोज ही की । मुसक्यानि बिलोकनि त्यों तिरछी लखि होत सँजोग के ओज ही की ॥ गति मन्द गयन्द की क्यौं कहि जाय सुभाय सुसीलता चोज ही की । कबि स्याम जू स्याम लख्यौ वहि रोज हिनोज है मौज मनोज ही की ॥

टीका । इस कबित्त में नायिका जढ़ा है । नायिका की उक्ति सखी प्रति और गुन कथन दसा है । पंचम प्रतीप अलंकार है औ सुमिरन अलंकार भी है । प्रतीप लच्छन । वृथा होय उपमान जब बर्ननीय लखि सार । इग आगे कछु मगन ये पच प्रतीप प्रकार ॥ सुमिरन ल० पूर्वोक्त है

अथ चिन्ता दशा लच्छन दोहा ।

मन में बढ़ै बिकल्प अति मति थिर होय न नेक ।
चिंता तासों कहत हैं जे कबि बिमल बिबेक ॥

तस्य उदाहरन घनाक्षरी ।

सजी चतुरङ्ग चारु चारयो ओर घोर अति नभ में सुजोर धुरवान की मढ़ाई है । बैसई छटा

के चहुँओर मोर सोर करै वैसई दुसहदाव दा-
मिनी बढ़ाई है ॥ कोयल की बानी स्याम कौन
पै बखानी जाय तापै नेकमानी मेरु मेढुक प-
ढ़ाई है। आये ना कन्हाई घर पातिहू न पाई
अब मोहि को बचाई बरसात की चढ़ाई है॥

टीका। इस कबित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिकानायिका है नायिका को युक्ति सखो प्रति है कविनिबद्ध बक्ता को अबिवचित ध्वनि करिकै बरषा और चतुरङ्ग फौज को रूपक सों समाभेद रूपक अलङ्कार भयो रूपक लच्छन दोहा। है रूपक है भांति को मिलि तद्रूप अभेद। अधिक न्यून सम दुहुन के तीनि तीनि ये भेद॥ यहाँ समभेद रूपक है।

अथ स्मृति लच्छन दोहा।

जेहिलखिसुनिसुधिहोति हिय प्रीतिपाछिलीकेर।
अस्मृति ताहि बखानहीं रसिक ग्रन्थ मत हेरि॥

अथ स्मृति को उदाहरण सवैया।

खंजन की छबि छीनि सदा सखि अंजन हूं
में नहीं छलि जात हैं। त्यों मदगंजन कंज न-
वीनन मीनन की उपमा दलि जात हैं॥ क्यों
समुझाइये को समुझै बर वारि लौं बारि भरे
झलि जात हैं। जैसई स्याम लखैं जेहि ओर
सो वैसई नैन अजौं चलि जात हैं॥४५॥

टीका। इस कबित्त में नायिकापरकीयाप्रोषितपतिका है नायका की उक्ति है सखी प्रति सुमिरन अलङ्कार है और भाविक अलंकार भी है लच्छन। सदृस बस्तु सुनि देखिकै सुमिरन कीन्हो होय। अलङ्कारअस्मृति तहाँ बरन्यो सुखनि समोय॥ भाविक लच्छन। भाविक

भूत भविष्य जो परतछ होय बनाय । बृन्दावन में आज वह लीला देखी जाय ॥ ४३ ॥

अथ प्रलाप लच्छन दोहा ।

बचन अनर्थक कहत जहँ बिरही जन कछु पेखि।
सो प्रलाप कबिबर कहत जिनकी बुद्धि बिशेषि ॥

तस्य उदाहरन घनाछरी ।

स्याम बिन सखिन समेति बन कुंज पेखि बिरह बिचैन बैन बोलति बिहाल है । कहुं कचनार कान्ह कारे को निहारे कहूं नारि केर बेर क्यों न बोलत उताल है॥ पनस पलास आस देत तौ निरास जानि नाम है अशोक शोकदायक कमाल है । साल औ रसालन तें बूझति रसालन को भुजन पसारि बाल भेंटति तमाल है ॥ ४६ ॥

टीका । इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है । कवि की उक्ति है । यद्वा सखी की उक्ति है । प्रलाप दसा है । भ्रमालंकार है । बिरोधाभास भी है । ल० पूर्वोक्त है ।

अथ उद्वेग लच्छन दोहा ।

व्याकुलता अति होय उर बिरह बिबस सुख जाय।
कछु सोहाय नहिं मन लगै सो उद्वेग गनाय॥

तस्योदाहरन सवैया ।

बैठी बिसूरति मूरति सी हिय पूरति सूरति नन्दलला की। आँखिन ते बरसै अँसुआ सरसै

तन ज्वाल महा बिरहा की ॥ ता छिन ते कछु बोलै न डोलै सुनै श्रुति सों न कहै को कहा की। थाकी मनोज बिथा की अहा यह छैल की जा छिन ते छबि छाकी ॥ ४७ ॥

टीका। इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। कबि की उक्ति है। अथवा सखी की उक्ति है। सखी सों बिकलता उद्वेग दशा है। उपमेय लुप्तालंकार है।

अथ उन्माद लक्षन दोहा।

करै अचार बिचार बिन वृथा बकै बहु बैन।
कहत ताहि उन्माद सब हँसि रोवै दिन रैन ॥

उन्माद यथा घनाक्षरी।

बिरह बिथा सों बाल बैठी ती निकुंजन में बिहँसै बिलोकै बकै बिकल बिचारी है। आप ही सो आपै छिन रोवै पुनि गावै चकी मद मैं छकी सी मनौ मैन मतवारी है। थकी सी जकी सी बिकी बेसुधि सी दीसी स्याम बाम बिधि ह्वै गो छाम छबि मैं निहारी है। प्यारी प्रेम पूरति बिसूरति बिहारी मन मूरति तिहारी तन सूरति बिसारी है ॥ ४७ ॥

टीका। इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। सखी की उक्ति है नायक प्रति, बिरहनिवेदन उन्माद दसा है। समुच्चय अलंकार है। और परजाय भी है। दोय समुच्चय भाव बहु कहुं उपजै इक संग। एक काज चाहै कयौ ह्वै अनेक इक अंग ॥

अथ जड़ता लच्छन दोहा ।

बिरह बिथा ते होत जहँ तन मन अचल समान ।
जड़ता ताहि बखानहीं कोबिद कबि मतिमान ॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

खोलति नैन न बोलति बैन न डोलत अङ्ग अनङ्ग अतंक मे । सोवति रैन न चैन लहै सु दहै बिरहागि महान मयंक मे ॥ स्याम पिया बिन हाय दसा यह याकी बिलोकत होति स-संक मैं । धीरी परी जनु साँस सखी तन पीरी परी सी परी परजंक मे ॥ ५१ ॥

टीका । इस कबित्त में भो वही प्रोषितपतिका नायिका है । उक्ति सखो कीहै सखी प्रति बिरह निवेदन है । जड़ता दसा है । उपमेय लुप्ता है । लच्छन पूर्वोक्त है ।

अथ व्याधि दसा लच्छन दोहा ।

बिरह बिबस अति छीन तन तिय पिय को जहँ होय ।
व्याधि बखानत ताहि कबि ग्रन्थन को मत जोय ॥

तस्य उदाहरन घनाच्छरी ।

कुंजन में काल्हि कहूँ बातन बिलोक्यो लाल तबते बिहाल बाल बोलति बिचैन है । खोलति न नैन सुधि नेक तन पै न लख्यो प्यारी उर ऐन पै सुमैन सर पैन है ॥ आह की अवाज मुख आवति दराज आज ताप सरसाय दुख

भाषत बनै न है । व्याधि विरहागि जागि जोवति तिहारी बाट रोवति बिहारी छिन सोवति न रनै है ॥ ५३ ॥

टीका । इस कबित्त में परकीया प्रोषितपतिका नायिका है । उत्तमा दूती की उक्ति है नायक प्रति बिरहनिवेदन है । व्याधि दसा है बियोग शृङ्गार है ओरहनो है नायक सों । समासोक्ति अलङ्कार है । समासोक्ति प्रस्तुत फुरे ऽप्रस्तुति बरनन माझ । कुमुदिनि हूं प्रफुलित भई देखि सुधानिधि साँझ ॥ ५३ ॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र मुकुटमणि रामपुराधीप रैकवार कुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरबकशसिंह बहादुर जूदेव की आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अखनौनगर निवासी महेश्वरसुधाकरग्रन्थविरचिते नाम षष्टमस्तरङ्गः ॥ ६ ॥

अथ दूत बर्नन तत्र दूती लच्छन दोहा ।

मन प्रबीन छल सों करै कारज रसिकन केर ।
सो दूती जिय जानिये बचन चतुरता हेर ॥ ५४ ॥

दूती भेद ।

सो है तीनि प्रकार की उत्तम मध्यम जानि ।
अधमा हूँ है मानिये कहत सुमति अनुमानि ॥ ५५ ॥

अथ उत्तमा दूती लच्छन दोहा ।

मीठे बचन सुनाय कै साधै काज महान ।
सो उत्तम दूती अहै भाषत सकल सुजान ॥ ५६ ॥

तस्या उदाहरन सवैया ।

आयसु रावरे को धरि सीस मैं काज सुधारिहौं नन्ददुलारे । नेक रहौ दिन द्वै चुपचाप सो आप चली मिलि सङ्ग तिहारे ॥ जाय समीप मैं ऐसो करौं सोई होयगो जो चित चोप तिहारे । स्याम सुप्रीति लगाय भली बिधि राधिकै ल्याय मिलायहौं प्यारे ॥ ५७ ॥

टीका । या कबित्त में उत्तमा दूती है । सरल बचन कहि धीरज देती है । प्रहर्षन अलङ्कार को तीसरा भेद है लच्छन यथा दोहा । जतन सोध तै सिद्धि की बस्तु जहां मिलि जाय । तहां प्रहर्षण तीसरो कहत सुकबि समुदाय ॥ ५७ ॥

पुनर्यथा पनिहारिनी दूती ।

आजु गई यमुनाजल को बिधि के बस मोहिं बिलोकि बिहारी । आय मिले मग रोकि कह्यौ तुम हौ केहि के ढिग की बलिहारी ॥ स्याम सुनाम तिहारो कह्यौं सुनि ह्वै गये बावरे से मति हारी । ज्यौंही चलौं बिनवै तबहीं सुनिले सुनिले सुनिले पनिहारी ॥ ५८ ॥

टीका । इस कबित्त में पनिहारिनि दूती है । श्री कृष्णचन्द जी को प्रेम श्री राधिका जी सों दरसाय परस्पर प्रीति सरसाय रुचि उपजाती है । व्याज सो कार्य साधती है ताते पर्यायोक्ति अलङ्कार दूसरा भेद है लच्छन दोहा । पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात । मिसु करि कारज साधिये जोहै चितै सोहात ॥ ५८ ॥

यथा कबित्त ।

तारागन सखिनसमाज नभमण्डल तें उदित अखण्ड छाये पुंज सरस्यौ परै । ह्वै रह्यौ चकोर मन मोर वहि ओर स्याम घन बरजोर जनु बारि बरस्यौ परै ॥ रतन अथोर अङ्ग बसन अजोर रतिरङ्ग के उमङ्ग मैन रैन सरस्यौ परै । आज ब्रजराज राज राधे सुख मुख साज देखिये दराज द्विजराज दरस्यौ परै ॥ ५९ ॥

टीका । नायिका को रूप बरनन करती है नायक सों, उत्तमा दूती है । रूपक अलङ्कार सम भेद है ॥ ५९ ॥

पुनर्यथा कबित्त ।

अमल कमल सम लोचन सजीले चारु अजब रसीले मैनकान के कहौं किमी । मृदुल मधूक से कपोल गोल गोल लसैं बोलनि अमोल अधरान में सुधा तिमी ॥ मन्द मुसकानि बानि परम सुजानि जानि प्यारी तुम्हें आनिहौं मनोज मौज है जिमी । रस बरसाय स्याम हँसि उर लाय लीन्हौ चन्द छबि आनन सुदन्त दुति दाड़िमी ॥ ६० ॥

टीका इस कबित्त में उत्तमा दूती है । श्रीकृष्णचन्द जी को रुचि उपजातो है । लुप्तोपमा अलङ्कार है । औ प्रथम भेद प्रहर्षण भी है । यथा दोहा । धर्मरु बाचक है बहुरि उपमानो उपमेय । यक द्वै त्रै बिन है तहां लुप्तोपमा सुगेय ॥ प्रथम प्रहर्षण यथा दोहा । मन बांछित फल सिद्धि जहँ जतन बिना ही होय । सोई प्रहर्षन प्रथम यह कहत सयाने लोय ॥ ६० ॥

पुनर्यथा सवैया।

आनन अम्बुज सों अनुमानि मलिन्द रहैं भुकि झूमि थलीन मै। जागै छटा छनजोति की अङ्ग उमङ्ग लगै घनस्याम गलीन मै॥ ताब न नेक रही महताब मै आब कहा है गुलाब कलीन मै। रूप रसीली लसै वह लाल बिसाल बनी बर बाल अलीन मै॥ ६१॥

पुनः।

राधिका को सखि साजि सिँगार दियो नख तें सिष लौं रुचि बारे। भूपन भूषित अङ्गन मै जनु दामिनी सी दरसै पिय प्यारे॥ स्याम सुकेसन मोतिन माँग लसैं पट त्यौँ अतिहीं छबि धारे। देखत हीं मनमोहन मोहत मानौ मिले तम तोम मैँ तारे॥ ६२॥

टीका। इस कवित्त मे दूती उत्तमा है रूप सौन्दर्य्य को बरनन करि नायिका को नायक को रुचि उपजाती है। वस्तु उत्प्रेक्षालङ्कार है॥ ६२॥

पुनः।

जाके अनूपम अङ्ग लसैं सुअनङ्ग छटा की महा छबि छाजै। पीन पयोधर त्यौँ कटि छीन बिभूषन अम्बर मै रुचि राजै॥ बोल अमोल सुधा अधरान प्रभान के पुंजन कुंजन साजै।

लाल लखौ चलि हाल उतै है मसाल मनौ बर बाल बिराजै ॥ ६३ ॥

टीका। इस कबित्त में दूती की उक्ति नायक प्रति है। उत्तमा दूती है नायक को रुचि उपजाती है। उत्प्रेक्षा अलंकार है । लक्षन यथा दोहा। तिय आनन पै अलक इक छूटि रही छबि छाय। मनौ सुधाधर मै सुधा पीवत अहि सिसु आय ॥ ६३ ॥

अथ मध्यमा दूती लक्षन दोहा।

कछु मीठे कछु कटुबचन कहै अगम दरसाय।
सो दूती मध्यम अहै भेद कह्यौ कबिराय ॥६४॥

तस्या उदाहरन सवैया।

नैनन की ह्वै रही यह बानि मनौ घन सावन के झरते हैं। ऊरध स्वास उठै उर ते गर ते फिरि फेरि उरै धरते हैं ॥ सैनन हीं समुझाय कहैं सुनि बैन नहीं श्रुति लौं परते हैं । राधिके तेरे बियोग सों स्याम समाधि को काम कियो करते हैं ॥ ६५ ॥

टीका। इस कबित में मध्यमा दूती है। उक्ति दूती को है। नायिका प्रति, नायक को बिरहनिवेदन करती है । नायिका सो नायकबिरह है। हेतु गम्य उत्प्रेक्षा अलंकार है। लक्षन दोहा। मृदुल मनोहर बरन बर निरखि रही हौं दंग। चप्यौ चरन चूरन मनौ ताते राते रंग ॥

पुनः बजाजिनि दूती घनाक्षरी।

मंजु मखमल सी अमोल गुलबदनवारी रति लखि हारी हिये साँची कै पतीजिये। करे बात

ही में जी में आवति उसास स्याम तास बादले मे क्यौं नजर-कसी कीजिये ॥ फुलवर सेज पै परी सी परी पीरी तन सारी निसि रोवत न सोवत सुनीजिये । लीजिये सुजस ब्रजराज महाराज अब मार कीन छीन वाहि नैन-सुख दीजिये ॥ ६६ ॥

टीका । इस कबित्त में बजाजिनि दूती है । दूती की उक्ति है । श्रीकृष्णचन्द्र प्रति । नायिका को बिहरनिवेदन करती है । स्लेषालंकार है दूसरा भेद है । लच्छन दोहा । स्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक सब्द में होत । होय न पूरन नेह बिन दीपक बदन उदोत ॥ सिर्फ एक पद ते मानी नायक है ॥ ६६ ॥

पुनर्यथा ।

मल मल कर तन जेब जिय जेर भई डोरिया सुप्रेम की बनाय बस कीजिये । बात ना बनात कहि जात ना जनात स्याम जाली बाफँदा की कम ख्वाब मै सुनीजिये ॥ गोरी गुलबदन सु जरदा परी सी परी सोक मीच बीच ते उबारि जस लीजिये । येहो ब्रजराज राज राजन के महाराज मारकीन छीन वाहि नैन सुख दीजिये ॥ ६७ ॥

टीका । इस कबित्त में भी वही बजाजिनि दूती है । मध्यमा दूती की उक्ति है । श्रीकृष्णचन्द्र प्रति बिरहनिवेदन करती है । स्लेष अलंकार है । लच्छन । अस्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक सब्द में होत । इत्यादि मानी नायक है ॥ ६७ ॥

अथ अधमा दूती लच्छन दोहा ।

बचन कटुक ही जो कहै तिय पिय के ढिग माँहि ।
सो अधमा दूती कहत मनमै भै कछु नाहिं ॥६८॥

तद्यथा घनाच्छरी ।

मेवन की पाँती लखे अति अनखातीं हिये अँतर सुगन्ध रङ्ग अङ्गन लगाती हैं । धरत सुपग पुहमी मै अकुलातीं मनौ हार बार-भारन सौं लङ्क लचि जाती हैं ॥ स्याम सुकमार ती सो धारतीं सुजोग तन मन को सँभारतीं न सुख सरसाती हैं । तन पियराती पाती रावरी न पाती जे न खाती नासपाती ते बनासपाती खाती हैं ॥

टीका । इस कबित्त में अधमा दूती है । नायक से नायकान को बिरहनिबेदन करती है । और दच्छिन नायक है । यथा । बहु नारिन सो प्रीति सम ताको दच्छिन जानि । इत्यादि । और पर्यायोक्ति अलंकार है। लच्छन । है पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात । मिसु करि कारज साधिये जोहै चितै सोहात ॥ ६९ ॥

पुनर्यथा ।

अङ्ग अङ्ग सुखद अनङ्ग रङ्गवारी घनी स्याम रङ्ग सुखमा समेति पुरवाई है । अम्बर बिचित्र चारु चमक तड़ित रङ्ग सुछबि निहारे बिन व्याधि अधिकाई है ॥ हारे हैं उपाय कै हकीम हूँ अनेक भाँति घटति न कैसहूँ कै बाढ़ति स-

वाई है । येहो व्रजराज राज दीजिये दरस आय आप की अवाई बिरहागि की दवाई है ॥७०॥

टीका । इस कवित्त में भी मध्यमा दूती है । और पत्र द्वारा या दूती द्वारा करि कै बिरहनिवेदन है । तातपर्य यह कि बोलाने का सूचित करती है । दवाई अवाई के रूपक से स्लेषालंकार है, लच्छन । स्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक सब्द मे होत । इत्यादि ॥ ७० ॥

इति मध्यमा दूती अथ अधमा दूती लच्छन दोहा ।

बचन कटुक ही जो कहै तिय पिय के ढिग माँहि ।
सो अधमा दूती कहत मन मै भय कछु नाहिं ॥७१॥

तस्या उदाहरन सवैया ।

कुंजन ते कढ़ि आवत स्याम सुराधिका आजु लख्यो कहि प्यारे । भौंह कमान चढ़ाय चितै मुसकाय सुनैनन के सर मारे ॥ देह मे नेक सँभार रह्यो नहिं जात कहे यह बात पुकारे । जागिहै जीहै तो जीहैं सबै न तो पीहैं बिषै वृषभान के द्वारे ॥ ७२ ॥

टीका । इस कबित्त मे अधमा दूती है । नायक श्रीकृष्णचन्द की दसा देखि बिरहनिवेदन करै है । और चेटक सखा भी हो सक्ता है । और संभावनालंकार है । लच्छन । जो यों होतो यों कहत संभावना बिचार । बक्ता होतो सेस सों लहतो तौ गुन पार ॥ ७२ ॥

पुनर्यथा ।

हारे उपाय अनेकन कै हम आजु उराहनो देन सिधारे । नैनन के सर स्याम हने पुनि तैं मृगनैनिन नेक निहारे ॥ घायल से वै परे तब

ते सब ते येहि औंसर जात पुकारे । जागिहैं जीहैं तौ जीहैं सबै न तो पीहैं बिषै वृषभान के द्वारे ॥ ७३

टीका। इस कवित्त में भी वही पूर्वोक्त है। अधमा दूती है उराहनो विरहनिवेदन है। और घायल पद से पूर्णोपमालंकार है। लक्षन दोहा। बाचक है अरु धर्म जहँ उपमेया उपमान। तहं पूरण उपमा कहत उपमा साहस जान ॥ ७३ ॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधीप रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरबकशसिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अखनौनगर निवासो महेश्वरसुधाकरग्रन्थबिरचिते बियोगशृङ्गारबर्ननो नाम स मस्तरङ्गः ॥ ७ ॥

अथ षटऋतु बर्ननम् तत्रादौ बसन्तऋतु बर्नन दोहा ।

सुमन सुगन्ध समीर मधु अलि किसलय तरु झार।
नृत्य राग पिकरव सु बन मृदु मंजरी बिहार ॥१॥

यथा सवैया ।

पात नये उलहे तरु माँहि बिलोकत प्रान पयान करन्त हैं। तैसे पलास की डारैं अँगार सी मानौं करैं बिरहीन को अन्त है ॥ कोकिल कूक उठै हिय हूक सी स्याम जू आयो नहीं घर कन्त है। देखु सखी ऋतुराज कहाइ कै आजु भयो यह बैरी बसन्त है ॥ २ ॥

टीका। इस कवित्त में मध्या प्रोषितपतिका नायिका है नायिका की उक्ति है सखी प्रति औ लुप्तोपमालंकार है। बाचक और धर्म-लुप्ता है। लच्छन। बाचक धर्मरु बरननौ है चौथो उपमान। इक बिन द्वै बिन तीन बिन लुप्तोपमा प्रमान॥ २॥

पुनर्यथा घनाक्षरी।

लागै हिय हूक सी लखे ये द्रुम पात नये जागै है मनोज व्याधि लाज अवराधि कै। बौर भौंर भीर सों न धीर बीर होत नेक बोलै काक-पाली या कुचाली धुनि नाधि कै॥ तेई सुखदाई तब जाई बन माँझ साँझ ओई दुखदाई भे प-लास फूल आधि कै। स्याम सों कहत कोई कीजै कौन ततहाय अन्त कीन चाहत बसन्त बैर साधि कै॥ ३॥

टीका। इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति, ऋतुराज ह्वै कै बैरी भयो। तातै पंचम बिभावना अलङ्कार है। लच्छन यथा दोहा। कारन तै प्रगटै जहाँ कारज महा बिरुद्ध। तहँ पाँचईं बिभावना कहत भरत मतशुद्ध॥ ३॥

अपरंच सवैया।

बौरे रसाल बिसाल बने सुअलीगन की अ-बली बिलसन्ती। लाल नये दल फूल पलास लखे मन काके न काम कसन्ती॥ स्याम सु-कोकिल की धुनि को सुनि माननी मान की

होति हसन्ती। प्यारे की ओर निहारिये बेगि बिचारिये आई बहार बसन्ती॥ ४॥

टीका। इस कवित्त में मानिनी नायिका है। सखी की उक्ति है नायिका प्रति, उद्दीपन कराय मान छोड़ावती है। उद्दीपन वस्तुन को बर्नन करि बसन्त के मिसु भय दर्शाय मिसु सो कारज साधन करती है। याते पर्यायोक्ति अलङ्कार है। लच्छन। पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सो बात। मिसु करि कारज साधिये जोहै हिये सोहात॥ ४॥

पुनर्यथा।

सीतल मन्द सुगन्ध समीर सरीर मैं काम कला सरसन्ती। कुंजन में लतिका लपटाय बियोगिन के हियरे तरसन्ती॥ त्यों कचनार अनार पलास की डारन मैं चिनगी दरसन्ती। स्याम पियारे तिहारेई सङ्ग मैं नीकी लगी ये बहार बसन्ती॥ ५॥

टीका। इस कवित्त में नायिका प्रौढ़ा प्रवत्स्यतपतिका है। नायिका की उक्ति है नायक प्रति, गमन बरायो चाहती है। आक्षेपा अलङ्कार को तीसरो भेद है। लच्छन यथा दोहा। दुरै निषेध जो बिधि बचन लच्छन तीज्यो लेखि॥ हौं नहिं दूती अगिनि ते तिय तन ताप बिशेषि॥ ५॥

अथ ग्रीषमऋतु लच्छन दोहा।

सुथल पवन पानी गरम तृष्ना मृग रवि-ताप।
सुखद सीत ग्रीषम सबहि सारँग राग अलाप॥६॥

तद्यथा घनाक्षरी।

चन्द की छटा की छटा मन्दिर बनो है चारु

संचित गुलाब आब केवरे धरे रहैं । खासे खसखाने तर तर तरखाने भले बिजन बिचित्र पौन गौन को करे रहैं ॥ और है कपूर चूर अँतर सुगन्ध अङ्ग स्यामा स्याम रङ्ग में अमेज ह्वै हरे रहैं । ग्रीषम झरफ जोर जङ्गल सोहात नहीं संदल लगाये लोग अन्दर परे रहैं ॥ ७ ॥

टीका । इस कबित्त में कबि निबद्ध स्वतःसंभवी ग्रीष्म सम्पति चरित बर्नन करि ग्रीष्मऋतु है । औ उदात अलंकार भयो । लच्छन यथा । उपलच्छनु दै सोधिये अधिकारी सो उदात । तुम जाके बसि होत हौ सुनै तनक सी बात ॥ ७ ॥

पुनर्यथा ।

ग्रीषम की भीषम तपनि सों तपत अङ्ग सीना ह्वै पसीना जोर सोर को करे रहैं । सीरे उपचारे जो करौं तौ जनु छार होत व्यजन बयारि मे न स्याम जी हरे रहैं ॥ अमल सुबास आस पास ना सोहात हाय बाला बिन सकल मसाला ये धरे रहैं । बरफ उसीर घनसार सो न मङ्गल है संदल लगाये तऊ अन्दर परे रहैं ॥८॥

टीका । इस कबित्त में प्रोषित नायक है उक्ति नायक की है सखा प्रति ग्रीषमऋतु में बिरही व्याकुलता से कहत है कि बरफ उसीर खस घनसार कपूर अन्य सुगन्ध बस्तु ते आनन्द नहीं है नसन्दल (चन्दन) से न अन्दर (भीतर) रहने में और बिनोक्ति अलंकार को प्रथम भेद भयो

लच्छन यथा दोहा। है बिनोक्ति द्वै भाँति की प्रस्तुत कछु इक छीन। अरु सोभा अधिकौ लहै प्रस्तुत कछु यक हीन ॥ ८ ॥

अथ बर्षाऋतु लच्छन दोहा।

चक मराल बारिज बिना दामिनि जल घनघोर।
चात्रिक दादुर मोर बक जीगन झींगुर सोर ॥ ९ ॥
भूमि हरित बन हरि बधू अगम पन्थ तम ताल।
सरिता लता तमाल तरु राग मराल बिसाल ॥ १० ॥

यथा सवैया।

मोर करैं चहुँओर तें सोर त्यौं घोर घटा घन घेरि गराजैं। छाजैं छटा छनजोति की स्याम पपीहा पिया कहि को कहि साजैं ॥ दादुर झिल्लिन की झनकार अपार मनोज जगावन काजैं। सावन में मनभावन के बिन भामिनी भौन के भीतर भाजैं ॥ ११ ॥

टीका। इस कवित्त में नायिका मुग्धा प्रोषितपतिका है। उक्ति सखी की है नायिका प्रति नायिका बाहेर निकरी। तब उसने यह कहा की बिना मनभावन के सावन में भामिनी भीतर को भाजती हैं। इसमे तू भी बाहेर को मति निकल, तातपर्य बाहेर निकरने से बर्षा देखने से कामोद्दीपन होगा याते मना किया, कहना उसी नायिका को था, सो सब स्त्रीयों को कहा, याते सामान्य निबन्धना अलंकार है। अप्रस्तुत प्रसंसा के भेद में है॥ लच्छन यथा दोहा। अलंकार द्वै भांति को प्रास्तुत सुप्रसंस। यक बरनन प्रस्तुत फुरै दूजे प्रस्तुत अंस ॥ ११ ॥

पुनर्यथा सवैया।

स्याम घटा घन घोर चहूँ दिसि पौन सु-

गन्धित डोलन लागे । त्यौं चमकै चपला नभ मैं अबला मन मैं न कलोलन लागे ॥ कोकिल कूक पपीहा पिया धुनि बोल अमोलन बोलन लागे । पाय हरी हरियानी मही हरि आये नहीं हरि बोलन लागे ॥ १२ ॥

टीका । इस कवित्त में नायिका प्रौढ़ा प्रोषितपतिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति । औ दीपिकावृत्ति अलंकार है । प्रथम भेद भयो । यथा ल० दोहा । दीपक आवृति तीनि विधि आवृति पद की होय । पुनि आवृति है अर्थ की दूती कहियत सोय ॥ पद औ अर्थ दुहून की तीजी आवृति लेखि । घन बरसै हैं री सखी निखि बरसैं हैं देखि ॥ १२ ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

कोकिला पुकारे राग दादुर उचारे बैन चात्रिक पियारे मन हारे सुखान के । मारुत बिहारे जोति जिगना पसारे मनौ मैन बान मारे ज्ञान गारे गुरवान के ॥ झिल्ली झनकारे बग पातिन सँवारे जिमि तड़प तड़ितारे तिमि सोर मुरवान के । बिना स्यामप्यारे बीर धीर ना हमारे अब बाजे हैं नगारे नभकारे धुरवान के॥१३॥

टीका । इस कवित्त में पौढ़ा प्रोषितपतिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति । संभवना अलंकार है । ल० दोहा । जो यौं होतो यौं कहत संभावना बिचार । वक्ता होतो शेस सौं तौ गुन लहतो पार ॥ १३ ॥

पुनर्यथा सिंहावलोकन सवैया।

आइहैं कारी घटा चहुँओर ते मोर चकोरहु सोर मचाइहैं। चाइहैं चञ्चला चावभरी पुनि पीउ कहाँ कहि चात्रिक गाइहैं॥ गाइहैं दादुर राग भले बिरहागि हमारे हिये उपजाइहैं। जाइहैं प्रान सही करि मान जो सावन में सखि स्याम न आइहैं॥ १४॥

टीका। इस कवित्त में प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति। एकावली अलंकार है। लच्छन यथा दोहा। ग्रहित मुक्त पद रीति जहं एकावलि तब मानु। दृग श्रुति लौं श्रुति बाहु लौ बाहु जंघ लौ जानु॥ १४॥

पुनः घनाक्षरी।

आवैं घन घुमड़ि घुमड़ि चहुँओरन ते कारे कारे धावैं लखे मैन सरसत है। दादुर मचावैं सोर मोर त्यौं चकोर चारु चञ्चला चमंकि चित चैन झरसत है॥ झिल्ली झनकार स्याम कोकिला पुकार रैन चातक अमोल बोल बोलि गरसत है। ऐसे मैं न काहू के न मान को ठिकान प्यारी देखु इन्द्र आजु बारि धारा बरसत है॥ १५॥

टीका इस कवित्त में मानिनी नायका है। सखी की उक्ति है नायका प्रति। वर्षा को भय दरसाय, सिच्छा करि, मिसु से कारज साधन, मान छुड़ावने का तातपर्य, याते पर्यायोक्ति अलंकार है। लच्छन पूर्वोक्त है। मिसु करि कारज कीजिये जो है चितै सोहात॥ १५॥

पुनर्यथा सवैया ।

मुरवान के सोर सुने सजनी तन काम कला सरसान लगे । दिवि दामिनी की दुति दौरत हीं दिल कामिनि के झरसान लगे ॥ बगपाँति सुदादुर माधुर बोल सुचात्रिक के सरसान लगे । घर आये न स्यामपिया अबहीं घन घेरि घने बरसान लगे ॥ १६ ॥

टी । इस कवित्त में बचनविदग्धा नायिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति । या मित्र को सुनावती है । तातपर्य यह की बरसात में किसी को अनायोग्य नहीं है, व्यंग से सूचित करती है याते गूढ़ोक्ति अलंकार है । ल० दोहा । गूढ़ोकति मिसु और के कीजै पर उपदेश । कालि सखी हौं जाँउगी पूजन गौरि महेश ॥ १६ ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

घटा घहराती घेरै घेरि घेरि आती मन्द मारुत सोहाती न अथोर ताप ताती मैं । मैन मदमाती जोति जुगनू जमाती बगपाँती दरसाती तौ न तैसे तरसाती मैं ॥ तन पियराती मिले स्याम पियराती नहिं छाती सियराती पपिहा के बोल घाती मैं । लता लहराती झुकि झूमि झहराती कहौ कैसे करुपाती जो न पाती हरी पाती मैं ॥ १७ ॥

टीका । इस कवित्त में प्रौढ़ा आगमितपतिका है । नायिका की

उक्ति है सखी प्रति। यानी पाती जो पची है सो ना पाती तौ कैसे या वर्षा की उत्पात में कल पाती, अर्थात् आराम ना पाती। अतएव पाती पाने से मन को धीर्य आयो। इससे यह जानि परा कि पाती में अवाती लिखी है, ताते जी को सन्तोष भया, याते शब्दावृति अलंकार है, औ संभावना भी है॥ १७॥

पुनर्यथा।

अङ्गन पीन पयोधर साजि सुदामिनि की छबि छोरि धरी है। भूषन भौंह मनौ धनु हैं बगपाँति सुमोतिन माल लरी है॥ केकिन चातिक बोल अमोलन स्याम सुजान को चित्त हरी है। बालम को बिलमायो बिदेस मै सौतिया पावस बैर परी है॥ १८॥

टीका। इस कबित्त में बचनविदग्धा नायिका है। मित्र को जनावती है कि बालम को वर्षा ऋतु ने और या सौति ने बिलमाया है. वर्षा में आय नहीं सकते, और इहां कोई है नहीं। मिलने का मौका है अन्य सन्निधि की व्यंगि है। समाभेद रूपक अलकार है, और गूढ़ोक्ति है, लच्छन पूर्वोक्त है। रूपक ल०॥ है रूपक द्वै भांति को मिलि तद्रूप अभेद। अधिक न्यून सम दुहुन के तीनि तीनि ये भेद॥ मोहन मन मृगवधन को भौंह कमान चढ़ाय। नैन फेरि ताको तरुनि नैन सैन सरसाय॥ १८॥

पुनर्यथा।

पापी पपीहा रटै दिन रैन सुचैन परै नहीं एक घरी है। मोर चकोर को सोर सुनै बिरहानल ज्वाल मै देहूँ जरी है॥ ता पै घटा घन

घोर करै घनस्याम बिना भय मौर भरी है। धीर हमारी न जानत बीर है सौतिया पावस बैर परी है॥ १९॥

टीका। इस कवित्त में बचनविदग्धा नायिका है, और सब बातैं पूर्वोक्तही है। नायिका की उक्ति है, सखी प्रति, मित्र को सुनावती है और परिकर अलंकार है॥ ल० यथा दोहा। है परिकर आसय लिये जहां बिशेषन होय। ससिबदनी यह नायिका ताप हरति है जोय॥

अथ सरदऋतु वर्नन दोहा।

कुन्द काश कुवलय कमल पानिप चन्द प्रकास।
स्वच्छ सुघन दीपक सुमग सरद सुरास बिलास॥

तद्यथा घनाक्षरी।

कन्त विन आली वा हिमन्त अन्तकारी भयो सिसिर की सासति सौं काँपति महाई मैं। आयो तो बसन्त बौर देखिकै सतायो काम स्याम ऋतु कैसहूँ कै ग्रीषम बिताई मैं॥ आई ऋतु पावस सुहाई करि आई घन मोरन के सोर सौं अथोर ताप ताई मैं। छाई बिमलाई चाँदनी की चारुताई लखे दरद सवाई भई सरद अवाई मैं॥ २१॥

टीका। इस कवित्त में स्वकीया प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति और सरदऋतु वर्नन है! और भूत बर्तमानकाल है। और चपलातिशयोक्ति अलङ्कार है। तद्यथा लक्षन।

चपलात्युक्ति जु हेतु के होत नामही काज। कङ्कन ही मैं मुद्रिका पियागमन सुनि आजु॥ २१॥

पुनर्यथा।

कीन्हो है प्रकास कास वैसई अकास स्वच्छ कौल की सुबास स्याम भौंर की गवाई मैं। फूले पारिजात त्यौं नछत्र अस्त्र मारि जात धारि जात धीर ना समीर पुरवाई मैं॥ चन्द चाँदनी के लखे लागे कामिनी के तीर हटत न बीर केहूँ केसिहूँ दवाई मैं। जरद जनाई जनु हरद लगाई तन दरद सवाई भई सरद अवाई मैं॥२२॥

टीका। इस कवित्त में स्वकीया मध्या प्रोषितपतिका नायिका है। सखी की उक्ति है सखी प्रति चपलातिसयोक्ति अलङ्कार है। लच्छन पूर्वोक्त है। वस्तु उत्प्रेक्षा भी है। जनु पद से, यथा लच्छन। चपलात्युक्ति जु हेत सों होत नामही काजु। कङ्कन ही मैं मुद्रिका पियागमन सुनि आजु। उत्प्रेक्षा लच्छन। उत्प्रेक्षा संभावना वस्तु हेतु फल लेखि। नैन मनौ अरबिन्द हैं सरस बिलास बिसेखि॥ २२॥

अथ हेमन्तऋतु वर्नन दोहा।

दिवस छोट रजनी महत पल तिल तेल तमूल।
तूल तरणि तरुणी अनल ऋतु हेमन्त अनुकूल॥

तद्यथा सवैया।

पामरी तेल तमूल दुकूल अतूल है तूल के फूल लसन्त है। पौन प्रवेस न पावै तहाँ अरु दीपति दीपन जोति अनन्त है॥ स्याम सु धूम

की धूम महा मणिमाल बिसाल दुसाल दसन्त है। तन्त कहौ सखी कीजियें कौन सुकन्त बिना यह हंत हिमन्त है ॥ २४ ॥

टीका । इस कबित्त में स्वकीया प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति और बिशेषोक्ति अलङ्कार है। औ तीसरी बिभावना का सङ्कर है। बिशेषोक्ति लच्छन । बिशेषोक्ति जब हेत सों कारज उपजत नाहिं । नेह घटत नहिं है तज काम दीप तन मांहि ॥ तीसरो बिभावना लच्छन । प्रतिबन्धक के होत हीं कारन पूरन मानि । निसिदिन श्रुति सगति तज नैन राग को खानि ॥ २४ ॥

पुनर्यथा घनाच्छरी ।

सौति सनमान दिनमान सों लखान लघु सुछवि निसा सी है महान प्रेम पागी है। झाड़ औ फनूस के जलूस मनिमन्दिर में अगिनि अधूम धूम अगर सुजागी है ॥ तेल औ तमूल तूल अतुल दुकूल चारु ऊनी मखतूल के गलीचे रङ्ग रागी हैं। करत सुमार मार नैनन निहार या हिमन्त की बहार बाल कंत उर लागी है ॥

टीका । इस कबित्त में नायिका मुग्धा स्वकीया है। सखी की उक्ति है नायक को अनुराग दर्शाय मिलाया चाहती है । और सखी की उक्ति नायिका प्रति याते मुग्धा स्वकीया भई। पर्यायोक्ति अलङ्कार है लच्छन पूर्वोक्त है ॥ २५ ॥

अथ शिसिरऋतु बर्नन दोहा ।

सरस सङ्क हिम सीत की जतन गरम फगुवादि ।
नृत्य राग निरबात थल बर्नन सिसिर प्रमादि ॥

यथा घनाक्षरी।

दरन परे हैं चारु परदे बनातन के पौन को न गौन जोति दीपमणिमाला की। अनल अँगीठी मृगमद की सुधूम महा फैलि है सुगन्ध स्याम सुखद रसाला की॥ गिलिम गलीचे बिछे फरसी फनूस मंजु ओढ़बे दुसाला है मनोज ओज आला की। ससकि ससकि भरि अङ्क लपटात उर दोऊ परजङ्क पर सङ्क मानि पाला की॥ २७॥

टीका। इस कबित्त में मध्या स्वकीया नायिका है। सखी की उक्ति है सखी प्रति और विभावना अलङ्कार है। और विशेषोक्ति भी है लच्छन पूर्वोक्त है॥ २७॥

पुनर्यथा।

मंजु मणिमन्दिर मैं मष्मली गलीचे बिछे फूल फूल तूल के सुगिरदे वनायो है। फरसी फनूस के जलूस जगैं चारयौं ओर जोर बन्ही हूँ पै मनौ जलधार नायो है॥ झर झर झाँपै परी थर थर काँपै अङ्ग सीत सों दिवाकर हूँ अगिनिति नायो है। बिबिधि बिसाला हैं मसाला औ दुसाला तऊ बाला बिन पाला जोर जाहिर जनायो है॥ २८॥

टीका। इस कबित्त में प्रोषित नायक है उक्ति स्वयं नायक की है।

कि यद्यपि ए मसाला मौजूद हैं सब तिसपर भी पाला ने अपना जोर जाहिर कियो, बेगैर स्त्री के तिस्से बिरही पुरुष है । औ नायिका की उक्ति कही तौ नहीं हो सकती है बाले संबोधन में होता है । हे बाल सब्द नहीं होता अतएव बिनोक्ति अलंकार है । अत्युक्ति भी है । लच्छन यथा । है बिनोक्ति इ भाँति को प्रस्तुत कछु बिन छीन । अरु शोभा अधिकी लहै प्रस्तुत कछु यक हीन॥ अत्युक्ति लच्छन । अलंकार अत्युक्ति सो बरनन अतिसै रूप । जाचक तेरे द्वार ते भये कल्पतरु भूप ॥ २८ ॥

सिद्धि श्रीमन्ममहाराजाधिराजाराजराजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधीपति रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरवक्ससिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अश्वनीनगर निवासीमहेश्वरसुधाकरग्रन्थबिरचिते षटऋतुबर्ननो नामअष्टमस्तरङ्गः ॥

अथ फागु बर्नन दोहा ।

रङ्ग अबीर गुलालजुत धूम धमारि सुसङ्ग ।
मैन चैन हँसि खेलिबो नाच राग परसङ्ग ॥२९॥

तद्यथा कबित्त ।

श्रीयुत महेश्वरबकस महाराज राज आजु खुलि खेलै फागु रङ्ग सरसत है । नाचैं बार अङ्गना सभा मैं हाव भाव करि गावैं तान ताल सों सुअङ्ग दरसत है ॥ कुम्कुमे की चोट स्याम कुच पै परत हँसि कर की करत ओट प्रेम सरसत है । भूमि झुकि झझकि अनङ्ग की उमङ्ग सङ्ग रूप की तरङ्ग मैं अबीर बरसत है ॥ ३० ॥

यथा घनाक्षरी।

इतै ब्रजचन्द उतै सुन्दरि नबेली बाल बृन्द मैं बिराजै छनजोति उपमान की। बाजत मृदङ्ग मुरचङ्ग नाच रङ्ग सङ्ग गावत धमारि मंजु ताल सुरतान की॥ धूँधुर अबीर बीर मदन उमङ्ग अङ्ग केसरि सुरङ्ग पिचकारी हनै सान की। गोरी लै गुलाल लाल आनन मलो री आज होरी खुलि खेलति किशोरी वृषभान की॥३१॥

टीका। इस कबित्त में फागु बर्नन है केवल कवि की उक्ति है। यद्वा सखी की उक्ति है सखी प्रति। उत्साह राग रंग को बर्नन है॥

यथा सवैया।

स्याम सखान के सङ्ग इतै उतै राधिका राजति मंजु अलीन मैं। चोट लगैं पिचकीन की त्यौं करि चंचल नैन चितै रस लीन मैं॥ बीर अबीर की धूँधुर मैं धसिकै हँसि रङ्ग भरैं अबलीन मैं। लाल गुपाल बने दरसैं बरसैं ब्रजबाल गुलाल गलीन मैं॥ ३२॥

टीका। इस कबित्त में नायिका अलङ्कार पूर्वोक्त है, लुप्ता औ उदात्त अलंकार है।

अथ शृङ्गार से स्फुट कबित्त समस्यादिकौं पर सवैया।

अति रूप अनूप छटा उमही तन मैन की बायु झकोरै लगी। रस रङ्ग तरङ्ग हिये सरसी

दृग कोरन में हित जोरै लगी ॥ कबि स्याम जू श्याम बिलोकिबे को अलि सों मृदुबैन निहोरै लगी । रतिचोजहु की छबि छोरै लगी दिन द्वै ते पियूष निचोरै लगी ॥ ३३ ॥

टीका । इस कवित्त में नायिका मुग्धा प्रादुर्भूतमनोभवा है । उक्ति सखी की है सखी प्रति या नायक प्रति स्वभावोक्ति अलंकार है । लक्षन यथा दोहा । स्वभावोक्ति यह जानिये बर्नन जाति सुभाय । हँसि हँसि फिरि देखति झुकति मुख मोरति इतराय ॥ ३३ ॥

पुनर्यथा ।

आय गली ह्वै कढ्यौ सजि कै बजि कै दृग मेरे सुरङ्ग में पागे । प्रेम निबाहनो है अब स्याम सों कोऊ कितेक कहौ मम आगे ॥ सासु जिठानी रिसानी फिरौ सब लोग चवाव करौ अनुरागे । जो कछु होनी हुती सो भई अब होत सुगन्ध कलङ्क के लागे ॥ ३४ ॥

टीका । इस कवित्त में, नायिका ऊढ़ा है, उक्ति नायिका की है सखी प्रति, प्रेमवती है याते जाहिर किया, और अलंकार संसृष्टि है, अनुज्ञा ॥१॥ पूर्व रूप ॥२॥ विभावना ॥३॥ विशेषोक्ति ॥४॥ ये चारिअलंकार हैं ताते संसृष्टि, अनुग्या ल० । होत अनुज्ञा दोष को जो लीजै गुन मानि ॥ पूर्व रूप लक्षन । पूर्व रूप लै संग गुनि तजि पुनि अपनो लेतु ॥ दूजे गुन जब नामिहे किये मिलन के हेतु ॥ प्रति बंधक लक्षन । प्रति बंधक के होतहू कारज पूरन मानि । निशि दिन श्रुति संगति तऊ नैन राग की खानि ॥ तीसरी विभावना । विशेषोक्ति जो हेत सों कारज उपजै नाहिं । नेह घटत है नहिं जऊ प्रेम दीप चित माहिं ॥

पुनर्यथा।

मौर भई प्रथमै जबते तबते मनमौज मनोज मैं पागे। पातन मैं दुरि कै कछु रोज सुबातन सों प्रगटे रस जागे॥ भे परिपूरन तूरन जोग सँजोग सों स्याम सुकोकिल दागे। देखिये बाल रसालन को कस होत सुगन्ध कलङ्क के लागे॥ ३५॥

टीका। इस कवित्त में नायिका मानिनी है। दूती की उक्ति है नायिका प्रति, मान छुड़ाय मिलाया चाहती है। औ रसाल आम औ रसाल नायक दूनो का रूपक है, श्लेष अलंकार है। लक्षण पूर्वोक्त कहा है॥ ३५॥

पुनर्यथा।

रूप अनूप की रोशनी है बलि मेरी कही सुनि चित्त धरा करौ। उन्नत पीन उरोज सरोज से दै पिय स्याम हिये को हरा करौ॥ कंचन सों तन पाय पिया परस्वारथ के पथ पै निसरा करौ। चाहत है धनी को सबही पै गरीबन हूँ पै निगाह जरा करौ॥ ३६॥

टीका। इस कवित्त में, गणिका नायिका है। नायक की उक्ति है नायिका प्रति, या सखी की उक्ति है नायिका प्रति, सिक्षा संयुक्त सिपारस है और पर्यायोक्ति अलंकार है। यथा ल०। पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात। मिस्तु करि कारज साधिये जो है चितै सो होत॥ इति भाषाभूषने॥ ३६॥

पुनर्यथा ।

कुन्दन ते अति सुन्दर अंग सुरंग सुगन्ध की चाह करा करौ। लाल लसैं अधरादिक चारु सुमोतिन हाँस सुमाह करा करौ॥ स्याम पियारे तिहारे अधीन प्रबीन हौ प्रेम निबाह करा करौ। चाहत है धनी को सबही पै गरीबन हूँ पै निगाह जरा करौ ॥ ३७ ॥

टीका । इस कवित्त में गणिका नायिका है, सखी की उक्ति है नायिका प्रति, यद्वा नायक की उक्ति है नायिका प्रति, सम प्रतोप अलंकार है । औ सम भेद रूपक अलंकार है । लच्छन । है रूपक द्वै भांति को मिलि तद्रूप अभेद । अधिक न्यून सम दुहुन के तीनि तीनि सो भेद ॥ ३७ ॥

समस्या—गरजीगरीबन पै गजबगुजारे है । घनाक्षरी ।

अङ्ग-सुघराई लखि दामिनी दमक जाति नैन मृग कंज खंज बृन्दन बिचारे हैं । आनन अमोल मन मोल लेत लाखन के चन्द छबि मंद समता न उर धारे है ॥ मदन उमङ्गन सों गहत गयन्द-गति स्याम रस रङ्गन के कौतुक पसारे है । अजब सजीली गुन गन गरबीली बाल गरजी गरीबन पै गजब गुजारे है ॥३८॥

टीका । इस कबित्त में गणिका नायिका है । मध्या है नायक की उक्ति है । उपपति वैशिक नायक है । पञ्चम प्रतोप अलङ्कार है लच्छण । कहा कछु न पद दै जहां बिषई व्यर्थ बखानि । बिषै आदि रित को जिये पञ्च प्रतोपा मानि ॥ ३८ ॥

पुनर्यथा।

मन्द मन्द चलति मनोज मदमाती महा मंजुल मरालन की गति मति हारे है। अङ्गन अभूषन अनूपम सँवारि स्याम बसन सुधारि मंजु आनन उघारे है॥ झुकि झुकि झूमि झूमि करति अनेक रङ्ग सखिन के सङ्ग छबि पुंजन पसारे है। नैनन नचाय कुचकोर दरसाय मुख-मोरि मुसकाय हाय गजब गुजारे है॥ ३९॥

टीका। इस कवित्त में कुलटा नायिका है। नायक की उक्ति है। और समुच्चय अलङ्कार है। लक्षण। दोय समुच्चय भाव बहु कहुं इक उपजै सङ्ग। एक काज चाहै कस्यौ है अनेक इक अङ्ग॥ ३९॥

पुनः समस्या—लेत लोभाने सवैया।

श्रीवृषभानकुमारि कहौ कहँ आजु मिले पिय स्याम सुजाने। मौन भई कस बोलत बैन न नैन तिरीछे करौ केहि लाने॥ मानौं न मानौं सो जान्यो सबै अब होत कहा कहिये रिसि-याने। माल की छाप बिसाल हिये सो हरे हरे मो मन लेत लोभाने॥ ४०॥

टीका। इस कवित्त में नायिका लक्षिता है। सखी की उक्ति है नायिका प्रति पिहित अलंकार है। लक्षण। पिहित छिपो पर बस्तु को आनि देखावै भाव। प्रातहि आये सेज पिय हँसि दाबति तिय पाय॥ ४०॥

अथ प्रबीन समस्या पर "आँगुरिया जनिलाउ अँगारन"।

सवैया ।

बंसी बजी जब स्याम सुजान की राधिका के जगे मोद अपारन । वाही सँकेत गई सखि सङ्ग न पायो हने सर मैन हजारन ॥ ठाढ़ी भई गहि किंसुक-डार बिलोकि सखी सु लगी यों पुकारन। च्वै चलि हैं चुरियाँ चलि आउ री आँगुरिया जनि लाउ अँगारन ॥ ४१ ॥

टीका । इस कविन मं मध्या विप्रलब्धा नायिका है । सखी की उक्ति है। नायिका प्रति, विशेषोक्ति अलंकार है । लक्षण । विशेषोक्ति जो हेत सो कारज उपजत नाहिं । नेह घटत नहि है तऊ कामदीप चित माहि ॥ ४१ ॥

पुनर्यथा ।

बाल बिलोकन को गई बाग भरी अनुराग सोहाग सहेली। बेला गुलाब जुही गुल सोसनी सेवती सोनजुही बरबेली ॥ त्यौं कचनार अनार अपार अनंग तरंग गई करिकेली । राधिका यौं मुसक्याय कही केहि कारन फूली फली न चमेली ॥ ४२ ॥

टीका । इस कवित्त में नायिका मध्या विप्रलब्धा है। नायिका की उक्ति है सखी प्रति व्याजोक्ति अलंकार है। लक्षण । व्याज उक्ति कछु और बिधि कहै दुरै आकार। सखि सुक कीहे कर्म ये मानिक जानि अनार ॥ ४२ ॥

पुनर्यथा।

बोली सखी सुख को सरसाय सुनौ सजनी यह बात पहेली। पै अपनी मति की अनुमान कहौं जिय आवत जो वर हेली॥ देति वियोगिनि को दुख है पिय स्याम बिना किय काम कसेली। कोप सौं श्राप दियो तेहि को यहि कारन फूली फली न चमेली॥ ४३॥

टीका। इस कबित्त में नायिका मध्या प्रोषितपतिका है। सखी की उक्ति है नायिका प्रति काव्यलिंग अलंकार है। तद्यथा लक्षण दोहा। काव्यलिंग जब युक्ति सों अर्थ समर्थन होय। ता को मैं जोन्यो मदन मो हिय में शिव सोय॥ ४३॥

पुनर्यथा।

कुंजन ओरहिं जात हुती चलि आई इतै अतिसै सुख जानो। व्यालिनि बेनी बिलोकत मोर चकोरन हूँ मुखचन्दहि मानो॥ व्याकुल चोचन मारि कियो जो दियो दुख सो किमि जात बखानो। नन्दलला नहिं जो मिलतो मिलतो न सखी कहुँ मोर ठिकानो॥ ४४॥

टीका। इस कबित्त में नायिका रूपगर्वितान्तरगत गुप्ता है बर्तमान नायिका की उक्ति है दूसरी नायिका सों। जिसने देखा है उसी से। संसृष्टि अलंकार है। छेकापन्हुति॥ ॥ व्याजोक्ति॥२॥ भ्रम॥३॥ ल०। छेकापन्हुति जुक्ति करि पर सों बस्तु दुराइ। व्या० ल०। व्याजोक्ति कछु और बिधि कहै दुरै आकार। सदृश रूप कछु देखि कै भ्रम सों समुझै और। भ्रांति क्रिया सों कहति है सकल सुकबि सिरमौर॥

पुनर्यथा ।

बेनी लसै यह स्याम न पन्नगी मोर महा भ्रम सों झहरावै । हैं अधरारुन बिम्ब न ए शुक क्यों श्रम आनि इतो छहरावै ॥ लोचन कों अलि अम्बुज जानि सुभूलै इतै न चितै थहरावै । आनन है न सुधाकर-बिम्ब चकोर तूँ चोंच कहा ढहरावै ॥ ४५ ॥

टीका । इस कबित्त में रूप गर्बिता नायिका उक्ति नायिका को । मोर सुक चकोर प्रति है औ भ्रमालंकार है औ परजायोक्ति है ॥४५॥

पुनर्यथा ।

प्रेमपगे मनिहार निहारि सुजानि अँगार लगे लहरावै । पानिप ओठन को है पियूष न घेरि हमारो हियो हहरावै ॥ स्याम जू क्यों मद जोबन जोर भए बरजोर छके छहरावै । आनन है न सुधाकर-बिम्ब चकोर तूँ चोंच कहा ढहरावै ॥ ४६ ॥

टीका । इस कबित्त में सर्ब लक्षण पूर्वोक्त है सिर्फ उक्ति केवल चकोर प्रति है ॥ ४६ ॥

यथा घनाक्षरी ।

अङ्गन में अङ्ग राग रंजित करै मो महा मोद सरसावै सो न लावै नेक कर पै । सारी जरतारी आँगी मोतिन सँवारी प्यारी सखी पास

वारी कामदारिन को अर पै ॥ अजब अनोखी बाल कंचन लतासी खासी हाँसी खुसी ख्याल सों दुरावै देह दर पै। तेवर भई है कहा नेवर निहारि अरी जेवर न जेब अहै कुसुम कलेवर पै ॥ ४७ ॥

टीका। इस कवित्त में रूप गर्विता नायिका है। सखी की उक्ति है सखी प्रति और व्याघात सरा अलंकार है। लक्षण। व्याघात जु कछु और ते कीजे कारज और। बहुरि विरोधा तेज वै काज ल्याइये ठौर ॥ ४७ ॥

पुनर्यथा सवैया।

साँझ समै सब घेरि लियो है चहूँ कितते सखियाँ समुदाई। मध्य मे राजै मयङ्कमुखी सुखमा मुख एक सकै किमि गाई ॥ स्याम समै सजि मालिनिया बहु रङ्ग सुरङ्ग प्रसून लिआई। राधे सुजान लई हँसिकै पै गुलाब-कली लखि कै रिस छाई ॥ ४८ ॥

टीका। इस कवित्त में स्वकीया प्रौढ़ा रतिप्रीता नायिका है। नायिका की उक्ति मालिनी प्रति कोप में व्यंग है, याने गुलाब की कली प्रात काल जनावैगी। प्रात, काल गुलाब की कली चटकती हैं कली खिलैगी अतएव कोप किया। जुक्ति अलंकार है। लक्षण। अहै जुक्ति कीन्हे क्रिया कार्य छिपायो जाय। पीय चलत आँसू चले पोंछति नैन जम्हाय ॥ ४८ ॥

पुनर्यथा ।

मो घर आये प्रभात पिया अलसात है गात करौ जनि ओटैं । रैन जगीले रँगीले सुनैन धरैं मन मैन कलङ्क की मोटैं ॥ भाल महाउर अंजन स्याम मनोहर मोतिन की उर जोटैं । लाल बने हौ बिसाल महा मति मारिये मोहिं नई नई चोटैं ॥ ४९ ॥

टीका । इस कवित्त में खण्डिता नायिका पिहित अलंकार है लक्षन पूर्वोक्त है ॥ ४८ ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

आइये रँगीले बने मोहन छबीले भले ढीले क्यौं लखात नेक पाग तौ सिधाइये । जागिहै हमारी भागि यामे ना तुह्मारी लागि सौति सङ्ग रैनि जागि आगि ना जगाइये ॥ छाप दई ठौर ठौर आप के सुअङ्ग अङ्ग नीके हौ सलोने लाल लोचन लोभाइये । जाइये पियारे स्याम प्यारी इन्तजारी करी बात मै लगाय ताहि गात में लगाइये ॥ ५० ॥

टीका । इस कबित्त मे नायिका मध्या धीरा है । नायिका की उक्ति है नायक प्रति जो कही की खण्डिता क्यौं नहीं ! सो खण्डिता में दुःख प्रधान है । सो इसमे दुखो नहो है । व्यंग ! व्यंग से कोप मात्र जनावती है । अतएव मध्या धीरा है पिहित अलंकार है लक्षण । पूर्वोक्त कहि आये हैं ॥ ५० ॥

पुनर्यथा ।

जोहत रसीले नैन सोहत लजीले लाल ढीले पाग पेंच पाय काके परि आये हौ । अंजन अधर भाल जावक बिसाल पर परत उताल अङ्ग अङ्ग छबि छाये हौ ॥ जागे रैन रङ्ग मैं अमोल मोल कैहै कौन प्रात दै दरस स्याम मो मन लोभाये हौ । मोतिन की माल बिन गुन की रसाल पैन्हि आये नँदलाल न दलाल सङ्ग लाये हौ ॥ ५१ ॥

टीका । इस कवित में नायिका प्रौढ़ा धीरा है । उक्ति नायिका की नायक सों हैं । और पिहित अलंकार है । लक्षण । पिहित छिपो पर बस्तु को आनि दिखावै भाइ । प्रातहि आये सेज पिय हँसि दाबति तिय पाइ ॥ ५१ ॥

पुनर्यथा ।

बसि कै रजनी सजनी सँग मैं पिय प्रातहि आनि जोहारा हमै । मणिमाल लसै उर बेगुन की निरखे दुख देति अपारा हमै ॥ बरसैँ अँसुवा इन नैनन ते गुन स्याम न ऐसे गवारा हमै । हित कै मिलिये नित सौतिन सों दिल दीजिये प्यारे हमारा हमै ॥ ५२ ॥

टीका । इस कवित्त में प्रौढ़ा खण्डिता नायिका है । नायिका की उक्ति नायक प्रति है । और अक्षेपा अलंकार दूसरा भेद है । लक्षण ।

तीनि भांति अचेप है एक निषेधाभास । पहिले कहिये आप कछु बहुरि फेरिये तासु । जुरै निषेध जु विधि बचन लच्छन तीन्यौ लेषि । ह्वै नहि दूती अगिनि ते तिय तन ताप विशेषि ॥ ५२ ॥

पुनर्यथा ।

मुख पेखन हेत सुतन्त्र रहैं सुबसीकर मंत्र पढ़ावत से । सखियान में नेक लजात नहीं बतियाँन मे प्रेम बढ़ावत से ॥ दिन रैन हूँ स्याम सुचैन लहैं छबि मैन रती को चढ़ावत से । जबते बलि गौनो लिआये लला तबते रहैं सोनो गढ़ावत से ॥ ५३ ॥

टीका । इस कबित में नायिका स्वाधीनपतिका है । सखी की उक्ति है सखी प्रति । गुन ते गुन नायिका के गुन ते पति को गुन यही उल्लास अलङ्कार है । लच्छन । गुन औगुन जब एक ते और धरे उल्लास । न्हाय संत पावन करें गंग धरै एहि आस ॥ ५३ ॥

पुनर्यथा ।

ब्रज के घन कुंजन पुंजन मे येहि जीवन जीवन देबो करौ । दुखदाई चवाइनै बैर परीं तिन की बिष डीठि बचैबो करौ ॥ बिन देखे तुम्है नहिं चैन परै घनस्याम छटा दरसैबो करौ । मुसकैबो करौ न चितैबो करौ न गलीन ह्वै मोहन ऐबो करौ ॥ ५४ ॥

टीका । इस कवित में परकीया स्वाधीनपतिका है। उक्ति नायिका की है मित्र प्रति । आचेप अलङ्कार है । लच्छन । तीनि भांति अचेप है

एक निषेधाभास । पहिले कहिये आप कछु बहुरि फेरिये तासु ॥ जुरै निषेध जु बिधि बचन लच्छन तीन्यौ लेषि । हौं नहि दूती अगिनि ते तिय तन ताप बिशेषि ॥ ५४ ॥

पुनर्यथा ।

यह प्रेम लगो तुम मैं दिनरैन सुचैन निबाहनो दैबो करौ । कुलकानि की आनि अनैसी दई दई स्याम सुधीर धरैबो करौ ॥ सब गाँव चवाव कै नाँव धरै तेहि ते रसरीति छिपैबो करौ । कहिए किहि भाँति न जाति कही न गलीन ह्वै मोहन ऐबो करौ ॥ ५५ ॥

टीका । इस कबित्त में परकीया स्वाधीनपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति है मित्र प्रति । आक्षेप अलङ्कार है । लच्छन । तीनि भाँति आक्षेप हैं एक निषेधाभास। पहिले कहिये आप कछु बहुरि फेरिये तासु ॥ जुरै निषेध जु बिधिबचन लच्छन तीन्यौ लेषि । इत्यादि ॥५५॥

पुनर्यथा ।

पिय पाय कै रूप अनूप महा मति मान मतो दरसैबो करौ। तन बारिद प्रेम पयोनिधि ते बर बैन सुधा बरसैबो करौ ॥ जिय जानि अधीन है स्याम पिया रस रीति सदा सरसैबो करौ । मुसकाय चितै अपनाय हमै हित कै न इतो तरसैबो करौ॥ ५६ ॥

टीका । इस कबित्त में माननी नायिका है। उक्ति सखी की नायिका सों शिक्षा करे है। यद्वा नायिका की उक्ति है नायक प्रति पर्यायोक्ति

अलङ्कार है तथा समभेद रूपक है । लच्छन पूर्वोक्त है । पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सों बात । मिसु करि कारज साधिये जो है चितै सुहात ॥ ५६ ॥

पुनर्यथा ।

मुख कोमल कौंलन की छबितैं फबितैँ नहिं बोलत लाल को हौ । घनस्याम सरूप अनूप बनो अरु बानो बनाये दयाल को हौ ॥ रस दीन अधीनन मीनन के मनमोहन मोहन जाल को हौ । बनितानि के मारत नैन के बान बहानो बतावत काल को हौ ॥ ५७ ॥

टीका । इस कवित्त में सखी की उक्ति है नायक प्रति, उपालंभ है । उराहनो है । दूसरी विभावना अलङ्कार है । लच्छन । होइ छ भांति बिभावना कारन बिनहीं काजु । बिन जावक दीन्हे चरन अरुन लषे हौं आजु ॥ हेतु अपूरन ते जबै कारज पूरन होइ । कुसुम बान कर गहि मदन सब जग जीत्यौ सोय ॥ ५७ ॥

पुनर्यथा ।

हँसि हेरि इतै अपनाय मनै हित कै कत रोस बढ़ावती हौ । कुच तुङ्गन पै कसि कंचुकी को मनु केलिकलानि पढ़ावती हौ । तन पानिप प्यासे प्रबीनन को गुन बाँधि करेजो कढ़ावती हौ । सर बेधि सुनैनन के उर मैं पुनि भौंह कमान चढ़ावती हौ ॥ ५८ ॥

टीका । इस कवित्त में मानिनी नायिका है । नायक की उक्ति है

नायिका प्रति कमान रूपी भौंह को चढ़ाय बान सम नैन मेरे हिये में बेधि दियो । अब पुनः भौंह क्यों कमान रूपी तानती हौ । एक बार के मारे को फेरि मारिबे को इरादा मत करौ । प्रमान । मुये बधे नहि कछुक भलाई । सम भेद रूपक अलंकार है, लच्छन । पूर्वोक्त ही जानिये ॥ ५८ ॥

पुनर्यथा ।

मधुरी बतियान मै मोहि लियो मन मौज मनोज जगावती हौ । छतियान छुवै छिन देती हमै कलपाय कहा कल पावती हौ ॥ मिलिये नित स्याम सुजानहि सों रस रङ्ग सु अङ्गन भावती हौ । सर बेधि सु नैनन कै उर मे पुनि हाय हिये नहि लावती हौ ॥ ५९ ॥

टीका । इस कबित्त में भी वही मानिनी नायिका है । नायक की उक्ति है, नायिका प्रति और वही बात सब है अलंकार व्याघात है । लच्छन । व्याघात जु कछु और ते कीजै कारज और । बहुरि बिरोधी ते जबे काज ल्याइये ठौर ॥ सम भेद रूपक भी है । लच्छन पूर्वोक्त ॥५९॥

पुनर्यथा ।

अँग अङ्ग अनङ्ग तरङ्गन सों सुखमा सरसाय मनौज करी । गुन गौहर माल बिसाल महा दुति नैनन लै नकसे मै धरी ॥ कुच तुङ्ग लखे द्विज स्याम कहै थिर चित्त रहै नहिं एक घरी । हँसि हेरि जकै उझकै न रुकै झुकि झूमती प्रेम नसे सों भरी ॥ ६० ॥

टीका इस कबित्त में नायक की उक्ति है उपपति नायक है । प्रौढ़ा नायिका है ॥ ६० ॥

पुनर्यथा ।

धनु भौंह सुनैनन के सर सों हनि सैनन कीन सहारा हमैं । मुसकानि बसीकर सी दरसी सरसी छबि मैन सँवारा हमैं ॥ करि प्रीति करौ अनरीति कहा दुख देत मनै न बिचारा हमैं । मिलि लीजिये अङ्क लगाय न तौ दिल दीजिये प्यारी हमारा हमैं ॥ ६१ ॥

टीका । इस कबित्त में उपपति प्रोषित नायक है । अथवा नायक की उक्ति है । प्रत्यक्षहो नायक को कहत है । मानिनी नायिका है । उपालंभ भी है । बिभावना अलंकार । लक्षन पूर्बोक्त है । छोइक भांति बिभावना कारन बिनहीं काज । बिन जावक दीन्हे चरन अरुन लखो हौ आजु ॥ ६१ ॥

पुनः कुण्डलिया ।

राधे तुह्मरे दरस बिन आधो रह्यौ शरीर ।
कौन सुनै कासों कहौं को जानै यह पीर ॥
को जानै यह पीर बीर कोऊ नहिं वारै ।
कासों कहौं पुकारि जौन मम सोच निवारै ॥
बरनै स्याम सुजान प्रान राखौं केहि साधे ।
होत महा परिताप आप के बिन अवराधे ॥

टीका । इस कुण्डलिया में प्रोषित बिरही नायक है । उक्ति स्वयं नायक की है पत्र द्वारा करिकै । बिरह की बिह्वलता जनावै है । बि-

नोक्ति अलंकार है। लच्छन। है बिनोक्ति द्वै भांति की प्रस्तुति कछु इक छीन। अरु शोभा अधिको लहै प्रस्तुत कछु इक हीन॥ ६२॥

पुनर्यथा नेत्र बर्नन कबित्त घनाक्षरी।

अजब रसीले अरसीले त्यों लजीले चारु कमल सजीले सम है न अजरानी के। चंचल नुकीले चटकीले दरसीले चैन सैन सरसीले मौज मैनराज-रानी के॥ सेत रतनारे अनि-यारे कजरारे बड़े प्यारे मतवारे मीन मृग नज-रानी के। कहत बनै न मैनका के सुने मैं न ऐसे स्याम सुखऐन हैं सुनैन ब्रजरानी के॥६३॥

टीका। इस कबित्त में नेत्र को बर्नन है। उक्ति नायक को है। नायिका के नैनन को अवलोकन करिकै बर्नन करै है। और सखी की भी उक्ति है। पञ्चम प्रतीप अलंकार है, लच्छन। व्यर्थ होय उपमान जब बर्ननीय लखि सार। दृग आगे कछु मृग न ये पञ्च प्रतीप प्रकार॥

पुनर्यथा घनाक्षरी।

आबदार अजब रसीले अरसीले बड़े चंचल सजीले मृग मीन की न चेरे हैं। प्रेम दरसीले स्याम रङ्ग मैं रँगीले लाल गुन गरबीले रति रम्भा के न हेरे हैं॥ खंजन लजीले से पराने मरजीले बन बारिज रजीले लिए बारि मैं बसेरे हैं। गजब गसीले मैन सैन सरसीले झुकि झूमत नुकीले ए नसीले नैन तेरे हैं॥ ६४॥

दोहा ।

चञ्चल नैन नचाय कै मो मन लियो चुराय ।
चन्दमुखी मुसकाय घर चली बात बहलाय ॥

टीका । इस दोहे में उपपति नायक है । और उपमा अलङ्कार है । लच्छन उपमा सदृस जान, स्वभावोक्ति भी है ॥ ६४ ॥

दोहा ।

हरिन हेरि हारे हिये दिये मीन जल ऐन ।
कंज खंज बारिज किये अजब रसीले नैन ॥

टीका । इस दोहे में मुग्धा नायिका है । सखी की युक्ति है । पंचम प्रतीप अलङ्कार है ॥ ६५ ॥

दोहा ।

देत दुसह दुख देखतै अमल कमल सम नैन ।
अनियारे बेधत हिये परत नेक नहि चैन ॥

टीका । इस इस दोहे में उपपति नायक है उपमा अलङ्कार है ॥

दोहा ।

चितये उर में चाह अति बिन चितये उर दाह ।
चितए तें चित करि रहे चिन्ता चित्त अथाह ॥

टीका । इस दोहे में भी उपपति नायक दीपकावृत्ति अलङ्कार है ॥ ६७ ॥

दोहा ।

अनियारो प्यारो महा कहा कमल को आब ।
शीलभरी शोभाभरी जादूभरी जनाब ॥

टीका । इस दोहे में नैनन को वर्णन है ।दूती की उक्ति है नायक रुचि उपजाती है पंचम प्रति अलङ्कार है लच्छन । व्यर्थ छोड़ उपमान जब बर्ननीय लखि सार । दृग आगे जकु मृग न ये पञ्च प्रतीप प्रकार ॥

दोहा ।

तुमको बिन देखे हमैं नेक परत नहि चैन ।
बिनती सुनिये करि दया दीजे हरसन बैन ॥

टीका । इस दोहे में प्रेमासक्त है । उक्ति नायिका की है । नायक सो कहै है । यहा नायक की उक्ति है । नायिका प्रति स्वाधीन है । नायिका सों कहै है ॥

चितचाहत हमतुमहि को तुम चितवत इत नाहिँ ।
चित कठोर करिकै कहा कल पावत मन माहिँ ॥

टीका । इस दोहा में भी वही भाव है । नायिकालङ्कार है ॥

पी आगम सुनि बाल के सरस्यौ प्रेम अपार ।
भीतर व्है देखन लगी खुले अधखुले द्वार ॥७०॥

टीका । इस दोहा में आगतपतिका नायिका है । मध्या प्रथम भेद प्रहर्षण अलङ्कार है ।

जो अपने जी की कहैं है न नजीकी कोय ।
याते मनही में समुझि रहैं यादि करि रोय ॥

टीका । इस दोहा में बचनबिदग्धा नायिका है । गूढ़ोक्ति अलङ्कार है ।

नींद छुधा तन में नहीं नहीं नेक मन धीर ।
प्यारी तुम्हरे बिरह में निसु दिन हटत न पीर ॥

टीका । इस दोहा में उपपति, नायक प्रोषित है बिरह कथन सों सुमिरन अलङ्कार है ।

आह रहैं निसिद्यौस हूँ दाह करै अति देह ।
कौन सुनै कासों कहौं को जानै यह नेह ॥७३॥

टीका । इस दोहा में परकीया खण्डिता नायिका है दुख से पिहित अलङ्कार है ।

पहिलेही करिबो रह्यौ नहीं प्रेम सों चाह ।
करिकै पुनि प्यारी तुम्है करिबो है निरबाह ॥

टीका । इस दोहा में उपपति नायक प्रोषित है विरह कथन सों सुमिरन अलङ्कार है ।

दुरै न अंचल ओटहूं चख चंचल कुच कोर ।
अनिआरे बेधत हिये लखत लगे हूँ थोर ॥७५॥

टीका । इस दोहा में उपपति नायक कुलटा नायिका है ।

पुनर्यथा सवैया ।

अब चाव चवायनै चाहै करैं रस चाखिबो है सुखकंदन को । कुल कानि की संक न नेक करैं अखियाँ लखि कै जगबंदन को ॥ बदनाम चहै वृजगाँव करै हम छाड़ि दियो भ्रम फंदन को । हिय में रमे स्याम सुजान सखी मन तौ रहै चुक्यौ नँदनंदन को ॥ ७६ ॥

टीका । इस कबित्त में जढ़ा नायिका है । नायिका की उक्ति है सखी प्रति, तीसरी बिभावना अलंकार है । लच्छन । प्रतिबन्धक के होत हो कारज पूरन मानि । निसि दिन श्रुतिसंगति तज नैन राग की खानि ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

आज सखि भोर लखि नंद को किशोर स्याम तामरस छाम छबि खंजन चकोर की । भृकुटी मरोर चल्यौ कुंजन की खोर मोर चलत

न जोर हन्यौ सैन उर छोर की ॥ ध्यान ओहि ओर ज्ञान गहत न थोर कुलकानि झकझोर के बँधी हौं प्रेम डोर की । मैन की मरोर कैसी बढ़ति अथोर थोर ऐसी नैन कोर बरजोर चित-चोर की ॥ ७७ ॥

टीका । इस कवित्त में जड़ा नायिका है । नायक की उक्ति है सखी प्रति तामरस जो कमल है ताकी शोभा छाम । खञ्जन चकोर की शोभा छाम है, याने कम है । इस पद से पञ्चम प्रतीप अलंकार भयो लच्छन । व्यर्थ होय उपमान जब बर्ननीय लखि सार । दृग आगे कछु मृग न ये पञ्च प्रतीप प्रकार ॥

पुनर्यथा ।

खान औ पान करै न कछू सखियान की सीख सुने अनखाति है । स्याम बिलोकि निकुंजन में भई बावरी सी यों दसा दरसाति है ॥ बेसुधि बीर बिकानी मनौ मनमौज मनोज विथा न समाति है । भामरी देत फिरै बिन काम री कामरी वारे पै का मरी जाति है ॥ ७८ ॥

टीका । इस कवित्त सखी की उक्ति है । नायिका प्रति शिच्छा करती है । नायिका नायक के रूप पै आसक्त है । जमकालंकार है ।

पुनर्यथा ।

जनक सुबाटिका में बिहरैं सुमन लेत राम छबि हेरी है अनङ्ग रङ्ग रितवानि । अरबिन्द अ-

मळ मुखारबिन्द नीको महा नैन मृग खंजन सु-मीन कीन रितवनि ॥ परम अनूप स्यामसुन्दर सरूप मोहिं पैन सर सैन मारि लीन्ह्यौ चैन जितवनि । जी मैं बसी जोरवारी मंजुल मरोर-वारी धन्य वह कोशल-किसोरवारी चितवनि ॥

टीका । इस कवित्त में उक्ति सखी की सखी प्रति है ।

पुनर्यथा ।

रतन सिंहासन बिराजे छवि ऐना राम बोलै मंजु बैना बिसरै ना हेरि हितवनि । करिकै क-लेऊ पान खात मन्द मुसकात मोहै सखी सङ्ग सिद्धि सुखमा अमितवनि ॥ बिबिधि बिलास हास होत रसरास स्याम नैन बान लागे बाम चित्त की न थितवनि । आँनद अरोरवारी म-दन मरोरवारी धन्य वह कोशल-किसोरवारी चितवनि ॥ ८० ॥

पुनर्यथा ।

जोबन रूपवती जुवती ब्रज मैं एक तू सी तुही दरसाति है । प्रेम पतिव्रत पालिवे को द्विज स्याम सुबेद बद्यौ बहु भाँति है ॥ सो जिय जानि अपानि महा मति हानि करै कुल कानि अराति है। बामरी काम री कीन्हैं कहा अरी कामरीवारे पै का मरी जाति है ॥ ८१ ॥

टीका। इस कवित्त में भी वही बात है। सखी को उक्ति है नायिका प्रति नायिका नायक के रूप पै आसक्त है। सो सखी सिक्षा करती है। आवृति अलंकार है। लक्षन। आवृति पद की होय। इत्यादि

पुनर्यथा।

तब तौ पल चैन परै न उन्हैं लखिवे को हमै पिय प्यारे फिरैं। करिकै मिसु गोरस के रस को सु गली भली स्याम निहारे फिरैँ॥ पटपीत सु मोरपखा श्रुति कुंडल काछनी चारु सँवारे फिरैं। अब कूबरी सौति पै व्है कै लटू तेहि ते कर कूबरी धारे फिरैँ॥ ८२॥

टीका। इस कवित्त में नायिका परकीया प्रोषितपतिका है। नायिका को उक्ति है सखी प्रति वा अन्य प्रति। श्री कृष्णचन्द्र जी कूबरी सौति पर लटू यानि प्रसन्न याते हाथ कूबरी छरी लिये फिरते हैं। औ कूबरी कंस की दासी नाम याते उपादान लक्षना है। और काव्यलिंग अलंकार है। लक्षन। काव्यलिंग जब जुक्ति सो अर्थ समर्थन होय। मैं तोको जीत्यौ मदन मो हिय मे शिव सोय।

पुनर्यथा।

बौरे रसाल घने बिलसैं अलि वृंद अनंद भरे उर आली। माती सुकोयल बोलि रही पुनि पेखि पलास गुलाब बहाली॥ डारन पत्र नये उलहे सु-लहे मन मौज मनोज बहाली। भावै सखी सुखमा मन को बन बागन कैसी बसन्त मैं लाली॥

टीका। इस कवित्त में मानिनी है सखी अभिसार करायो चाहती है परजायोक्ति अलकार है। लक्षन पूर्वोक्त है।

पुनर्यथा ।

मंद सुगंध समीर लगै सु जगै अँग अँग अनंग बहाली । आब गुलाबन की दरसै सरसै पुनि पेखि पलास खुसाली ॥ भौर पिकीरव स्याम सुने बनि बौरे रसाल बिराजत आली । मो मन के अनुरागन को बन बागन कैसी बसंत मैं लाली ॥

टीका । इस कवित्त वचनविग्धा नायिका है । पर्यायोक्ति वा गूढ़ोक्ति अलंकार है ।

समस्या—हल्यो जात मदन मतङ्ग मानसर मैं ।

घनाक्षरी ।

प्रेम परिपूरी परी पगन सुआँदू महा रुकत न नेक तऊ तेरे मग भर मैं । झूमत झुकत चाल आवत चलो है इतै तोरत द्रुमन घनस्याम अङ्ग पर मैं ॥ करि अनुराग रङ्ग बाल तैं बिलोकै अब कहत न मोसों बनै हाल येहि थर मैं । गल्यो जात ज्ञान गुन अंकुश न मानै अरी हल्यो जात मदन मतङ्ग मानसर मैं ॥ ८५ ॥

टीका । इस कवित्त में मानिनी नायिका है सखी की उक्ति है । नायिका प्रति शिक्षा है । या उपालंभ है । और काम का औ मतंग का रूपक है । नायिका को मान रूपी सर तामें नायक का काम मातंग रूपी हिला जाता है । अर्थात मान छड़ाये देत है । सखी कहती है कौ तेरा काम मातंग रूपी है । सो देखु तेरे मान रूपी सर तालाव में हिला जाता है । अतएव मान तेरो नहीं रहैगो । भय दरसाय मि

लाया चाहती है। छल सों कार्य साधती है। तातें पर्यायोक्ति भी है। औ समाभेद रूपक है। लक्षन "पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात। मिस करि कारज साधिये जोहै चितै सोहात ॥ है रूपक द्वै भांति को मिलि तद्रूप अभेद। न्यून अधिक सम दुहुन के तीनि तीनि ये भेद ॥

पुनर्यथा।

छल्यौ जात छल सों छपाये कुच कुम्भन को दल्यो जात द्रुमन लताली अङ्ग भर मैं। पल्यो जात परम प्रबीन प्रन तेरो इतै जल्यो जात सौति सनमान गण्ड थर मैं ॥ मल्यौ जात सुमन सरोज ओजवारो स्याम झल्यौ जात बारि बर नैन बारि तर मैं। चल्यौ जात हूलत महाउत सुअंकुश त्यों हल्यौ जात मदन मतङ्ग मानसर मैं ॥ ८६ ॥

टीका। इस कवित्त में भी येही नायिका अलंकार है। यातें फेरि नहीं लिख्यो।

पुनर्यथा।

आदर सों ससुरारि मै स्याम सुचन्दमुखी सन प्रीति बढ़ाई। चाहत हैं चलिबे को जबै सुघरी सुनि सोचत लोग लोगाई ॥ प्यारी सुजानि महा छबिखानि सों मागत हैं सुबिदा उर लाई। नैनन सों सरिता उमहै मिलि दोउन की बहि जात बिदाई ॥ ८७ ॥

टीका । इस कबित्त में नायिका प्रौढ़ा प्रबस्यतप्रेयसी है। कबि की उक्ति है । वा सखी को, व्याघात अलंकार है। लच्छन। व्याघात जु कछु और ते कीजे कारज और। बहुरि बिरोधी ते जबै काज ल्याइये ठौर ॥ और चपलातिसयोक्ति भी है। लच्छन। चपलात्युक्ति जु हेतु कै होत नामही काजु । कंकन ही में मुद्रिका पीय गमन सुनि आजु ॥

पुनर्यथा ।

जाकी मुख मंजुता मयङ्क सकलङ्क कियो नैन अरबिन्दन दियो है बास पानी को। भृकुटी अनङ्ग चाप नासिका सुबोल सुक कोकिल लजाय बन जाय कहै बानी को ॥ जोति जोतिवंतन को जग प्रगटायो महा मोहनी सुदासी सुर सुन्दरी कहानी को। बानी के न नैन हैं न नैनन के बानी कहो कैसे कै बखानी रूप राधा महरानी को ॥

टीका । इस कबित्त में रूप मात्र को बर्नन है । सो नायिका मात्र जानौ । और उक्ति सखी की होय तौ उपालंभ है। औ नायिका दूसरी की उक्ति होय तौ या कबि की उक्ति से । तौ पञ्चम प्रतीप औ संभावना अलंकार है । लच्छन। व्यर्थ होय उपमान जब बर्ननीय लखि सार। दृग आगे कछु मृग न ये पञ्च प्रतीप प्रकार ॥ संभावना लच्छन । जो यों हो तो यों कहत संभावना बिचार । बक्ता होतो शेश जो तो गुन लहतो पार ॥

पुनर्यथा ।

सुखमा महानी जग जाहिर बखानी बेद गुन गन गानी सो न जानी मति मानी को । उमा रमा रानी जेहि अति हित जानी सची से-

वत सहानी सदाँ स्याम सुखदानी को ॥ उपमा जो आनी तिहुँ लोक में न जानी लखे बानी सकुचानी मन मुदित महानी को । बानी के न नैन हैं न नैनन के बानी कहौ कैसे कै बखानी रूप राधा महारानी को ॥ ८९ ॥

टीका । इस कबित्त में पूर्वोक्त सब बात है ।

पुनर्यथा ।

वै उनके गुन सों अनुरागत वै उनको मन मोल लयो री । वै उनके अँगराग सजैं तन वै उनकी छबि मैं छकि गो री ॥ स्याम सुराधिका की सुखमा उपमा कहिवे की नहीं मति थोरी । मो मन मन्दिर मैं थिर ह्वै चिरजीवैं सदैव मनोहर जोरी ॥ ९० ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है अन्योन्यालंकार है लचण । अन्योन्यालंकार सों अन्य उन्य उपकार । और रूपक भी है, लचण । है रूपक द्वै भांति को ।

पुनर्यथा सवैया ।

काम करोरिन की सुखमा उपमा लखि स्याम की है मति भोरी । त्यौं रति की सत कोटि छटा वृषभानसुता छबि की सम थोरी । मोहन राधिका की समता कहिये केहि आनन कान सु-

नोरी। मो मनमन्दिर में थिर ह्वै चिरजीवै स-
दैव मनोहर जोरी ॥ ९१ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है यद्दा सखी की उक्ति है या दास को; पञ्चम प्रतीपालंकार है। लक्षण। तथा होय उपमान जब बर्णनीय लखि सार। इग आगे कछु मृग न ये पंच प्रतीप प्रकार ॥ है रूपक है भांति को० ॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधिपति रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरबक्ससिंह बहादुर जू देव को आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अखनीनगर निवासी महेश्वरसुधाकरग्रन्थविरचिते वर्नंनो नाम नवमस्तरङ्गः ॥ ९ ॥

इति शृङ्गाररस। अथ हास्यरस लक्षन दोहा।

सुरस हाँस्य रस श्वेत कहि बायु देवता मानि।
थाई हाँस कुरूप कछु कूद बिभाव सुजानि ॥१॥
उत्तम मध्यम अधम सो त्रिबिधि अहै अनुभाव।
खुसी चपलता अपर है संचारी तहँ भाव ॥२॥
भेद द्विबिधि कबिबर कहत है स्वनिष्ठ परनिष्ठ।
सुस्मित अरु उपहँसित पुनि ऊँचे स्वरन बरिष्ठ ॥

तस्योदाहरण घनाक्षरी।

फागुन मैं कोऊ गोप मद मै सुछाको महा स्वाँग बनि आयो मुख कारिख लगाय कै। पोल ढोल सिर पै अजूबा स्याम सोहै बेष लीन्हे कर मूसल कपाल छबि छाय कै ॥ कूदत समाज

मध्य जीरन बसन अङ्ग बोलै रङ्ग सङ्ग मन मोद सरसाय कै। नृत्य करि गावत चलावत सुनैन सैन हेरि हँसैं गोपी गोप ही मै सुख पाय कै ॥४॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है यद्दा सखी की उक्ति है सखी प्रति और पर्याय अलङ्कार है और विदूषक सखा है। पर्य्याय ल० है परजाय अनेक कों क्रम सों आश्रय एक। फिर क्रम तें जब एक वह आश्रय धरै अनेक ॥ इत्यादि ॥ ४ ॥

पुनर्यथा।

बूढ़ो बैल वाहन बिभूषन बिभूति ब्याल उर मै कपाल माल नैन ज्वाल जरतो। भाँग औ धतूरा कालकूट संखिया को खात देखि कै दिगम्बर न दम्भर ठहरतो ॥ भूत औ पिशाच संग रहत मसानवास ऐसो सुनि कौन जौन त्रास मे न परतो। सुनिये पुरारि हाँसि गिरिजाकुमारि कहै हम जो न बरतीं तुम्हैं और तौ न बरतो ॥ ५ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है और पारवती जी की उक्ति है महादेव प्रति, और विषम अलङ्कार है और व्याज निंदा स्तुति अलङ्कार है और रसवत भी है। लक्षण। विषम अलङ्कृत तीन विधि अनमिलते को संग। कारण को रँग और कछु कारज औरै रंग ॥ ५ ॥

पुनः यथोत्तर।

लाले नैन श्रोणित से मद मै सु माते महा

रूप बिकराल देखि धीर कौन धरतो । सिंह की सवारी करबाल मुण्डमाल कर खप्पर त्रि-शूल चक्र चक्रित ह्वै डरतो ॥ रंग रंग जोगिनी उमङ्ग सङ्ग बैन सुनि ब्याह को उछाह भूलि मन मे न करतो । हँसिकै पुरारि कहैं गिरिजा-कुमारि सुनौ हम जो न बरते तुम्है और तौ न बरतो ॥ ६ ॥

टीक । इस कबित्त में भी वही सब बात है कबि की उक्ति महादेव जी का उतर है पारबती प्रति । ब्याज निंदास्तुति अलङ्कार है बिषमालङ्कार भी है । लक्षण । ब्याजस्तुति निंदा बिषे जहां बड़ाई होहि । स्वर्ग चढ़ाये पतित लै गंग कहा कहुँ तोहि ॥ ६ ॥

अथ करुणारस लक्षन दोहा ।

निधन सुजन प्रिय को जहाँ आलम्बन सोइ गाव।
उद्दीपन दाहादि है रोदनादि अनुभाव ॥ ७ ॥
निरवेदादिक हैं तहाँ संचारी जिय जान ।
भाखत हैं कबिजन सकल जे बर बुद्धिनिधान॥८॥
बरन कपोत सुचित्र है बरुन देव सिरताज ।
थाई जाको शोक है सो करुणारस साज ॥९॥

तस्य उदाहरण सवैया ।

धुनि माथ सुहाँथन मींजि कहैं अभिमन्यु गयो सुरलोक सही । अँसुवान की धार बही सरिता सरिता मिलि सोक समुद्र रही ॥ लहरैं

कहरें पुर सोर मनो मन धीरज संग समीर लही। सुनि पारथ को बिललाप महा करुना करके करुना उमही ॥ १० ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है और संजय को वाक्य है धृतराष्ट्र प्रति और अत्युक्ति अलङ्कार है और चौथा उल्लास भी है और रूपक भी है एकावली भी है यातें संसृष्टि है। लक्षण। एक दोय बय मिलत जह जामै जो परधान ॥ १० ॥

अन्यच।

शुभ काम कियो चहै जो कछु तौ मन माहिं मनोरथ पीवन है। घर बाहर देस नरेशहु के ढिग आदर होत नशीब न है ॥ जिनके सिर पै कमला-कर है सोइ स्याम महाबल धीवन है। तप तीरथ संजमहूँ न सधै धनहीन वृथा जग जीवन है ॥ ११ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है, निदर्शना अलंकार है, तृतीय भेद अप्रस्तुत प्रशंसा भी है, सामान्या है, निबन्धना है। याते संसृष्टि है जो नायका की उक्ति है तो गनिका नायिका है ॥ संसृष्टि ल० पूर्वोक्त हो ॥ नि०॥ कहिए त्रिबिधि निदर्शना वाक्य अर्थ सम दोय। एक किए पुनि और गुन और वस्तु में होय ॥ अप्रस्तुत ल० ॥ अलंकार है भांति को अप्रस्तुत प्रसंस। इक बर्नन प्रस्तुत फुरै दूजे प्रस्तुत अंस ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी।

कीन्ह्यौ कैकई न जैसी अै कई न जात कछू लै कई अजस पतिहूँ सों हाथ धोती हैं। मान्यौ

न मनाये राम बन को सिधाये सङ्ग अनुज सुजान जानकी जू चलि होती हैं ॥ पथ में बिलोकि जड़ चेतन अचेत होत लता मुरझानी नहीं मानो दुख गोती हैं । कहै कवि स्याम सियाराम के वियोग पाय हैं न ओस मोती ए बनाशपती रोती हैं ॥ १२ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है वा सखी सखी प्रति है वा मार्गवधून की उक्ति है निन्दा है और उत्प्रेक्षालंकार है शुद्धापन्हुति भी है उत्प्रेक्षा संभावना 'वस्तु हेत फल लेखि" इत्यादि ॥ १२ ॥

अथ रौद्र रस लक्षन दोहा ।

क्रोध महा थाई जहाँ आलम्बन अरि मानि ।
उद्दीपन अरि घेरिबो सोई रौद्र रस जानि ॥१३॥
कुटिल भौंह आनन अरुन अधरादिक अनुभाव ।
दर्प सुचंचलता अपर कहि संचारी भाव ॥१४॥
लाल बरन अरु देव शिव सुरस रौद्र रस तौन ।
उदाहरन कछु कहत हौं सुकबिन को मत जौन ॥

तस्य उदाहरन घनाक्षरी ।

चण्डमुण्ड मारयौ रक्तबीज को सँहारयौ धूम्रलोचन को जारयौ शुंभ दुष्ट उर-घालिका । सिंह पै सवार लै हथ्यार करबाल शूल तोमर मुसल पास पट्टिस करालिका ॥ परिघ प्रचण्ड

रुण्ड मुण्ड उर माल लसै अष्टभुजा धारे सदाँ स्याम पै कृपालिका । जोगिनी जमाति साथ सत्रुन को घालिबे को जन प्रतिपालिबे को तैहीं अंब कालिका ॥ १६ ॥

टी॰ । इस क॰ में कवि की उक्ति है वा किसी शाक्त की है काली प्रति और पर्यायालंकार है दूसरा उदात्त भी है । ल॰ । सो उदात संपति चरित श्लाघ्य और को अंग । इत्यादि ॥ १६ ॥

पुनर्यथा ।

पांडव की सैन बायु बान सों उड़ावों मन मोद सरसावों कल कौतुक लखावों मैँ । पीठि ना दिखावों पैर पीछे न हटावों जस जग मै बढ़ावों नाम भीष्म तौ कहावों मैं ॥ पारथ को आजु रन भूमि न सुतावों छत्रीधर्म तौ नसावों कपिध्वज न ढहावों मैँ । बिक्रम दिखावों कर्म सारथी छुटावों चक्र स्याम ना गहावों गङ्गासूनु ना कहाँवों मैं ॥ १७ ॥

टीका । इस कबित्त में कवि की उक्ति है और भीषम पितामह की प्रतिज्ञा है दुर्योधन प्रति भाव सबलतालंकार है छेकानुप्रास है । ल॰ आवृति बरन अनेक की दुइ दुइ जब होय । है छेकानुप्रास सो समता बिनहू सोय ॥ १७ ॥

अथ बीररस लक्षण दोहा ।

थाई है उत्साह जेहि अहै बीर रस सोय ।
युद्ध बीर इक भेद है दया बीर बिधि दोय ॥१८॥

धर्म बी रतीजो कहत दान बीर बिधि चारि ।
युद्ध बीर आलंबनहुँ शत्रु जोर निरधारि ॥१९॥
सैन सोर उद्दीपनहुँ अँग उमग दृग लाल ।
सो अनुभाव बखानिए निरखि ग्रन्थ रस माल ॥
दर्प असूया उग्रता संचारी शुभ जानि ।
देव सक्र रस बीर के कुन्दन बरन बखानि ॥२१॥

अथ युद्धबीर को उदाहरन घनाक्षरी ।

पाऊँ जोर जाय जोर जाय खाय आवों फल सुभट अपार स्याम नेक नाहिं हारैंगे । वाटिका उजारि डारैं डारैँ सिन्धु माहिं डारैँ अक्ष को सहाँरैँ सैन बेसुमार मारैँगे ॥ लङ्क हलकंप कै सशङ्क कै दशानन को अवनि अकंप अतिकाय काय फारैँगे । नाक दम रहै तौलौं नाक दम रहै जौँलौं नाकदम रहै तौलौँ ना कदम टारैँगे ॥२२॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है और हनूमान जी को वाक्य है सीताजी प्रति और यमकालंकार है छेकानुप्रास है ॥ लक्षण पूर्वोक्त है ॥ २२ ॥

अपरंच परमत युद्ध वीर ।

लक्षन सुजानकी सुजानकी जतन कीन्ह्यो जानकी के जान की सुदीन्ह्यो धीरताई है । लङ्कपति प्रान की परम दुख दान की सुदानव म-

हान की न राख्यौ कीरताई है ॥ स्याम मन-मान की श्रीराम गुन गान को सुन्यौ न कान आन की सु ऐसी सिरताई है । महाबीरताई महाबीरन सों पाई वह महाबीरताई कहाँ महा बीर ताई है ॥ २३ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है या कोई दास की है श्रीहनुमानजी प्रति और जमकालंकार है छेकानुप्रास है । लक्षण पूर्वोक्त ही है ॥ २३ ॥

पुनः युद्ध बीर सवैया ।

आये सबै कपि सागर के तट ठीक न होत मतो कछु सोऊ । त्यौं सुनि कै यमवन्त के बैन सुचैन लह्यौ फरके भुज दोऊ ॥ दै कर ताल चल्यौ नभ ह्वै दिगपाल के आसन डोलि परोऊ । स्याम सुवेद कहै जग में हनुमान सों और बली नहिं कोऊ ॥ २४ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति यद्वा कोई दास की है अन्य प्रति । और अत्युक्ति अलङ्कार है, लक्षन । अलङ्कार अत्युक्ति यह बरनन अतिसै रूप । जाँचक तेरे द्वार ते भये कल्पतरु भूप ॥ २४ ॥

पुनः हर्ष युद्ध कांचां सवैया ।

हौं हनुमान महामतिमान जु आनि सजीवनि प्रान बचायो । राम सुप्रेम पगे कहि यों तब स्याम सुखेन सुबैन सुनायो ॥ आनद-अंबुधि सों बर

बारि सुबारिज नैनन सों बरसायो । बैठत हीं लखि कै लखनै उठि कै हँसि कै निज अङ्क लगायो ॥ २५ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है या रामचन्द्र जी को वाक्य है, हनुमान जी प्रति, और प्रहर्षन अलङ्कार है और रूपक भी है सम लच्छन । तोनि प्रहर्षन जतन बिन बांछित फल जो होय । बांछित फल ते अधिक फल श्रम बिन लहिये सोय ॥ २५ ॥

अपरंच घनाच्छरी ।

माथ नाय राम को सुहाथ धनु बान धरि साथ अङ्गदादि महाबीर बलवारे हैं । स्याम रन रङ्ग मैं उमङ्ग जङ्ग जैतिवारे देखि घननाद बीर बैन ललकारे हैं ॥ लक्षन है मेरो नाम अक्षन निहारे नेक रक्षन करैया कौन हे रे तन धारे हैं । सैन-जुत शङ्कर सहाय जो करैंगे आय तऊ तेरे प्रान यमराज के दुवारे हैं ॥ २६ ॥

टीका । इस कबित्त में कवि की उक्ति है । और लच्छमन जी को वाक्य है मेघनाद प्रति, प्रतिज्ञा है, औरसंबन्धातिसयोक्ति अलङ्कार है ।लच्छन । अतिसयोक्ति दूजी वहै जोग अजोग बखान । तो कर आगे कल्पतरु क्यों पावै सनमान ॥ २६ ॥

अथ दयावीर वर्नन दोहा ।

दीनन को दुख भाखिवो दयाबीर सुबिभाव ।
हरिवो दुख बदि बचन मृदु आदि कहँ अनुभाव ॥

हैं संचारी भाव तहँ सुधृति चपलता और।
सुकबि ताहि को कहत हैं दया बीर करि गौर॥

तस्य उदाहरन सवैया।

हे प्रियबन्धु सुलक्षनलाल मिले तुम मोहिं सुधीरज आयो। स्याम सबै दुख छूटे महा मम जीवन जीवन आस जनायो॥ बानर ऋक्ष सुचैन लह्यौ पुनि पारस रङ्क परो जनु पायो। प्रेमपगे प्रभु पङ्कजलोचन राम सु यों कहि अङ्क लगायो॥ २९॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है और श्री रामचन्द्र जू को वाक्य है लच्मन प्रति जमकालङ्कार लुप्ता और प्रेमा भी है, लच्छन। निपट कपट मिटि जाय जहँ उपजै पूरन छेम। वो सब दास बखानहीं ताको पूरन प्रेम॥ जमका पूर्वोक्त ही है॥ २९॥

पुनः दोहा।

द्रुपदसुता की टेर सुनि बिनहिं बेर जदुराय।
पाय पियादेहिँ दौरि करि लीन्ह्यौ बसन बचाय॥

अथ दान बीर लच्छन दोहा।

जैबो तीरथ जाँचकन दीबो दान बिचार।
ए बिभाव बरनत सुकबि दान बीर करि प्यार॥
सु धन तुच्छ करि मानिबो सो कहिये अनुभाव।
हरख आदि ब्रीड़ा कह्यौ संचारी करि चाव॥

तस्योदाहरनम् घनाक्षरी ।

आप तौ दिगम्बर न एको अङ्ग अम्बर पै दीनन को देत है पटम्बर सुरेश के । बिरच्यौ बिरंचि जिन्है रङ्क अङ्क डारि तिन्है टारि कै निसङ्क सम कीन्ह्यौ है धनेश के ॥ पूजे बर्ग बेल स्याम कनक तनक ताहि चाहि अपबर्ग फल देत है हमेश के । हेत जन जानी देत मागे मनमानी मौज सानी है न देव दानी दूसरो महेश के ॥ ३३ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है वा किसो शैव को वाक्य है अन्य पै विशेषोक्ति अलङ्कार है कविप्रिया मतं साधन है व्याज निन्दास्तुति है पञ्च पप्रतीप भी है असङ्गति है याते संसृष्टि है लच्छन । पूर्वोक्त है ॥ ३३ ॥

पुनर्यथा ।

महाराज-राज श्री महेश्वरबकससिंह जाँचे बिन धनद समान धन भरि देत । दीनन को देखि कै दया को सरसाय सिन्धु प्रेम की लहरि मे महान दुःख हरि देत ॥ दानी नहीं ऐसो कहूँ दूसरो दूनी में स्याम कलपलता को जो पताको दूरि धरि देत । सत करै बुद्धि औ सहस्र मन जाको करै लाख करै जीभ तौ करोरि कर करि देत ॥ ३४ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है राजा की प्रसंसा है, अत्युक्ति अलङ्कार है, लच्छन । पूर्वोक्त ही है ॥ ३४ ॥ पुनः । अलङ्कार अत्युक्ति से बरनन अतिसै रूप । जांचक मेरे द्वार ते भये कल्पतरु भूप ॥

पुनर्यथा ।

बिरचि बिरंचिजन जाँचक लिलार लिपि होय ए दरिद्री सो असत्य नहिं कीन्ह्यौ है। दान सनमान कै कुबेर औ सुमेर सम स्याम सुख-सम्पति सजाय मुख चीन्ह्यौ है ॥ कलपलता को जनु अलपपताको करि सुजस पताको ताको आप कर लीन्ह्यौ है । चक्कवै मही पै श्री महेश्वरबक्श जू ने दारिदै को दारिद सुवाको करि दीन्ह्यौ है ॥ ३५ ॥

अथ धर्मबीर लच्छन दोहा ।

कबि कोबिद बरनत सदाँ धर्मबीर सुबिभाव ।
सुनिबो सबिधि पुरान पुनि श्रुति अरु स्मृति परचाव ॥
बचन कर्म तन वेद बिद इत्यादिक अनुभाव ।
संचारी तहँ जानिये सुधृति आदि सुगनाव ॥ ३७ ॥

तस्यो दाहरणम् घनाचरी ।

सबिधि पुरान सुनि बिबिधि बिधान दान दीन्हे जो बखान स्याम वेद सुखकन्द भो । बित्त बनितानि तन तुच्छ मनमानि कर कीरति दुचन्द निसि चन्द मतिमन्द भो ॥ कर सम-

तान कर कलपलता न नित परम सुजान हित गो द्विज पसन्द भो । सत्य शील भारी फल सुकृति सुधारी धरा धर्म धुरधारी श्री महेश्वर-सुचन्द भो ॥ ३८ ॥

टीका । इस कवित्त में कबि की उक्ति है, राजा हरिचन्द्र को जस वर्नन है और इस में भी वही अत्युक्ति अलङ्कार है अत्युक्ति लच्छन । पूर्वोक्त है ॥ ३६ ॥

अथ बिभत्स रस लच्छन दोहा ।

है बिभत्स जाको अहै थाई भाव गलानि ।
अरु बिभाव मज्जा छतज गन्धि पीव में दानि ॥
सो अनुभाव रोमांच तन कम्प नासिका मूदि ।
संचारी मुरछादि कहि मोह असूया सूदि ॥
महा काल है देवता नील बरन सोइ जानि ।
रस बिभत्स ताको कहत उदाहरन सुख मानि ॥

तस्य उदाहरन सवैया ।

दाम छदाम लौं धाम रहै नहिं नाम कुनाम रहै तेहिं सङ्गा । धावैं चहूँ दिसि देसन मैं कहुँ पावै न आदर अङ्गन अङ्गा ॥ दीन अधीन मलीन रहैं निसि बासर होय मनोरथ भङ्गा । जे किये स्याम सों बैर बिचार तिन्है करतार करौ भिखमङ्गा ॥ ४२ ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है, करतार ब्रह्मा जी सो और व्याज निन्दा है अलङ्कार लच्छन । व्याजनिन्दा निन्दा बिषे औरी निन्दा होय ॥

सोरठा ।

समर मध्य जगदम्ब, असुर अनेक सँहार किय ।
छतज पियत न बिलम्ब, खाहिं गीध पल प्रेत सब ॥

पुनर्यथा घनाच्छरी ।

मारे इन्द्रजीतै बीर बाँकुरे लषनलाल लोहू की नदी सी लेत लहरैं सुजङ्ग मैं । झुण्ड झुण्ड जोगिनी सुजोगिनी न जाती पेखि नाचती पिशाँची धुनि माँची रन रङ्ग मैं ॥ धारैं उर मालैं आँचि अन्तरी सुरारिन की भूत प्रेत पीवैं मेद श्रोणित सुसङ्ग मैं । मेलैं मुख आमिष लै झेलैं खेल खेलैं घने बोलैं बैन चैन भरे मैन अंग अङ्ग मैं ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति या कोई बानर या दास की है, अन्य प्रति औ जमकालङ्कार औ छेकानुप्रास है, लच्छन । पूर्वोक्त है ।

अथ भयानक रस लच्छन दोहा ।

भाव सुथाई भय जहाँ सुरस भयानक आय ।
ये बिभाव जिय जानिये जेहिं लखि भय सरसाय ॥
बेपथु बिबरण आदि दै तहँ अनुभाव सुजानि ।
देव काल कैला बरन रस सु भयानक मानि ॥

अथ भयानक रस ख्योदाहरण घनाक्षरी ।

छाई जग बिदित बड़ाई वेद गाई स्याम सोई सुनि पाई तुव शरण सिधाई है । बिपति महाई अति प्रबल जनाई नहीं हटति हटाई कियो कोटिन उपाई है ॥ लखि बिकलाई बेगि कीजिये सहाई अब जन सुखदाई जिमि लच्छन जिआई है । महा बीरताई तवै बीरन सों पाई वह महाबीरताई कहाँ महावीर ताई है ॥४७॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है यद्वा कोई दास की महाबीर प्रति और जमकालङ्कार छेकानुप्रास है । लच्छन । पूर्वोक्त है ।

अपरञ्च ।

प्रबल परे हैं सब सत्रु ये महान मैया मेरी बिनती को सुनि लीजिये कृपालिका । धारि कै त्रिशूल हूलि दीजिये हिये के बीच श्रोणित सो कीच मारि कीजै चक्र चालिका ॥ जैसे रक्तबीज औ निशुंभ चण्ड मुण्ड हूँ को झुण्ड झुण्ड योगिनी सुकीन्ह्यो प्रान घालिका । तैसे धारि चोप चित आँनन्द समेत नित बैरीवृन्द बेगि ही बिदारो अम्ब कालिका ॥ ४८ ॥

टीका । इस कबित्त में कवि को उक्ति है यद्वा कोई जन की है जौन सत्रुन से पीड़ित श्री भगवतीप्रार्थना है और प्रथम भेद तुल्यजोगितालङ्कार है, देवी सों प्रार्थना है । तुल्यजोगिता तीनि विधि लच्छन कहत सुजान । होय अवर्न्य के वर्न्य को एकै धर्म प्रमान ॥ ४८ ॥

भयरस अंगी दास अंग घनाक्षरी।

पावैं नहीं रोजी रहैं रोगी दुखभोगी सदाँ सम्पतिबियोगी सोच पावैं बिकरालिका। देश देश घूमैं धनहीन तन छीन दीन बसनबिहीन नारि अन्न बिन बालिका॥ रोवैं गाँव गैल मैं कुनाव के कुपूत धूत कायर कुरूप महा सूदन मैं आलिका। धारैं पाप पुंज को बिसारैं धर्म कर्म इमि बैरी वृन्द वेगि ही बिदारौ अम्ब कालिका॥ ४९॥

टीका। इस कबित्त में कवि की उक्ति है वा कोई दास की है काली जी सों; जमकालङ्कार छेकानुप्रास है। जमक शब्द को फिरि श्रवन अर्थ जुदो सो जानि॥ ४९॥

पुनर्यथा।

लीन्हो है सुधाय धाय बल अजमाय निज एकहू उपाय आय चित्त मै अरै नहीं। देश देश जाय चह्यो सुख सरसाय माय आप के सिवाय दुख दूसरो हरै नहीं॥ मोद सरसाय लघु लोगन रिझाय स्याम अति सकुचाय काज कैसहूँ सरै नहीं। अम्ब अब रावरी कृपा की कोर हेरे बिन हिम्मति हमारी नेक धीरज धरै नहीं॥५०॥

टीका। इस कबित्त में कबि को उक्ति है देवो जी सो वा कोई दास की है और संभावनालङ्कार है। लच्छन। जो यों होतो तो कहत संभावना बिचार। बक्ता होतो शेस सों तो गुन लहतो पार॥ ५०॥

अथ शुद्ध भयानक रस को घनाक्षरी ।

कालिका कराल रूप कोपि कै कृपान धारि सिंह पै सवार दानवान पै सिधाई है । कलित कपाल माल नैन मदमाते लाल रसना निकासे बेष बिकन महाई है ॥ भृकुटी कुटिल कर तोमर त्रिशूल चक्र दुष्टदलदलन सुचोप सरसाई है । भभरि भगाने अङ्ग अङ्ग थहराने कहैं भय सों बिलोकि हाय मीचु सम आई ॥ ५१ ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है कोई सत्रु या कोइ दैत्य राक्षस भय संयुक्त कहै है उपमालङ्कार है । लक्षन । पूर्वोक्त है ॥ ५१ ॥

अथ अद्भुत रस बर्ननम् दोहा ।

थाई अचरज जासु को अद्भुत रस है सोय।
अरु बिभाव लखिबो चरित असंभवित जो होय॥
कंप बचन चलि बोलिबो रोम हर्ष अनुभाव ।
शंक वितर्क सुमोह जहँ संचारी सु गनाव॥५३॥
चतुरानन जेहि देवता पीत बरन शुभ जानि ।
ताहि कहत अद्भुत सुरस जे प्रबीन गुनरवानि॥

तस्योदाहरन घनाक्षरी ।

कालीदह माहिं कान्ह कूदि कै पताल जाय काली नाग सोवत ते औंचक जगायो है। कोपि कै कियो है विष झार फूतकार महा नेसुक न हार्‌यो स्याम मन मुसकायो है ॥ नाथि ताहि

शिर पै सवार व्है अवार बिन कमल लदाय आय दरस दिषायो है। वृज के सुबासी चित्त चक्रित बिलोकि भये नंद यसुदा के मन मोद सरसायो है ॥ ५५ ॥

टीका। इस कबित्त में कबि की उक्ति है यहा कोई गोपी गोप की उक्ति है। बिचित्र हेतु अलङ्कार है लच्छन। इच्छा फल बिपरीत को कीजै जतन बिचित्र। नवत उच्चता लहन को जि हैं पुरुष पवित्र ॥ ५५॥

पुनर्यथा सवैया।

राजै जटान मैं गंग तरंग त्यौं चंद छटान भली छबि छाजै। छाजै सु मुंडन की उर माल त्यौँ भूत पिशाचन को गन साजै ॥ साजै बिभूति बिभूखन व्याल कृपाल व्है साधत स्याम के काजै। काजै रह्यौ न कछू यम को जहां कासी विश्वेश्वरनाथ बिराजै ॥ ५६ ॥

टीका। इस कबित्त में कबि की उक्ति है वा शैवभक्त की उक्ति है या कोई गोपी गोप को है. सिंहावलोकन कबित्त है। एकावली अलङ्कार है, लच्छन। ग्रहित मुक्त पद रीति जहँ एकावलि तहँ मानु। दृग श्रुति पर श्रुति बाहु पर बाहु जंघ पर जानु ॥ ५६ ॥

पुनर्यथा।

सोहैं दिगम्बर अंबर चारु बघम्बर त्यौं अहि पुंजनि घेरो। शैलसुता अरधंग बिभूति त्रिशूल हरै भव शूल करेरो ॥ चाखत भँग धतूरहु को यह भाषत स्याम दया जुत हेरो। क्या नर बापुरो कोई रिसाय सदैव शिवा शिव रक्षक मेरो ।५७।

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है शिव जी को बर्नन है। विशेषालङ्कार है लच्छन । पूर्वोक्त ही है ॥ ५७ ॥

पुनः घनाक्षरी ।

चारु मणिमंदिर में झालरैं सुमोतिन की तास बादले के परे पावड़े अमोल बर । चंद सों चदोवा तनो गिरदे गुलाबन के पांखुरी सुमल्लि-का बिछाई है प्रमोद कर ॥ द्वार पै दरस हेत स्याम देव राखें आस भारती सुआरती उता-रती उजास पर। राजै परजंक पर आदि जोति रानी तहाँ रहति निहारि जोरि कमला कमल कर ॥ ५८ ॥

टीका । इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है या कोई शाक्त की भगवती का रूप ऐश्वर्य बर्नन है, उदात्त अलङ्कार है लच्छन । उपलच्छन है सोधिये अधिकारी सो उदात ॥ ५८ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

आदि न मध्य न अन्त अनन्त हो सन्तत स्याम सुन्यो श्रुति गावै । अम्बुज आनन आनन है सु गजानन अम्ब अहो जग ध्यावै ॥ शैलसुता सुखदानि सुजान की जान की जान की बात ज-नावै । भूप अनूपम मोहिं दियो बर देव दया करि जो मन भावै ॥ ५९ ॥

टीका । इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है दास की प्रार्थना है वाचक धर्म लुप्ता है ॥ ५९ ॥

पुनर्यथा सवैया।

घननाद महा घननाद कियो सर बृन्दन को बरसाय मुदै। अहिपास मे बाँधि सबै दल को रन मोहित लक्ष्मन राम खुदै॥ मन मोदमई इमि बैन कही इनही मोहिं आप दै कीन जुदै। जब रामहिं सोकतई चितई चकई तब चाहति चन्द उदै॥ ६० ॥

टीका। इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है समस्या है और जम कालङ्कार है, प्रथम प्रहर्षन भी है लच्छन पूर्वोक्त हो है॥ ६० ॥

पुनर्यथा।

जब चाहति केलिकला नवला जब के किन की धुनि व्याल मुदै। जब कोकिल स्याम सचान चहैं अरु कामकलान को क्लीव खुदै॥ रवि को कुमुदी जब पेखि खिलै तिमि मालती सों अलि जाय जुदै। जब कौल बियोगिन को हितई चकई तब चाहति चन्द उदै॥ ६१ ॥

टीका। इस कबित्त में भी कबि को उक्ति है समस्या को प्रतिउत्तर है, और मिथ्याध्यवसित अलङ्कार है, लच्छन। मिथ्याध्यवसित कहत हैं अलङ्कार एहि रीति। कर में पारद जो रहै करै नवोढ़ा प्रीति॥

अथ शान्तरस लच्छन दोहा।

थाई है निरबेद जेहिं सुरस सान्त सोइ होय।
सुगुरु सुजन सँग तप बिपिनि सम बिभाव है सोय॥

रोम हर्ष आदिक जहाँ सुकबि कहत अनुभाव।
सुमति खुसी धृति आदि है शुचि संचारी भाव ॥
ब्रह्म देवता शुक्ल रँग बरनत सुजन समाज ।
उदाहरन सुनि जासु को उर उपजै सुखसाज ॥

अथ शान्तरसस्योदाहरणम् यथा सिंहावलोकन कबित्त ।

ध्यावत है धनवन्तन कों भगवंत के नेक नहीं गुन गावत । गावत गीत सँगीत सबै पर ब्रह्म की भावना सो नहिं भावत ॥ भावत है परपञ्च बिषै मृगनैनी बिलोकि महा सुख पावत । पावत है न अराम रे स्याम सदैव शिवाशिव क्यों नहीं ध्यावत ॥ ६५ ॥

टीका । इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है सिंहावलोकन कबित्त है, एकावली अलंकार है लच्छन । ग्रहित मुक्त पद रीति जहँ एकावलि तब मान । दृग स्रुति पर स्रुति बह्रा पर बाहु जंघ लौं जान ॥ ६५ ॥

पुनर्यथा ।

बनितानि सुता सुत के रँग में रँगि कै मन मोद भरेई रहैं । रसरीति न छोरि सकैं कबहूं अनुमान गुमान करेई रहैं ॥ उपचार अपार बिषै के सिखै निसि बासर स्याम खरेई रहैं । छन ध्यान करैं न शिवा शिव को बहु धंध के फंद परेई रहैं ॥ ६६ ॥

टीका। इस कबित्त में भी कवि की उक्ति है शिक्षा है अन्योक्ति अलङ्कार है ॥ ६६ ॥

पुनर्यथा।

द्वारिकै जान कह्यौ ढिग स्याम के है मन मेरो न मो मन माया। चंचलता तजिये चित की अरु आतुर व्है रचिये न उपाया ॥ भामिनि मानिये सीख सही करि जो श्रुति आदि पुरान मैं गाया। आपुहि पांय परैंगी परापति व्हैहै जबै रघुनाथ की छाया ॥ ६७ ॥

टीका इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है सुदामा जी को बाक्य अपनी स्त्री प्रति बर्नन है लोकोक्ति अलङ्कार है लच्छन। लोकोकति कछु बचन सो लीजे लोक पवाद। नैन मूदि षटमास लौ सहिहौं बिरह बिषाद ॥ ६७ ॥

पुनर्यथा।

जानि महान महेश्वर स्याम दियो नर को तन सो न बिचारी। भूलि गये इत आय बिशै बस है मद जोबन को भ्रम भारी ॥ कौन जबाब करौगे उहाँ जग में परिपङ्कज प्रेम बिसारी। पाय प्रमोद रह्यौ मन मैं सब पेषि लई करतूति तिहारी ॥ ६८ ॥

टीका। पूर्वोक्त है अन्योक्ति अलङ्कार है, शांतरस है ॥

पुनर्यथा।

मानसरोवर मे रमि कै चुनि कै मुकतान कहूँ तुलि जाइ है। रूप अनूपम पाय महा यह चाल

चले अनते ढुलि जाइ है ॥ यौं मद मोह महा नद मैं परि पैरत पाँव अरे डुलि जाइ है । आय बने तुम डोलत हौ बक हंसन मै कलई खुलि जाइ है ॥ ६९ ॥

टीका ! इस कवित में शांतरस है अन्योक्ति अलङ्कार है ॥ ६८ ॥

पुनर्यथा ।

स्याम सुजान को पंथ लखै ममता मद के बस में कस आया । मोह के पास बध्यौ मन बावरे लोभ लगो बन कोसन धाया ॥ है मृग तृष्णा सबै कलि की कल होन न देत कहूं छल माया । आपु हीं पाय परैगी परापति ह्वैहै जबै रघुनाथ की छाया ॥ ७० ॥

टीका । इस कवित्त में अलङ्कार पूर्वोक्त है ॥ ७० ॥

पुनर्यथा सिंहावलोकन सवैया ।

गाइबो गीत सँगीतन को सुरतालन लै कर बीन बजाइबो । जाइबो जोग यथारथ मै परमारथ के पथ मै मन लाइबो ॥ लाइबो इंद्रिन को बस मै तप कै तन कंचन ताप तपाइबो । पाइबो यार अपार महा जग सार है रामहि को गुन गाइबो ॥ ७१ ॥

टीका । इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है सिच्या है सिंहावलोकन कवित्त है और एकावली अलङ्कार है लच्चन । गहित मुक्त पद रीति जहँ एकावलि तब मानु। दृगस्रुति परस्रुति बाहु पर बाहु जंघ लौ जान ॥ ७१ ॥

अथ हास्यरस बर्नन तस्योदहरणम् घनाक्षरी।

सीस पै किरीट सो मुनीस मन मोहै महा स्वच्छ रजनीश कोटि शोभा भई मन्द की। कुण्डल कपोल गोल लोल जुग मीन मनो भृकुटी कमान नैन बान मैन सन्द की॥ अङ्ग अङ्ग भूषन बिभूषित रतनवारे पीतपट धारे घन दामिनी सुछन्द की। स्याम सुखमा की मति कौन कबिता की कहै चारु उपमा की लखे झाँकी रामचन्द की॥ ७२॥

टीका। इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है रामचन्द्र की झाँकी का बर्नन है सङ्कर अलङ्कार है सम लुप्ता रूपक संसृष्टि लक्षन पूर्वोक्त है॥ ७२॥

पुनर्यथा सवैया।

गनिका अरु गीध गयन्दहु की गति को गुनि कै अनुरागत हौं। द्विज स्याम कहै कुबरी उबरी सेवरी को सुने सुख पावत हौं॥ पुनि गोकुल गोप सुगोपसुता मुनि गौतमनारि सु जागत हौं। इमि बाँकेबिहारी तिहारी कृपा नित मोपै रहै बर मागत हौं॥ ७३॥

टीका। इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है परमेश्वर की प्रशंसा है तुल्ययोगिता अलंकार है। ल० पूर्वोक्त है॥ ७३॥

पुनः दोहा ।

जे पापी पातक किये निसुदिन परम महान ।
तिनहिं पार भवसिन्धु ते कीन्हो कृपानिधान ॥

पुनः सवैया ।

आमिष-भोगी अजामिल व्याध बिराध कबन्धहुँ लौं लटि जैहै । दूषन मे खरदूषन से त्रिशिरा की शरा न जरा हटि जैहै ॥ स्याम पुरातन पापी महा तुम पातकी पावन सो पटि जैहै । मेरे उधारिबेही मे कृपाल कहा प्रभु की प्रभुता घटि जैहै ॥ ७५ ॥

टीका । इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है व्याज स्तुति अलंकार है ल० पूर्वोक्त है ॥ ७५ ॥

पुनः दोहा ।

जो न स्याम सुनि पावतो अधमउधारन नाम ।
तौ न भूलि परतो कहूँ पाप पन्थ मे राम ॥७६॥

टीका । इस दोहा में कवि की उक्ति है संभावना अलंकार है ॥७६॥

दीन जानि कीजै दया दीनदयाल खरारि ।
पानि जोरि बिनती करै स्याम राम उर धारि॥

टीका । इस दोहा में कवि की उक्ति है, काव्यलिंग अलंकार है ॥७७॥
काव्य लिंग जो युक्ति सो अर्थ समर्थन होय । तोको मैं जीत्यो मदन मो हिय में शिव सोय ॥

पुनर्यथा सवैया ।

बाटिका जाय उजारि दियो निरसंक ह्वै लंक

दह्यौ श्रम थोरे। रावन औ महिरावन से बर बीर जिते तिनके मद तोरे ॥ श्रीरघुनाथ के पास सदा पदपंकज सेवत साथ निहोरे। सो हनुमान बली सों बिनै यह सुन्दरस्याम करै कर जोरे ॥ ७८ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है ग्रन्थकर्ता की बिनै है कि कोई दास की है, उदात्त अलंकार है। ल० पूर्वोक्त है॥ ७८ ॥

पुनः दोहा।

बज्र-अङ्ग पिङ्गल-नयन कनकबरन रणधीर।
स्यामसहायक अतुलबल महाबीर बरबीर ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी।

मरजी तिहारी पाय जन्म जग लीन्ह्यौं आय मन बच काय कहौं नेसुक सुनीजिये। रावरो सुजश अब गावत हमेश रहौं पावत प्रमोद सो कृपाल बर दीजिये ॥ दीनहितकारी भारी बिरद तिहारी सदा स्याम सुखकारी बैन मानि उर लीजिये। अरजी यही है नेक हर जी हमारी सुनौ नर जी बनाय नाथ करजी न कीजिये॥८०॥

टीका। इस कवित्त में ग्रन्थकर्ता कवि की उक्ति है प्रार्थना है या कोई दास को विनै है शिवप्रति: और छेकानुप्रास अलंकार है ॥८०॥

पुनर्यथा घनाक्षरी।

दानी और दूसरो दुनी मैं सुन्यौं स्याम नहीं

दीन के दयाल शंभु साँची कै पतीजिये । जाके सुख सम्पति बिरांचि बिरच्यौ न रंच ऐसे रंक कोटि कियो धनद सुनीजिये ॥ अब कलिकाल हाल हेरि हिय हारचौ कहा करिकै कृपा की कोर येतो जसु लीजिये । गरजी गरीबन की गौर कर अर्जी सुनि नरजी बनाय नाथ करजी न कीजिये ॥ ८१ ॥

टीका । इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है औ दास की शंभुजी सों प्रार्थना है इसमें भी छेकानुप्रास अलंकार है पूर्वोक्त है ॥ ८१ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

जो मधुकैटभ को बधि कै माहिषासुर सैन समेत सँहारयौ । आयो बली पुनि लोचन धूम्र कियो सो हुँकार मे भूति पहारयौ ॥ स्याम सुरेस औ देवन की बिनती सुनि शुम्भ निशुम्भ बिदारयौ । श्रीजगदम्ब बिलम्ब कहा भई मेरिही बेर न बेगि उबारयौ ॥ ८२ ॥

टीका । इस कवित्त में कबि की उक्ति है यहा दास की प्रार्थना है श्री भगवती जी सों; तुल्यजोगिता अलंकार है ल० पूर्वोक्त है ॥८२॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

इन्द्र आदि देव सब गावत हमेश रहैं पावत न भेद वेद आदि मै बखानी है। जाकी महिमा

है महा जानी नहीं जाति कछू थाकी सहसानन की बुद्धि सकुचानी है ॥ शुम्भ औ निशुम्भ रक्तबीज के अजीज और तिन्हें मीजि मीजि अति ही मै हुलसानी है। लोक लोकपाली जेहि धारे मुण्डमाली सोई स्याम कामपाली महा-काली महारानी है ॥ ८३ ॥

टीका। इस कवित्त में भी कवि की उक्ति है या दास की प्रार्थना है और परिकर अलंकार है ल०। सो परिकर आसे लिय जहां विशेष न होय। ससिबदनी यह नायिका होय हरति है जोय ॥ ८३ ॥

पुनर्यथा।

असि चक्र धारो चाप परिघ सुधारो दुख दुसह विदारो शंख शूल मुण्डमालिका। तैसई भुशुण्डी गदा नैन हैं विशाल तीनि अङ्ग सब साजि मधुकैटभ की घालिका॥ विष्णु औ वि-रञ्चि देव पायो है अनन्त सुख नीलमणि छबि मुख पद दिगपालिका। स्याम-काम कीजै लोक लोक जस लीजै सब सत्रुन को बेगि दण्ड दीजै अम्ब कालिका ॥ ८४ ॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है वा कोई दास की है श्री भगवती प्रति; छेकानुप्रास अलंकार है॥ ४॥

पुनर्यथा।

लोचन बिसाल लाल श्रोणित समान लसैं

गदा पद्म परशु सुधारि कै कृपालिका । दण्ड औ कुलिश चाप शक्ति कुण्डिका है चारु चर्म औ जलज त्यौं त्रिशूल पाश मालिका ॥ घण्टा सुरा भाजन सुदर्शन कृपाणहूँ लै साज नये साजि खल सैरिभ की घालिका। कमल की पालिका पै कर ज्यौं प्रबालिका सौं शत्रुन को दण्ड बेगि दीजै अम्ब कालिका ॥ ८५ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है ध्यान है देवी जी का, और उपमा अलंकार है । जेहि बिधि सब समता मिलै उपमा सोई जानि ॥ इत्यादि ।

पुनर्यथा ।

ब्रह्मा मुण्ड शम्भु अस्थि रसना बिराजै बिष्णु तामबूल ऐसे रक्त अधर बिशालिका । स्यामघन अङ्ग छबि बैठी प्रेत आसन पै कर मै त्रिशूल चक्र पद्मपाश जालिका ॥ अंकुश कुलिश असि मूशल बिराजै शंख अहि जुग धारे लाल अम्बर सुचालिका। दास सुख कीजै मेटि लीजै या बिपत्ति सब शत्रुन को दण्ड बेगि दीजै अम्ब कालिका ॥ ८६ ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति है बिराटरूप देवी जी की ध्यान है या कोई दास को, और इसमें भी उपमा अलंकार है, लक्षन पूर्वोक्त ही है ॥ ८६ ॥

पुनर्यथा।

करत महान उतपात निशिबासर हैं जैसे मधुकैटभ नै कीनो है कुचालिका। विष्णु देव स्याम सदा तेरेही भरोसे रहैं कीजिये सहाय आय दीनन की पालिका॥ धारि कै त्रिशूल चक्र दुष्टन के वक्र तोरि फोरि फोरि खोपरीन खाय लै करालिका। चण्ड मुण्ड मालिका बिराजै चन्द्र भालिका सो शत्रुन को दण्ड बेगि दीजै अम्ब कालिका॥ ८७॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है या दास की श्रीभगवती से; छेकानुप्रास अलंकार है॥ ८७॥

पुनर्यथा।

करत निकाम काम पावत अराम आम रहत सकाम बाम सङ्ग सुख सानि कै। औगुन अमाप पाप जोरत हमेस बेस नाम को न नेक जाप जानत भवानिकै॥ ऐसो मै अयान स्याम गुन गरबीलो महा मद सों मदीलो अरसीलो अनुमानि कै। करुना कदम्बा जगजन अवलम्बा सदाँ अम्बा मोहिं पालती निकम्बा पूत जानि कै॥

टीका। इस कवित्त में कवि की उक्ति है यद्दा कोई दास की प्रार्थना है देवी जी सों; और छेकानुप्रास अलंकार है लं० पूर्वोक्त है॥८८॥

पुनर्यथा ।

माल छनजोति ते कमाल छटा अङ्गन की सिंह की सवारी भारी रूप की करालिका । खड्ग खेट कन्या सङ्ग धन्या ही महीतल मे धारे चक्र चाप बान गुनगन मालिका ॥ लोचन कमल छबि मोचन हैं दास दुख दीरघ रसीले स्याम सोहित बिसालिका । दुर्ग दैत्य घालिका सुरेस सेस पालिका सो शत्रुन को दण्ड बेगि दीजै अम्ब कालिका ॥ ९० ॥

टीका । इस कवित्त में कवि की उक्ति या कोई दास की है, श्री देवी जी से प्रार्थना करै है, औ लुप्ता अलंकार है ॥ ८९ ॥

पुनर्यथा ।

मज्जन कै सखियान समेत सरोवर पै सुमहा छबि छावै । सारी सजी सिया प्यारी चली गति बाल मराल कहा सरि पावै ॥ गौरि को पूजि सुगौर करी कर जोरि यही बिनती को सुनावै । रूप अनूपम मोहिं दियो बर देव दया करि जो मन भावै ॥ ८९ ॥

टीका । इस कवित्त में सखी की उक्ति है सखी प्रति । श्री सीता जी गौरि पूजने आई वरदान मागती हैं गौरि सों; पञ्चम प्रतीप अलङ्कार है । लच्छन पूर्वोक्त है ॥ ९० ॥

पुनर्यथा ।

दैत्यन के दल को दलि कै कियो देवन के दुख दूरि महा वै । सन्तन को सुख दीन्हो सदाँ अब दीन हौं देखि दया उर आवै ॥ गौरि कहौं कर जोरि निहोरि हे सम्भुप्रिया प्रण पूरो करावै । रूप अनूपम मोहिं दियो बर देव दया करि जो मन भावै ॥ ९१ ॥

टीका । इस कबित्त में श्री सीता जी की स्तुति है पारबती जी सों बरदान मागे है, और परिकरांकुर अलङ्कार है ॥ ९१ ॥

पुनर्यथा ।

श्री जगदम्ब तुहीं अबलम्ब न कीजै बिलम्ब मया सरसावै । कीजिये पूर पिताप्रण को तनको मन को अति आँनद आवै ॥ अन्तर की सब जाननिहारि हौ जाहिर क्यौं करि तोहिं जनावै। रूप अनूपम मोहिं दियो बर देव दया करि जो मन भावै ॥ ९२ ॥

टीका । इस कबित्त में श्री जानकी जी की प्रार्थनास्तुति है पार्बती जी सों परिकरांकुर अलङ्कार है । साभिप्राय विशेष जब परिकरअंकुर नाम । सूधे हू प्रिय के कहे नेक न मानति बाम ॥ ९२ ॥

पुनर्यथा ।

तैहीं स्वधा अरु स्वाहा तुहीं सुन्यौ तैहीं त्रिदेवन को सुख छावै । तैहीं करै जग को लय

पालन स्याम तुहीं जग को उपजावै ॥ तैंहीं अचेतन है जड़ को पुनि तैंहीं सुजोगिन जोग जगावै । रूप अनूपम मोहि दियौ बर देव दया करि जो मन भावै ॥ ९३ ॥

टीका । इस कवित्त में भी श्री जानकी जी की स्तुति विनय प्रार्थना है, और श्लेष अलङ्कार है, लच्छन । सो श्लेष जो एक को बहु समुझै बहु रीति । अरथिन सुरतरु तिय मदन अरि को काल प्रतीत ॥ बिशेष अलङ्कार भी है ॥ ९३ ॥

पुनर्यथा घनाक्षरी ।

कोऊ करि हेत द्वैज चन्द को बसन देत कोऊ रमानाथ हित बृन्दा दल माल को । कोऊ बिश्वनाथ माथ नाय बिल्वपत्र देत कोऊ कहै बानी बिधि बानी सों दयाल को ॥ कोऊ सुर इन्द्र आदि बन्दत सकल सुर कोऊ ह्वै अनन्द लह्यौ फन्द जगजाल को । राधिका-रवन सुख सागर जवन स्याम ध्यावत तवन करुनाकर कृपाल को ॥ ९४ ॥

टीका । इस कवित्त में कबि की उक्ति है या किसी दास की अनन्य भक्ति है, दृढ़ता करि कहै है, इष्ट देव सों और परसंख्या सम अलङ्कार है, परसंख्या इक थल बरजि दूजे थल ठहराय । नेह हानि हिय में नहो भई दीप में लाय ॥ ९४ ॥

पुनर्यथा ।

आये घने भूमि भूप सोहत अनूप रूप बाजी

गज स्यन्दन सवारी सजी सान की। मही महल पै सुमंच छत छज्जन पै मेच कुरसीन पै बिराजत प्रमान की॥ पैदल अनेक नर नगर डगर माहिं स्याम छबि देखत सुनैन तैं न आन की। देव गुन-गान की सुमन बरखान की सुशोभा को बखानै राम भरत मिलान की॥

टीका। इस कबित्त में भी कबि की उक्ति है श्री रामचन्द्र जी जब लङ्का से आये हैं तब श्री भरथ जी को मिलाप बर्नन है, और छेकानुप्रास अलङ्कार है, लच्छन पूर्वोक्त है॥ ९५।

पुनर्यथा।

जानि जगपावन को आवन परम रम्य औध यौं सोहावनि सनेह दरसान की। तोरन पताका मंजु मनि मैं सुभग चौक स्याम जू बजार त्यौं अपार गुन गान की॥ बसन बिभूषन बिभूषित सुनारी नर निरखैं अँटारी चढ़े चारुता बिमान की। नेम के निधान की सुप्रेम सरसान की कही न जाय शोभा राम भरत मिलान की॥९६॥

टीका। इस कबित्त में सब पूर्वोक्त है॥ ९६॥

अथ वात्सल्य रस घनाक्षरी।

कसक न कीन्हौ कंस कैद मैं करायो बेगि बेरी लै भरायो नेक मान्यौ न सगैया को। बसुदेव देवकी को देखि दुख दीनबन्धु मन में

बिचारयौ स्याम देवन सहैया को । भाद्र कृष्ण आठै बुध रोहिनी नछत्र चारु प्रगट्यौ सरूप धराधर्म के धरैया को । जग को रचैया भयो ब्रज को बसैया बजी आँनद-बधैया जब जन्म भो कन्हैया को ॥ ९७ ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है या दास की । श्री कृष्ण जन्मोत्सव बर्नन है, प्रहर्षन अलङ्कार है, लच्छन । पूर्वोक्त है ॥ ९७ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

पार न पावत जाको पुरान परे सब सों बचौ बेद सलोने । शेश सुरेश महेश गनेश गनै गुन के गन जाहिर होने ॥ शंभु स्वयम्भु सराहत स्याम भयो नर भूप सो नन्द के भोने । पूरन ब्रह्म अनन्त अनूप सो ह्वै शिशु सोहत सूप के कोने ॥ ९८ ॥

टीका । इस कबित्त में कबि की उक्ति है यद्दा कोई स्त्री की उक्ति है वा कोई ब्रह्मउपासक की है, परमेश्वर को अवतार लेन मानषो की अहचर्य और प्रहर्षन अलङ्कार है, और अधिक अलङ्कार भी है, पूर्वोक्त है॥

पुनर्यथा सवैया ।

ध्यान धरैं जप जोग करैं मुनि प्रेम सों जानत है जगपालक । शेश गणेश सुरेश महेश हमेश रहैं जिनके सब तालक ॥ स्याम सो देवन को दुख देखि सुभूप भये श्रुति आयसु चा-

लक । मोद किये जननी मुख चूमति गोद लि
यह सुन्दर बालक ॥ ९९ ॥

टीका । इस कवित्त में वही कवि की उक्ति है परमेश्वर को मानुषा-
वतार लेन बर्नन है, छेकानुप्रास अलङ्कार है, लच्छन पूर्वोक्त ही है ॥ ९९ ॥

पुनर्यथा ।

पङ्कज से पग नूपुर चारु लसैं कटि भूखन दूखन घालक । नाभि गँभीर भली त्रिबली उर केहरि कंध सुबाहु बिसालक ॥ स्याम सुआनन की छबि आनन हैं दतिया दुति दामिनि झालक । नैन सुमन्द किये मृग कंज सु गोद लिये यह सुन्दर बालक ॥ १०० ॥

टीका । इस कबित्त में भी कवि की उक्ति है परमेश्वर को मानुषी अवतार लेन बर्नन श्री राम को या श्री कृष्ण को श्री प्रतीप और उपमालङ्कार है ॥ १०० ॥

पुनर्यथा ।

परम सुजान नृप कीन्ह्यौ सनमान मान धरम प्रमान श्रुति सम्मत सुधाम को । भूषन बसन बर बाजि गजराज साजि सम्पति सरस महि सदन अराम को ॥ सुजस पताको जग जाको फहरात मंजु ताको कै प्रकास देस देस मैं मुदाम को । महाराज राज श्री महेश्वरबकससिंह अतिसै प्रसन्न ह्वै दियो है द्विज स्याम को ॥

पुनर्यथा ।

सुजस सुचन्द जग चन्द सों दुचन्द चारु
पा समेति सुख सम्पति सने रहौ । हिम्मति
दारता हमेस बेस ही मे बसै बसुधाधिराजन
पै सासन भने रहौ ॥ स्याम कबि कोबिद को
करन समान दान देत सनमान ज्ञान गौरव गने
रहौ । श्रीयुत महेश्वरबकस महाराज राज तखत-
नसीन परमानँद बने रहौ ॥ १०२ ॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रमुकुटमणि रामपुराधिपति रैकवारकुलकमलदिवाकर श्रीगुमानसिंहात्मज श्रीमहेश्वरबक्ससिंह बहादुर जू देव को आज्ञानुसार श्री पण्डित स्यामसुन्दर अखनोनगर निवासी महेश्वरसुधाकरग्रन्थविरचिते नवरस बर्ननो नाम दसमस्तरङ्गः ॥

दोहा ।

सुरस लसत द्वैसै अधिक दोहा कबित ललाम ।
रच्यौ महा सुखधाम यह श्री कबि सुन्दर स्याम ॥
ग्रन्थ महेश्वरसुधाकर सुरस भरो अभिराम ।
पाठ अर्थ सब सोधि कै लिख्यौ सु बेनी राम ॥
बन्हि बाण निधि चन्द त्यौं है सम्बत सुखधाम ।
भाद्र असित गुरु पञ्चमी भो समाप्त जुग जाम ॥
बन्दीजन कुल कमल रबि बसत सरेनी ग्राम ।
मिश्र स्यामसुन्दर रचित लिख्यौ सो बेनीराम ॥

इति ।